

योगी गुरु जी के प्रश्नोत्तर — भाग 24

सत्संग से 200 प्रश्नोत्तर

आध्यात्मिक प्रत्यक्ष ज्ञान मार्ग

adhyatmikpratyakshgyan.com

प्रश्न: गुरु जी, किताबों और अनुभव से मैंने यह समझा कि जो वह सर्वशक्तिमान सत्ता है वही मैं हूँ — मैं उसका अंश नहीं, खुद ही वह हूँ; उसके टुकड़े नहीं हो सकते। क्या यह सही है? (P24-0001)

अगर वो मैं हूँ और मैं वो हूँ, तो मुझे यह क्यों कहना पड़ रहा है कि वही मैं हूँ? अगर वही मैं हूँ तब तो बात ही खत्म हो गई, तब तो यह भी बोलने की जरूरत नहीं। और अगर आपके अलावा कुछ है ही नहीं, तो ज्ञान किसको देना? सब में अगर मैं हूँ तो मुझे ज्ञान हो गया मतलब सबको हो गया, फिर ज्ञान किसे देना — वह तो मौन हो जाएगा। और अगर मैं किसी और को कुछ समझा रहा हूँ और कोई कामना लेकर घूम रहा हूँ, तो इसका मतलब यह सिर्फ एक भ्रम है, किताबी ज्ञान है कि मैं वही हूँ, वो मैं हूँ। यह जाल है — जैसे मकड़ी दूसरों को फंसाने के लिए जाल बनाती है और आखिर में उसी में फंस के खत्म हो जाती है, तो यह शब्दों का जाल है, इस जाल में मत फंसो।

प्रश्न: गुरु जी, इस शब्दों के जाल से आदमी निकलेगा कैसे? और क्या किसी को समझाना भी कामना है? (P24-0002)

जैसे बनाए हो, जाल को काट दो। काटते-काटते आखिर में कुछ नहीं बचेगा। जहां पहुंचे हो वहां नहीं पहुंचे — वह आपकी बुद्धि का स्तर पहुंचा होगा; जहां भी कामनाओं से पहुंचे हो, उस जाल को काटना है। किसी को ज्ञान देना भी कामना है। प्रयास करना कि इसे समझना ही है — वह कामना है। अगर आप व्यक्तिगत किसी को समझा रहे हो तो वह कामना हो सकती है; सार्वजनिक समझा रहे हो तो कामना नहीं। लेकिन जैसा आपने बताया कि मैं वही हूँ और सब में मैं हूँ, तब तो किसी से कुछ बोलने की, किसी को समझाने की जरूरत ही नहीं, क्योंकि सब में मैं हूँ तो समझाऊं किसको? तो जो स्थिति बनाई है उससे निकलना है — आपकी स्थिति का निर्णय आप ही को करना है।

प्रश्न: गुरु जी, जब सब में मैं ही हूँ, तो हो सकता है वह खुद का खुद ही सुन रहा हो, खुद ही सुना रहा हो? (P24-0003)

जरूरत क्या है? जरूरत क्यों पड़ रही है? जरूरत के पीछे कामना है। हम एक-दूसरे से तभी बात करते हैं जब कुछ चाहिए; बिना मतलब के कोई नहीं बोलेगा। बात करने के लिए कोई अलग चाहिए, विपरीत कोई होगा तभी बात होगी; सब एक जैसे हैं तो कौन सुनने वाला रहेगा, कौन सुनाने वाला। अपने आप में जैसे ही आप हो जाओगे, आपके प्रश्न खत्म हो जाएंगे, उत्तर हो जाएंगे — बाहरी रास्ता, यह गांव आगे कहां पड़ेगा, वह पूछ सकते हो, लेकिन आंतरिक यात्रा का किसी से पूछ ही नहीं पाओगे, क्योंकि उसका पता चल ही गया। तो जांचो अपने आप को कि मेरी स्थिति क्या है — किसी की स्थिति का निर्णय कोई और नहीं कर सकता।

प्रश्न: गुरु जी, बोलने वाला तो वह एक ही है, वह शरीर के माध्यम से बोल रहा है — फिर द्वंद कहां है? (P24-0004)

शरीर में हूँ नहीं, मन में हूँ नहीं, तो बोल किससे रहा है? बोलने के लिए दो चाहिए ना, अकेले कैसे बोलेगा आदमी — बहुत गहराई से समझो। अगर एक ही है तो फिर किसको समझाना; समझाने के लिए दो चाहिए, एक समझाने वाला एक समझाने वाला। अर्जुन को समझाया गया, विराट रूप दिखाया गया, लेकिन देखने के बाद भी जब अभिमन्यु मारे गए तो अर्जुन बोले कि मैं होता तो मेरा पुत्र मारा नहीं जाता — मतलब ज्ञान होने के बाद भी पुत्र मोह में अपने को अलग समझे, पुत्र को अलग समझे। इतना आसान नहीं है इससे निकलना। इसीलिए अपनी किताबों को पढ़ के अपनी स्थिति मत मान लो — जिन्होंने बोला कि एक ही है, उन्होंने पहुंच के बोला, और तुम यहीं से, द्वैत में होके कह रहे हो कि एक ही है।

प्रश्न: लेकिन महाराज जी, जिन्होंने वह बात कही, वे भी तो बोले थे, तभी तो सारा लिखा गया — फिर वे किसके लिए बोले? (P24-0005)

यही तो बात है भाई — उस स्थिति में जाने के बाद बोलना नहीं पड़ता। आदि गुरु शंकराचार्य ने अद्वैत का प्रचार किया, ठीक है, लेकिन किया तो द्वैत में — दूसरा था तभी तो लोगों को समझाने निकले। जब अभेद था तो किसी को समझाना क्यों; किसी को समझा रहे हो तो फिर द्वैत है। मैं तो कह रहा हूँ — एक से अनेक है, अनंत है, अनंत आत्माएं हैं, और इच्छा-अपेक्षा में वे जीवात्माएं हो गईं। हमें बस इच्छा-अपेक्षा से मुक्त कराना है और अपने घर चले जाना है।

प्रश्न: गुरु जी, तो आपके कहने का मतलब है कि एक सत्ता है और उसके सब अंश हो गए? (P24-0006)

अंश नहीं — अंश अलग हो जाता है। यह अलग नहीं है, उससे है। जैसे लाइट से प्रकाश है, उजाला है — क्या यह उजाला लाइट से अलग है? इसमें बल्ब नहीं है, लेकिन उजाला उसी से है। वैसे ही उससे सब है, उससे अनंत आत्माएं हैं। वे टुकड़े नहीं हैं — टुकड़े हम मान बैठे हैं, हम अलग-अलग मान गए इसलिए तो भटक रहे हैं; और सबका कर्मों का काउंट अलग है, कर्म के हिसाब से सब भोग रहे हैं।

प्रश्न: गुरु जी, जब सब एक ही है, जैसे बल्ब की रोशनी सब जगह एक जैसी है, तो सब अलग-अलग कर्म क्यों भोग रहे हैं? (P24-0007)

एक ही मां के अनेक बच्चे होते हैं, सबको एक ही मां-बाप ने शिक्षा दी, पर उनमें कोई बहुत फालतू निकल जाता है, कोई बहुत सज्जन निकल जाता है — क्यों? आपने तो एक ही तरीके से सबको पाला होगा, तो एक जैसे क्यों नहीं हुए? वो कर्मों का हिसाब-किताब है। पाला तो एक ही जैसा, लेकिन उठना-बैठना-बोलना-चलना सबका अलग है।

प्रश्न: गुरु जी, फिर कर्म लागू किसके हुए — उस आत्मा के? (P24-0008)

जो मेन चीज आत्मा है, उसके थोड़ी लागू होते हैं कर्म; आत्मा पर असर नहीं पड़ता, वह भुगतने थोड़ी आती है। भोग आप यहीं पे रहे हो — इच्छा-अपेक्षा में। मेरा में दुख है, नहीं तो दुख-सुख नहीं है। आपने मेरा मान लिया, तो आत्मा जीवात्मा हो गई, जैसे पानी बर्फ हो गया — जब भी टूटेगा, जब भी कुछ होगा, तो बर्फ को होगा, पानी को कुछ भी नहीं होगा। कोई भी वस्तु लो, जब तक वह आपकी है तभी तक दुख है; जैसे उसे बेच दो, न दुख है न सुख। मेरा का भाव जहां-जहां है वहां सुख-दुख है, और मेरा का निर्माण आपके द्वारा हुआ है। इसलिए धीरे-धीरे मेरा के भाव से अपने आप को छुड़ाओ; बस मान मत लो कि एक ही है, तब कुछ कर नहीं पाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, जो अज्ञानता में है, वही तो फिर ब्रह्म हो जाता है ना? (P24-0009)

वह ब्रह्म समान हो जाता है, ब्रह्म नहीं होता। नर्मदा बह रही है, गंगा बह रही है, उसमें गटर का पानी मिला, तो देव भी उसकी वंदना करने लगते हैं — लेकिन वह अब गटर नहीं रहा, गटर मिट गया, नर्मदा में, गंगा में हो गया। हमें उसके पास जाना है, इसीलिए तो कह रहा हूं कि अपने घर का पता लगाओ — कहां से आए हो, कहां जाना है — और यह आप ही के अंदर है।

प्रश्न: गुरु जी, रामकृष्ण परमहंस उपलब्धि के बाद भी माता की पूजा करते थे — अद्वैत में जाने के बाद वे द्वैत में कैसे आए, जब एक ही है तो किसकी पूजा?

(P24-0010)

वही तो समझना है। आप लोग अद्वैत का मतलब बस एक ही समझते हो कि एक के अलावा कुछ नहीं है। जब कुछ होता ही नहीं तो इतना भटकाव, इतनी पीड़ा, इतनी परेशानियां क्यों होतीं, क्यों प्रयास करते कि अपने आप को निर्विकार करो? और सब में वही होता तो सबको बैठे-बैठे मुक्त करा देता, जाकर समझाता क्यों। अद्वैत में अगर कोई पहुंच गया, ब्रह्म समान हो गया, और घर-घर जाकर प्रयास कर रहा है कि लोग निर्विकार हों — तो इस इच्छा में कामना नहीं है, जगत कल्याण है; लेकिन इच्छा तो है कि यह भी मुक्ति की तरफ, मोक्ष की तरफ बढ़ जाए, तो अपने से अलग समझ रहा है। वह ब्रह्म हो जाता तो एक ही जगह से सबको मुक्त करा देता; गांव-गांव मेहनत कर रहा है, समझा रहा है — इसलिए वह ब्रह्म नहीं, ब्रह्म के समान हुआ है। अद्वैत का मतलब यह न समझो कि एक ही है — अनंत आत्माएं हैं, और उसके बाद अनंत जीवात्माएं; इसे समझने का प्रयास करिए।

प्रश्न: गुरु जी, दुर्योधन है तो उसी का हिस्सा — फिर वह अलग किस वजह से हुआ?

(P24-0011)

कृष्ण भगवान को क्या जरूरत थी दुर्योधन के पास जा-जाकर बार-बार समझाना कि मत युद्ध करो, अगर एक ही था? दुर्योधन अलग था तभी समझा रहे थे। है उसी का, लेकिन अलग अपने कर्मों से हुआ — बुराइयां धारण कीं। जैसे पानी ने किसी को शुद्ध किया, कहीं कचड़े में मिला, कहीं कचड़ा धोया, तब जाकर वह गटर हो गया; फिर नर्मदा से मिला तो नर्मदा में हो गया। फिर मिटेगा तो गटर ही मिटेगा, क्योंकि गटर बना है — बड़ी चीज के अंदर छोटी चीज समा जाती है।

प्रश्न: गुरु जी, जो गटर नर्मदा में मिल गया, वह फिर क्या कहेगा — कि मैं नर्मदा हो गया? (P24-0012)

वह यह नहीं कह सकता कि मैं नर्मदा हो गया; उनकी वजह से तो वह पवित्र हुआ — बस यही कहेगा कि मैं भी पवित्र हो गया। और मिलने के बाद वह बोलेगा भी नहीं, मिट जाएगा, फिर बोलने के लिए कुछ रहेगा ही नहीं। इसीलिए पहुंचो, तब पता चल जाएगा क्या है। हम आधी-अधूरी बात समझ पाते हैं — अध्ययन करते हैं, अनुसरण नहीं कर पाते। एक बालक को शिक्षक अच्छा पढ़ाए और एक बालक गाइड लेकर कमरे में पढ़े, तो समाज में काम वही कर पाएगा जिसने शिक्षक के सानिध्य में सीखा; गाइड वाले के पास उदाहरण खूब होंगे लेकिन काम नहीं कर पाएगा। किताबों में सब लिखा है, बस तरीका नहीं लिखा। जिसने किताब का अध्ययन किया और किसी गुरु के शरण में रहकर अनुसरण नहीं किया, वह अहम भाव धारण करके कि मैं ब्रह्म हूं, बैठ जाता है, और उसकी यात्रा अधूरी रह जाती है।

प्रश्न: गुरु जी, 20 साल किताबें पढ़ते-पढ़ते और भटकते-भटकते मैंने मान लिया कि मैं स्वयं ब्रह्म हूं; पर मन में यही रहता है कि ऐसा क्या रह गया, क्या छूट रहा है कि जो मैं हूं वह नहीं हो पा रहा? (P24-0013)

किताबें पढ़कर बहुत लोग भटक रहे हैं — किसी गुरु के शरण में जाकर अनुसरण करना पड़ेगा। जब उसके साथ जियोगे, जीवंत गुरु होगा, तो आपको जीने का तरीका बताएगा, उस तरीके में समझाएगा जिसमें आप समझ सकते हो — और वह किताबों में नहीं लिखा जाता। किताबों में सीधा लिखा है कि ब्रह्म एक ही है, उसके अलावा कुछ भी नहीं; तो फिर किताबें क्यों, कोई अज्ञानी क्यों, कोई ज्ञानी क्यों, किसी को ऋषि, किसी को महात्मा क्यों बोला जा रहा है? उनके कर्मों के कारण। और कर्म करने के लिए दो चाहिए — यह शरीर और मन उससे अलग हैं; शरीर पंचतत्व से आया, पंचतत्व परमात्मा से — तो दो तो वहीं हो गए।

प्रश्न: गुरु जी, शरीर में मन और आत्मा दोनों रहते हैं — क्या मन और शरीर का नाश हो जाएगा? (P24-0014)

रूप का नाश हो जाएगा, तत्व का नहीं। रूप का नाश बोल सकते हो, क्योंकि रूप को नाश होते हुए आपने देखा है; मन का तो आता-पता ही नहीं — शरीर में बताओ मन कहां है, कब आता है, कब पैदा हो जाता है। मन चाहिए में बड़ा होता है, चाहिए में काम करता है। फिर इसको चाहिए छुड़ाना होता है — धीरे-धीरे जैसे यह बड़ा हुआ है वैसे उसे छोटा करना पड़ता है, वापस छोटा होके फिर शायद यह विलय हो जाता होगा। जो भी हो, बस अपने को साधना है, अपने आप को चाहिए से मुक्त करना है।

प्रश्न: गुरु जी, तो फिर अद्वैत का मतलब अनेक हो गया — द्वैत और अद्वैत का सही अर्थ क्या है? (P24-0015)

द्वैत मतलब अनेक इच्छाएं हैं हमारी, तो द्वैत हो गया; और हम इन इच्छाओं से मुक्त हो गए तो सब एक जैसे हो गए। जैसे आपने दूर से फल की दुकान देखी, पूछा जाए क्या है, तो बोलोगे फल — यह अद्वैत है, क्योंकि आपको चाहिए नहीं। अब फल चाहिए, दुकान पर गए, तो कहोगे यह नहीं, यह छोटा है, यह कच्चा है, यह सड़ा है, अच्छे-अच्छे दे दो — एक के प्रति लगाव हो गया, एक के प्रति द्वेष हो गया, यह द्वैत है। नहीं चाहिए में आ गए तो सब वैसा का वैसा है — वह अवस्था अद्वैत है। जैसे एक स्त्री-पुरुष की शादी हुई तो दोनों के लिए सारे रिश्ते बदल गए — जुड़े एक से, बदल सब गए, और किसी को बताना नहीं पड़ा कि कौन ससुर है, कौन सास; पहले कितना भी प्रयास करते तो नहीं बनता। वैसे ही जब आप अपने आप से मिलोगे, पूरी सृष्टि आपके लिए बदल जाएगी, पूरा दृष्टिकोण बदल जाएगा। अद्वैत का मतलब यह मत समझिए कि बस एक ही है और वही मैं — यह अहंकार बहुत लोग पाल के अपनी यात्रा रोक के बैठ गए।

प्रश्न: गुरु जी, मेरी सोच में तो यह है कि मंदिर जाने वालों को, गुरु-चेला बनाने वालों को ज्ञान नहीं है, तो वे क्या करें? (P24-0016)

आखिर जब सब एक ही है, तो फिर अज्ञानी आपके लिए दूसरा कैसे हो गया? आप तो कह दिए सर्व मैं हूं, सब जगह मैं हूं, दूसरा है ही नहीं — तो मंदिर में जाने वाला आपसे अलग कैसे हो गया? एक ज्ञानी हो गया, एक अज्ञानी हो गया, मंदिर भी अलग हो गया — किताबी ज्ञान आदमी को भटकाता है। बहुत लोग किताबी ज्ञान से अपने आप को ब्रह्म मान के बैठ गए, यात्रा ही रोक दी, और बैठ के बोलते हैं देखो मंदिर जाने वाले क्या कर रहे हैं। अगर सर्वत्र मैं ही हूं तो कुछ बोलने की आवश्यकता ही नहीं, और फिर भी उठ रहा है कि यह गलत है यह सही — वही राग-द्वेष है। इसलिए लोगों ने कहा, जीवंत गुरु की शरण में रहोगे तो वह आपके सारे भ्रम को तोड़ेगा। समझने का प्रयास करो, और समझ के अपने आत्मिक स्तर को उठाओ, अपनी कामनाओं से अपने आप को मुक्त कराओ, इस पर काम करो।

प्रश्न: गुरु जी, अपने शरीर की ऊर्जा कैसे बढ़ाएं? (P24-0017)

शरीर की ऊर्जा बढ़ाना चाहते हो तो समझ के बढ़ाओ, क्योंकि पहलवानी तो करना नहीं है; उतनी ताकत तो है कि अपना काम खुद कर लेते हो। अब देखना यह है कि आखिर हमें ऊर्जा की जरूरत क्यों पड़ रही है? क्या करेंगे ऊर्जा लेकर? क्योंकि कहा जाता है कि स्व में अगर कोई स्थित हो गया तो उसे कोई ऊर्जा की जरूरत नहीं है — आत्मा को कोई ऊर्जा की जरूरत नहीं है। लेकिन इच्छा-अपेक्षा में आपने अपने आप को जीवात्मा बना दिया, इसलिए अब ऊर्जा की जरूरत है। तो ऊर्जा की जरूरत मुझे इसलिए है कि मुझे अपने आप को निकालना है। मैंने अपने आप को बंधन में फंसा लिया है, वहां से निकलने के लिए मुझे ऊर्जा चाहिए — और वो ऊर्जा समझ के रूप में मुझे चाहिए, और वो सत्संग के द्वारा मिलती है। तो जितना ज्यादा से ज्यादा हो सके सत्संग को ग्रहण करो, उसका अनुसरण करो, उसमें जियो; आपको वहां से छुड़ाने के लिए ऊर्जा मिलेगी और आप अपने आप को छुड़ा पाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि आप राजसी, तामसी, सात्विक — तीनों ऊर्जा से मुक्त हो पाएंगे और स्व में स्थिर हो जाएंगे। सत्संग में ईमानदारी, सत्कर्म, योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग — यह अपनाकर जीवन में आगे बढ़ो। एक समय ऐसा आएगा कि आपको ऊर्जा की भी जरूरत नहीं रहेगी। कब? जब अपने आप को छुड़ा लोगे तब।

प्रश्न: गुरु जी, कभी-कभी बड़े अधिकारी दबाव डालते हैं, डराते-धमकाते हैं, पर मैं नहीं झुकता — उनका सामना करने की यह शक्ति कैसे और बढ़े? (P24-0018)

कहीं न कहीं आपने जीवन में वो अपनाया है जो उनके पास नहीं है; कहीं न कहीं वो गलत हैं और आप सही हो, तब वो झुक रहे हैं। अगर दोनों सही होते तो झुकने की बात भी नहीं आती, कोई किसी के सामने नहीं झुकता, सब अपना-अपना काम करते। झुकना तब पड़ता है जब हमने कुछ गड़बड़ी की है, नहीं तो न झुकने की आवश्यकता है, न झुकाने की आवश्यकता है। आप जिसके लिए रखे गए हो वो काम ईमानदारी से कर रहे हो, इसलिए वो दब जाते हैं। और आप ऐसा काम कर रहे हो तो समाज भी आपका साथ दे रहा है — आपकी ईमानदारी के कारण साथ दे रहा है। तो बस वही ईमानदारी तपस्या है। ईमानदारी आग है और सत्कर्म घी का काम करता है — वो आपको और भी प्रज्वलित करता है, और भी आगे बढ़ाता है। तो बस सत्कर्म बढ़ा दो — जरूरतमंद की सेवा, धन से, तन से, ज्ञान से, जिस लायक मैं हूँ उस लायक; वो भी अपनी औकात के हिसाब से। आपकी ताकत बढ़ जाएगी, आपका बल बढ़ जाएगा। जैसे आपने लोगों को दौड़-दौड़ के न्याय दिलाया, तो आपकी ताकत बढ़ गई, क्योंकि वहां सत्कर्म हुआ; और जैसे-जैसे आपने लोगों को न्याय दिलाना चालू किया, वैसे-वैसे लोग आपके साथ हुए — और लोगों का साथ होना मतलब आपका बल बढ़ना।

प्रश्न: गुरु जी, जनता की सेवा के लिए तो मैं आधी रात को भी एक पांव पर खड़ा हूं — सेवा करते हुए किस बात का ध्यान रखूं? (P24-0019)

अधिकार से ज्यादा जब भी काम करोगे फंस जाओगे, ये ध्यान रखना। कभी अधिकार से ज्यादा काम करने का प्रयास मत करना। काम को काम के तरीके से करना — जिस पद पर हो उस पद का काम करना; न तो मिलावट करना, न मिलावट करने देना; सिस्टम का काम करना, उसमें अलग से कुछ मत मिलाना। जितना आपका अधिकार है उतना ही; किसी दूसरे एरिया से छीन के अपने क्षेत्र की सेवा मत करना — ऐसा भी लोग करते हैं। क्या मतलब है ऐसी सेवा का? एक का भोजन छीन के आपने दूसरे को खिलाया, तो एक आदमी तो भूखा रह गया ना; वो तो ज्यादा घुटन में चला गया कि मेरा भोजन छीन लिया गया। अगर दोनों को भोजन कराना था तो आपको अपने भोजन का त्याग कर देना चाहिए था। उस जिले में जा रहा था, आपने अपने जिले में ला दिया — क्यों? वहां भी तो मानव थे, वहां भी तो जरूरत थी। आप अपराधी हो गए, आपने अपनी ताकत का दुरुपयोग किया और कभी न कभी आपको दंड मिलेगा, क्योंकि इतने व्यक्तियों की बहुआ लगी — आपने उनका अधिकार छीन लिया। कॉलेज हो, स्कूल हो, ऐसा कभी मत करना। जिस पद पर आप हो उस पद का काम करना, ज्यादा उड़ना भी मत। अगर लोग कहें कि हमारी ये भी सेवा करो, तो बोलो — हम करने के लिए तैयार हैं, लेकिन हमारी पावर बढ़वाओ, आओ मेरे साथ मिलकर काम करेंगे।

प्रश्न: गुरु जी, क्या आपका कोई पूर्व जन्म का अनुभव है जिससे आप बचपन से ही माया की तरफ नहीं गए और रिश्तों को मतलब का समझते रहे? (P24-0020)

मुझे सबसे बड़ी गलतफहमी दुनिया में यह थी कि मैं कुछ लोगों को शायद सुखी कर पाऊंगा। लेकिन वो सुखी होने से तो दूर, अत्यंत असंतुष्ट हो गए — तूने उस लड़के की नौकरी लगवा दी, मेरी नहीं लगवाई; उस अयोग्य का ये करवा दिया, मेरा नहीं करवाया। तो वो सब अब विभिन्न कारणों से अपने-अपने घरों पर बैठे हुए हैं और मेरी तरफ मुंह करके गालियां देते होंगे। किसी को कभी संतुष्ट नहीं किया जा सकता — आप चाहे मर जाओ उनके लिए, लेकिन आप किसी को संतुष्ट नहीं कर सकते, आप कितने काम कर दोगे। यहां संतुष्ट होने आए हो कि समझने आए हो? आए हो तो समझो, इशारा ही काफी है। संतुष्टि तो तभी होगी जब आत्मा का परमात्मा से मिलन हो, उसके पहले हो ही नहीं सकती।

प्रश्न: गुरु जी, हर उम्र की अपनी सुंदरता होती है, कई बूढ़े लोग भी बहुत सुंदर लगते हैं — असली सुंदरता क्या है? (P24-0021)

मैं तो कह रहा हूँ, आपकी खूबसूरती ईमानदारी है और क्रीम सत्कर्म है — मेकअप सत्कर्म है। बस इसको अपना लो, बाकी छोड़ो, फिर देखो आपकी सुंदरता में चार चांद लग जाएंगे। और बेईमानी में आप अपने आप को खुद कुरूप पाओगे। कुर्सी पे बैठे हो, ब्लैक कॉफी तो आ गई, बढ़िया मेज-कुर्सी, नौकर सब रख लिए, लेकिन आप अशांति से पी रहे हो। हो सकता है नौकर मस्त है, लेकिन तुम अशांत हो। रूप-रंग का गुरुर और पद का गुरुर मत करो, ये जाएगा और बड़े तेजी से जाता है।

प्रश्न: गुरु जी, लोग ईमानदारी का खुलकर साथ क्यों नहीं देते? कोई सही बात पर गवाही देने या दस्तखत करने को तैयार नहीं होता। (P24-0022)

क्योंकि डर है। डर इसलिए है कि आपकी ताकत नहीं है — समझना इस बात को। वो साइन करने के लिए तैयार हैं, लेकिन किसके भरोसे करें, ये तो बताओ; रक्षा कौन करेगा? गवाह की रक्षा कौन करेगा? उनके बीवी है, बच्चे हैं। जब उन्हें पता चलेगा कि आपमें उनकी रक्षा करने की ताकत है, तब वो साइन करेंगे। न्याय तब मिलेगा जब आप — अगर न्याय दिलाने वाले हो तो — ताकतवर बनो; धन से, तन से, ज्ञान से ताकत होनी चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, फिर तो लगता है सच्चाई कभी-कभी मजबूर हो जाती है — जो काम मिलिट्री करती है वह मैं अकेला कैसे कर लूं? (P24-0023)

सच्चाई सिर्फ सच्चाई होती है; सच्चाई न गरीब के साथ होती है, न अमीर के साथ होती है — आपके काम के साथ होती है। अगर काम को हटा दो तो न तुम सच्चे रहे, न बेईमान रहे, न ईमानदार रहे, कुछ नहीं रहे। कौन कह रहा है आप मिलिट्री वाला काम करो? अगर तुमसे नहीं हो रहा है तो वो काम मत करो; कम से कम आप अपने आप को तो बचा लो। मैं आपको बता दूँ कि मैं 2011 से निकला था और मुझे बीस लग गए तब जाके मैं योग्य बना, अब मैं यह काम कर पा रहा हूँ। जब आप कोई काम करना चाहते हो तो धन से, तन से और ज्ञान से जब पूरी तरह मजबूत रहोगे, पूरी तरह स्वयं सक्षम रहोगे, तभी आप काम कर पाओगे। और अगर आप किसी पर निर्भर हो — चाहे धन से, चाहे तन से, चाहे ज्ञान से — और वो ईमानदार नहीं निकला, तो फिर आप लाचार क्या करोगे?

प्रश्न: गुरु जी, अगर ब्रह्मीनाथ वाले वो पहले साधु आपसे कहें कि सब कुछ छोड़कर हमेशा के लिए मेरे पास आ जा, मुझे तेरी बहुत याद आती है — तो आप क्या करोगे? (P24-0024)

नहीं जाऊंगा। मेरा काम मेरे लिए सबसे प्यारा है; इन सबको लेके जाना है। हां, ये कहूंगा कि ठीक है, सबको लेके चलूँ — अकेले तो अब नहीं आऊंगा, क्योंकि अब मैं अकेला नहीं रहा; ये शर्त रखूंगा, तब चलूंगा। अभी परमात्मा भी आ जाए और मैं आपसे बात कर रहा हूँ, तो मैं कहूंगा — रुको, पहले सत्संग खत्म हो जाए, फिर बात करें, या तो वहां बैठो। मैं अपने काम का इतना प्रेमी हूँ, दीवाना हूँ। सबसे पहले मैंने अपने कर्म को रखा — काम पहले, बाकी सब बाद में।

प्रश्न: गुरु जी, आपने ब्रह्मचर्य निभाने का संकल्प किस घटना पर लिया? बताता उचित हो तो बताइए। (P24-0025)

मैं बचपन से ब्रह्मचारी था। ब्रह्मचर्य है ईमानदारी। आप लोग शरीर के ब्रह्मचर्य में पड़ गए हो, ये ब्रह्मचर्य कभी नहीं हो सकता। आपको ब्रह्मचारी होना है तो क्या? ईमानदारी — बस इतनी सी बात है। जितने महापुरुष हुए, उनके बच्चे हुए — राम के भी हुए, कृष्ण के भी हुए; संबंध किया होगा तभी ना। आपको जरूरत है ईमानदारी की; आप ब्रह्मचर्य को कुछ और समझ लिए, यही तो गड़बड़ है। तो भैया, ईमानदारी अपना लो। और मैं आपको बता दूँ, बचपन से लेकर बीस तक मैं ब्रह्मचर्य में रहा; अब मेरा ब्रह्मचर्य भी खत्म हो गया — क्योंकि ईमानदारी भी मुझसे छूट गई, कर्म ही छूट गया। जब तक कर्म है, जब तक आप कर्ता हो, तभी तक बेईमानी या ईमानदारी है। आप कर्ता के भाव से मुक्त हो गए, तो आपके जीवन में न बेईमानी रही न ईमानदारी रही।

प्रश्न: गुरु जी, क्या अपने आप में बैठना ध्यान नहीं है? (P24-0026)

नहीं, अपने आप में बैठना ध्यान नहीं — आत्मिक चिंतन, मैं बोल रहा हूँ; ध्यान की कोई आवश्यकता नहीं। आप लोग पता नहीं ध्यान-ध्यान-ध्यान... अरे, ध्यान से भी मुक्त होना है, क्योंकि जब तक कुछ रहा, आप पूरी तरह नहीं हो पाओगे। ध्यान का नशा हो गया है, ध्यान से भी मुक्ति चाहिए। आप समझो, आपसे ध्यान है, ध्यान से आप नहीं; और आपकी उपलब्धि तभी हो पाएगी जब आप पूरी तरह मुक्त होंगे — ध्यान से भी। क्योंकि आप सोचिए ना कि आप ध्यान कर रहे हो, इसका मतलब कहीं बाहर हो, और जब तक आप बाहर हो, उपलब्धि नहीं हो पाएगी। आप इस पॉइंट को क्यों नहीं पकड़ते हो?

प्रश्न: गुरु जी, ध्यान और आत्म-चिंतन में क्या फर्क है? (P24-0027)

आत्म-चिंतन और ध्यान में ये फर्क है कि जब आप अपने आप में होते हो तो आत्म-चिंतन होने लगता है — मतलब आप जहां-जहां फंसे हो वहां का चिंतन होने लगता है, और वहां ध्यान अपने आप चला जाता है। फिर ध्यान से वहां से अपने आप को निकालना है। एक प्राकृतिक ध्यान घटता है, और एक ध्यान आपको घटाना पड़ता है निकालने के लिए; फिर आपको ये दोनों छूट जाएंगे। एक संकल्प को गिराने के लिए एक संकल्प लेना पड़ेगा। जैसे एक व्यक्ति पैदा हुआ तब नशा नहीं करता था, अब नशा करने लगा; अब उसे छोड़ना है तो ये कहना पड़ेगा कि आज से मैं नशे का त्याग कर रहा हूं — तब वो समाज में कह पाएगा कि हमने छोड़ दिया। और अगर उसने छोड़ने का संकल्प नहीं लिया, तो साल भर बाद भी यही कहेगा कि मैं साल भर से नहीं पीता, लेकिन ये नहीं कह सकता कि मैंने नशा छोड़ दिया। तो एक संकल्प को हटाने के लिए दूसरा संकल्प लेना पड़ता है, ताकि वो संकल्प हट जाए, मिट जाए।

प्रश्न: गुरु जी, कोई कहे कि आप बस मुझे स्नान करा दो तो मुझे ज्ञान हो जाएगा — क्या ऐसे आत्मज्ञान हो सकता है? (P24-0028)

भाई, ऐसा तो होगा नहीं। अगर मैं आपको स्नान करा दूं तो बस यहां एक मानसिकता बन जाएगी — मुझे भी करा दो, मुझे भी करा दो। होगा कुछ नहीं, वही शुरू हो जाएगा। अगर पाइप के पानी से आत्मज्ञान होता... मैं एक कुत्ते के बच्चे को नहला रहा हूं तो मैं आपको भी नहला सकता हूं, लेकिन आत्मज्ञान के लिए नहीं, क्योंकि आत्मज्ञान तो आप ही कर सकते हो। मैं सिर्फ आपको मार्ग दिखा सकता हूं। और मैं आपकी भावनाओं के साथ कभी खिलवाड़ नहीं कर सकता। अगर ऐसा होता तो मैं एक हाथ से पाइप पकड़ के सो जाता — सब नहाओ; रस्सी से नल हाथ में बांध लेते और नल खोल देते, सोते-जागते सबमें हाथ पड़ा रहता। लेकिन ऐसा नहीं है। हम आपको उलझाना नहीं चाहते, मैं आपको सुलझाना चाहता हूं, क्योंकि आप बहुत उलझ गए हो — आशीर्वाद में, शक्तिपात में, दुनियादारी में, मत्था टेकने में, हाथ फेरवाने में। मैं इसमें आपको जरा सा भी नहीं उलझाना चाहता, एक परसेंट भी नहीं। आपका कल्याण इन शब्दों के द्वारा होगा। जब आप इन शब्दों में जिओगे, तब यहां से भी आपको आशीर्वाद मिलेगा। जैसे मान लीजिए किसी ने आपको चेक दिया और आपने अपने अकाउंट में डाला, तो वो फिर एक बार उसी के बैंक में आता है; ज्यादा अमाउंट है तो उस आदमी से कंफर्म किया जाता है। कहने का मतलब — जब आप उस शब्द को यूज़ करोगे तो आपको यहां से भी सहायता मिलेगी। जितने शब्द मैं आपको दे रहा हूं, इन शब्दों को अपनाओ। ये जीवंत शब्द हैं, ये आपको निकाल देंगे।

प्रश्न: गुरु जी, कोई कहे कि पद पर ऐसा ही होता है — दबाव में या अनजाने में निर्दोषों के साथ गलत हो गया — तो क्या उसका फल भी भोगना पड़ेगा?

(P24-0029)

कोई पद दिया जाता है तो आपकी योग्यता को दिया जाता है, आपको नहीं दिया जाता; और उसके काम बताए जाते हैं, और वो काम फिर आपको काम के तरीके से करना है। अगर किसी ने चोरी की, तो आपने किसी निर्दोष को कैसे उठा लिया? आपको डीएसपी पद पे, एसपी पद पे रखा गया तो उसका काम है कि आप एकदम पक्का वही आदमी उठाओ — ऐसा नहीं कि किसी को भी उठा के पीटो, मेहनत नहीं। चलो, मैं आपसे प्रश्न करता हूँ — आपके बच्चों को कोई उठा के रात भर पीटे, क्या उसे कभी माफ करोगे? नहीं। तो उन्हें भी माफ नहीं किया जाएगा, और वो भोगेंगे। यही कर्म का सिद्धांत है — भोगना ही पड़ेगा, और कोई ऑप्शन नहीं है; दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती। अब कर्म तो उसने किया, और बाकी लोग, जिसको-जिसको उसने सहयोग किया, सब मस्त मलाई-आइसक्रीम खा के जी रहे हैं; लेकिन वो आदमी एकदम घुटन में जी रहा है। पैसा आ रहा है, रखा है, लेकिन खा नहीं सकते; अशांति में जी रहे हैं। बीच पे बैठ के सिंगदाना नहीं खा सकते, पेड़ के नीचे बढ़िया से आराम से बैठ नहीं सकते — छुपा रहे हैं अपने आप को। कहां छुपा लूं? नहीं छुपा पाओगे — भोगना पड़ेगा।

प्रश्न: गुरु जी, आदिकाल में भी साधु-संतों में मतभेद था और आज भी है — इसका क्या कारण है? (P24-0030)

नहीं, मतभेद साधु-संतों में नहीं होता है। अगर कोई इसमें लालची है, तब होता है। सीधी सी बात है।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मचिंतन की क्या प्रक्रिया है? (P24-0031)

जब आप एकांत में बैठोगे तो आत्मचिंतन बढ़ जाता है, और जब आप कम भोजन लोगे तो बहुत तेजी से बढ़ जाता है। अपने आप में कहीं भी बैठ जाओ, भोजन कम करके — फिर आत्मचिंतन बहुत तेजी से होगा।

प्रश्न: गुरु जी, अंतरात्मा की आवाज कैसे सुनें? (P24-0032)

बस ईमानदारी अपना लो। और आवाज तो देखिए — जब भी आप कुछ गलत करने जाते हो तो एक आवाज आती है रोकने के लिए; आती ही आती है, हर बार आती है। तो आप वो मत करिए, बस।

प्रश्न: गुरु जी, स्वयं का परिचय — आत्म परिचय क्या है? (P24-0033)

आत्म परिचय का मतलब — जो था, है और रहेगा सदैव, उसका परिचय। हर काल में वो मौजूद है; अगर आपने उसका परिचय कर लिया तो आत्म परिचय है। बाकी हमारा जो बनाया हुआ परिचय है, वह बदलता रहता है। हमारा परिचय लोगों के लिए है — कभी शरीर के नाम से कोई जानता है, कोई हमारे कर्म से; जैसे-जैसे हमारा कर्म बदलता है वैसे-वैसे हमारा परिचय लोगों के लिए बदलता रहता है। देश, काल, स्थिति, परिस्थिति में हमारा परिचय बदलता रहता है। लेकिन वह परिचय रहेगा नहीं, चला जाएगा। अब उस परिचय में हमारा अहम भाव होता है कि मैं यह हूँ — उसी में व्यक्ति फंस जाता है। जब वहां से आप अहम भाव हटाओगे, तब अपना आत्मनिरीक्षण करोगे — मैं क्या हूँ? कहां से आया हूँ? कहां जाऊंगा? जन्म क्या है? मृत्यु क्या है? अपने बनाए हुए अस्तित्व को जब आप देख लोगे कि ये तो बनाया हुआ अस्तित्व है, ये रहेगा नहीं, मैं इसे कितना भी रखना चाहूँ — पहले नहीं था, अब बस अहम भाव में है कि मैं कुछ बन गया हूँ — तब आप उससे छुटकारा पाना चाहोगे; और एक तरफ यह जानना चाहोगे कि आखिर मेरा वो अस्तित्व कौन सा है जो था, है और रहेगा। इसी को कहते हैं आत्मनिरीक्षण। अभी प्रत्यक्ष नहीं हुआ है, लेकिन किसी के ज्ञान को सुनकर शब्दों से प्रत्यक्ष हो गया है कि ये नहीं रहेगा। तो आत्मनिरीक्षण करते-करते, एक तरफ बाहर से अपने आप को छुड़ाओगे, एक तरफ अपने आप को समझोगे, तो धीरे-धीरे एक समय ऐसा आएगा कि आत्म साक्षात्कार हो जाएगा। आत्म साक्षात्कार किसको होगा? साक्षात्कार करने वाला नहीं रहेगा — करते-करते निर्णय करने वाला खत्म हो जाएगा। जिस समय उसे निर्णय करने के लिए कुछ भी नहीं रहेगा, उसके बाद होगा साक्षात्कार। जैसे किसी के घर पता लेके गए — जैसे ही पते पर पहुंचे, पता खत्म, सारा भ्रम खत्म। जिसकी मांग थी कि मुझे आत्म साक्षात्कार करना है, वो खत्म हो गया; आत्म रह जाएगा — जो बचा, वो आप हो। ये थोड़ा कठिन है, इसे धीरे-धीरे समझो, जल्दी मत करो।

प्रश्न: गुरु जी, क्या प्रारब्ध को पूरा भोगना पड़ता है, या कर्मफल भोगे बिना नष्ट भी हो जाते हैं? क्या ईश्वर भक्ति, नाम जप से प्रारब्ध के बुरे कर्मफल को बदला या नष्ट किया जा सकता है? (P24-0034)

पूरी तरह नहीं, कुछ। जैसे मान लीजिए जज ने सजा दे दी, तो अगर कैदी का आचरण सही रहा, भाव सही रहा, सेवा की, तो जेलर को इतना अधिकार है कि वो एक लेटर बनाए और उसका पूरा ब्यौरा दे — कुछ परसेंटेज माफ करवाने के लिए। तो उसकी पूछताछ आएगी; अगर वो बात सही निकली तो उसकी कुछ सजा माफ की जाएगी।

प्रश्न: गुरु जी, गुरु गृहस्थ को बनाएं या विरक्त को? मार्गदर्शन करें। (P24-0035)

गुरु ज्ञान का प्रतीक होता है; जो आपके प्रश्नों के उत्तर दे दे, वो गुरु योग्य है। गुरु ना गृहस्थ होता है, ना संन्यासी होता है — गुरु स्थिति होता है। वो जहां भी मिल जाए, बना लो। और उसे क्या बनाओगे? वो आपको बनने-बनाने से मुक्त करा देगा — वही गुरु होता है। ना तुम बनने लायक रहोगे, ना बनाने लायक।

प्रश्न: गुरु जी, गीता में लिखा है कि जिसने अपनी आत्मा को जान लिया, फिर उसे कुछ जानने की जरूरत नहीं है — क्या यह सही है? तो आत्मा को कैसे जानें?

(P24-0036)

आत्मा को जिसने जान लिया, फिर जानने वाला बचता नहीं, आत्मा बचता है। और जानने के लिए जानने वाले को मिटा दो, बस। वो कहां से खड़ा हुआ है, कौन सा आधार लिया है, बेस लिया है — वह देख लो।

प्रश्न: गुरुदेव, ध्यान कितनी देर करना चाहिए? (P24-0037)

हर वक्त — कर्म करते हुए इतना ध्यान रखना है कि कोई गलती ना हो जाए। इसी को ध्यान कहते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, समाधि के अनुभव के बारे में कुछ बताइए। (P24-0038)

उसका कोई अनुभव नहीं बोला जा सकता। बस इतना बोला जा सकता है कि वहां कुछ नहीं होता — ना कोई इच्छा, ना कोई अपेक्षा, ना कोई अच्छा, ना कोई बुरा, ना कोई राग, ना कोई द्वेष, ना कोई मेरा, ना कोई तेरा; ना कुछ चाहिए — ऐसा भी नहीं कि नहीं चाहिए। वो स्थिति ही कुछ अजीब रहती है, जिसके बारे में बोला नहीं जा सकता — ना कहीं जाना है, ना कहीं पहुंचना है, ना कुछ पाना है, ना कुछ खोना है; सब खत्म हो जाता है। जैसे कोई स्त्री मां बनने वाली हो — बच्चा हो जाने के बाद कोई पूछेगा क्या हुआ, तो बोलेगी दर्द हुआ था, बस। लेकिन वो दर्द का एहसास एक मां ही समझ सकती है, और कोई नहीं। पूछोगे दर्द कैसा था, बोलेगी बहुत — और क्या बताएगी, कैसे बताए? तो वैसे ही समाधि की स्थिति होती है।

प्रश्न: गुरुदेव, सब कुछ प्रारब्ध से निश्चित है, तो फिर बेईमानी भी हमारे प्रारब्ध से ही आएगी? (P24-0039)

बेईमानी की प्लानिंग आप मत करो — देख लो, बेईमानी आती है कि नहीं। बेईमानी की प्लानिंग तो आप करते हो। सब फिक्स है; आप फिक्स में जब फिक्स करते हो, उसी में फंस गए हो। अब देख लो आप क्या फिक्स कर रहे हो। सब फिक्स है, प्रकृति में चल रहा है, लेकिन उसमें हम इंटरफेयर करने में लगे हुए हैं, उसी के कारण फंस गए। पढ़ो मत, इसे समझो।

प्रश्न: गुरुदेव, बुरे लोग काफी अच्छे से रहते हैं और जो अच्छे लोग हैं वो काफी परेशान होते हैं — ऐसा क्यों? (P24-0040)

अब आपको क्या चाहिए, देख लो। अगर आपको लगता है सुखी रहना हो तो बुराई करो, दुखी रहना है तो अच्छाई करो — तो करके देखो। जो आपको चाहिए वो करो, तभी ना देखोगे; बिना किए कैसे देखोगे? फिर हमें बताओ। आप खुद ही निर्णय कर रहे हो कि हमारी नजर में बेईमान लोग सुखी हैं — तो तुम भी करके देख लो; बिल्कुल परिणाम आएगा, तब पता चलेगा कि वो बुरा करके सुखी हो रहे हैं कि दुखी। सत्कर्म का भी परिणाम है।

प्रश्न: गुरु जी, 'मैं था तब हरि नहीं, हरि है तो मैं नाहीं' — जब आप कबीर साहब को मानते ही नहीं, तो उनकी वाणी बोलने का आपको क्या अधिकार है? (P24-0041)

किसने कहा कि हम कबीर को नहीं मानते? जो महापुरुष होते हैं, वो व्यक्तिगत नहीं होते। जरूरी नहीं है कि मैं आपको बोलूं — मैं कबीर को मानता हूं, बुद्ध को मानता हूं, मीराबाई को मानता हूं, गुरु नानक जी को मानता हूं; ये कहने की आवश्यकता नहीं है। जब मैं यह काम कर रहा हूं, मतलब इन लोगों का सम्मान करता हूं, तभी तो मैं यहां तक आया। यह चिल्लाने की जरूरत नहीं है — प्रेम कभी चिल्लाया नहीं जाता। और कबीर की वाणियों को हमें मान के लिए बेचना नहीं है, उनकी वाणी लेके व्यापार नहीं करना है — समझना है। कबीर की वाणी हो, चाहे बुद्ध, महावीर, मीराबाई की — यह किसी एक व्यक्ति की नहीं है; उस वाणी में जीना पड़ता है, चिल्लाने से कुछ नहीं होता। बुद्ध, महावीर, कबीर, मीराबाई, गुरु नानक, ज्ञानेश्वर जी — इनको मानने की जरूरत नहीं है, इनके शब्दों को समझने की जरूरत है और उसमें जीना पड़ेगा। मानने से कुछ नहीं होगा — इनको मानो और दिन भर जेब काटो, इनके शब्दों को उठा के मार्केट में बेचो, मान कमाओ, चौराहे पे बोल के गप मारो — यही हो रहा है आजकल। हमने इनको समझा है, तभी मैं आज यहां तक पहुंचा हूं।

प्रश्न: गुरु जी, ईश्वर तो तीन गुण और 25 प्रकृति से परे है; तब माया नहीं बनी थी — तब ईश्वर कहां था? (P24-0042)

ये वही बताएगा जिस किताब से पढ़े हो; उस किताब में नहीं लिखा था, नहीं तो वो भी बता देते कि ईश्वर कहां है। आज तक दुनिया में जितना भी लिखा गया, जितना भी बोला गया, उसमें बस अधूरापन ही है; किसी ने पूर्ण लिखा ही नहीं, लिखा ही नहीं जा सकता। एक पेड़ के बारे में लिख सकते हो? लिखते-लिखते, देखते-देखते पेड़ ही बदल जाएगा। शरीर के बारे में लिखो तो खुद बदल जाओगे। कुछ भी पूर्ण लिखा-बोला नहीं जा सकता, क्योंकि लिखने-बोलने वाला ही पूर्ण है, और उसने अपने आप को अपूर्ण में फंसा लिया है; वो जब भी करेगा तो अपूर्ण ही करेगा, अपूर्ण की ही बात करेगा। खुद है पूर्ण और उसकी ख्वाहिश है पूर्ण लिखने की। अरे भाई, आप कुछ भी करोगे तो अपने से कम ही करोगे, ज्यादा कैसे कर पाओगे? ये हर क्षेत्र में लागू होता है — जब भी काम करोगे, अपनी क्षमता से कम ही करोगे। इसीलिए इच्छा करना मूर्खता बोला गया — इच्छा करना ही सबसे बड़ी मूर्खता है। मानसिक रूप से आप जो भी करोगे, आपसे कम ही सामने होगा, इसलिए वो अपूर्ण ही रहेगा हमेशा; लेकिन उसको हम लोग पूर्ण मान चुके हैं कि यही पूर्ण है — यही तो गड़बड़ है। ये चिंतन करने का विषय है।

प्रश्न: गुरु जी, आपकी बातें तो बहुत अच्छी लगती हैं, लेकिन इनको लागू नहीं कर पा रहा; बहुत पापी हूँ मैं, कृपया माफ कीजिए। (P24-0043)

कोई बात नहीं है। पाप को हटा दो — तुम वही हो जो तुम थे — और फिर से जीवन की एक नई शुरुआत करो। हीरा कई सालों से अगर गटर में पड़ा रहे, उसको निकाल के बस धो दो, बस खत्म। अब वो बोले नहीं, मैं कई सालों से गटर में था — अरे, तू था, आज इधर, अभी तुम्हें साफ करते हैं। जैसा था वैसा हो गया, बस खत्म बात। भ्रम हो गया गंदगी का।

प्रश्न: गुरु जी, क्या ये दुनिया एक रंगमंच है और हम इस रंगमंच पर अभिनय करने वाली कठपुतली मात्र हैं? (P24-0044)

हो सकते हैं। अब देखो आपको क्या अभिनय मिला है — ये जानना बहुत जरूरी है। रंगमंच तो जान लिया; आए हो और जाना भी है, तो रंगमंच तो है ही है। लेकिन अभिनय का पता हो जाए बस, कि आपको क्या रोल अदा करना है। आपका रोल क्या है, वो पता कर लो।

प्रश्न: गुरुदेव, चिंता ही नहीं मिटती, क्या करूं? मुझे राधा-कृष्ण का मंत्र दिया गया है, वही करती हूँ — अब क्या करूं? (P24-0045)

बस ईमानदारी से सत्कर्म करो और आगे बढ़ो। अच्छा, मैं पूछता हूँ — अगर विदेश जाना हो तो क्या करना पड़ेगा? पासपोर्ट बनवाना पड़ेगा। पहले कारण बताना होगा कि पासपोर्ट क्यों बनवाना चाहते हो; फिर एप्लीकेशन के बाद इंक्वायरी होती है कि थाने में कोई केस दर्ज है या नहीं। जब पूरा चेक होके पासपोर्ट मिलता है, तब वीजा अप्लाई करना पड़ता है — वो देश आपको चाहता है कि नहीं। तो ऐसे ही आप इस लोक को छोड़ के जाना चाहते हो, तो पहले पासपोर्ट बनवाओ; पासपोर्ट बनवाने के लिए पूरी पवित्रता चाहिए। जब पूरी पवित्रता होके पासपोर्ट बन जाएगा, तब वीजा के लिए अप्लाई करोगे — जहां जाना चाहते हो वहां के योग्य हो कि नहीं। प्रयास केवल पवित्र होने के लिए करना है। पासपोर्ट के लिए अप्लाई कर रहे हो, लेकिन जांच आ रही है तो बार-बार कोई ना कोई विकार मिल जाता है, तो जांच में फेल हो जा रहे हो। और असली चीज पे ध्यान भी नहीं है — पासपोर्ट का पता नहीं और वीजा के लिए भागदौड़ कर रहे हो; पासपोर्ट से पहले डायरेक्ट वीजा नहीं मिलता। सेटिंग करोगे, दलाल पकड़ोगे — जैसे बिना वीजा-पासपोर्ट के जाली रास्ते से दूसरे देश में घुसना — तो उसका परिणाम यह है कि कुछ भी हो सकता है, फिर घूमते रहोगे। इसलिए सोच-समझ के पवित्रता की ओर बढ़ो, तभी आपका असली पासपोर्ट मिलेगा।

प्रश्न: गुरु जी, मन की इच्छा फलीभूत नहीं होती तो दुख होता है। (P24-0046)

दुख आपको होता है, मन को नहीं। अगर मन को दुख हो रहा है तो छोड़ दो — आपको तो नहीं हो रहा है ना। दुख आपको हो रहा है और मन पर थोप रहे हो; मन को हो रहा है तो छोड़ दो ना, तुम तो मन नहीं हो। तो टेंशन क्या, चिंता क्यों कर रहे हो? मन को दुखी रहने दो, आप तो खुश रहो।

प्रश्न: गुरुदेव, इस प्रकृति में पूर्ण कौन है और अपूर्ण कौन है? (P24-0047)

इस संसार में, प्रकृति में जिसे चाहिए वो अपूर्ण है और जिसे नहीं चाहिए वो पूर्ण है — इतनी सी बात है। ये बरगद का पेड़ ना पूर्ण है ना अपूर्ण है, ये बरगद का पेड़ है। जीव-जंतु, जानवर — इन्हें हम दोनों में से कुछ नहीं बोल सकते। जानवर को खाना तो चाहिए; जरूरत में तो सबको चाहिए, ये पेड़ भी कहीं से भोजन ग्रहण कर रहा है। वो जरूरत में जीते हैं, उनमें राग-द्वेष नहीं होता — इसलिए उनमें पूर्णता है भी और नहीं भी। लेकिन मनुष्य पूरी तरह से अपूर्ण हो जाता है। चाहिए तो अपूर्ण है, और 'चाहिए' से मुक्त हो गया तो पूर्ण है। राग-द्वेष उसमें आ रहे हैं तो अपूर्णता हो रही है। बस इतनी सी बात है।

प्रश्न: गुरुदेव, इस जगत में समझ-समझ के कैसे निकलें? (P24-0048)

आपको पता है ना क्या गलत है, क्या सही — तभी तो फंसे हो। अगर पता नहीं होता तो फंस भी नहीं पाते। तो आप गलत मत करिए। एक बात समझिए — 'मैं' दृष्टा है और 'है' परिवर्तनशील है। ये पूरा संसार 'है' है। मैं ने कुछ 'है' को अपना बनाया — 'मेरा' — और फिर उसे रोकना चाहता है। जब उसमें बदलाव होता है तो ये रोता है, और इसके तरीके से बदलाव हो गया तो खुश होता है। बस इसी में पड़ा है। सबको पता है कि ये रुकेगा नहीं, फिर भी रोकने के लिए अनेक उपाय करता है। कुछ समय के लिए लगता है रुक गया, पर वो आराम-आराम से बदल रहा है; यहां हर वक्त सब परिवर्तनशील है। आपको पता है कि हम दोनों शादी कर रहे हैं और एक दिन कोई छोड़ के जाएगा — जब जाते हैं तो रोते हो। ये तो पहले ही दिन पता था। तो आपको पता है कि आप जो भी कर रहे हो उसका परिणाम दुख है, फिर भी 'चलो कर लेते हैं' — तुरंत तो सुख है ना, बाद में दुख। बस यही चल रहा है जिंदगी में। जो करते हो उसका परिणाम पहले ही पता कर लो और उसके लिए भी तैयार रहो।

प्रश्न: गुरु जी, ये जो विवाह का सिस्टम है, क्या परमात्मा ने खुद बताया था या आदमियों ने इसका इन्वेंशन किया? (P24-0049)

नहीं, इसको तो मनुष्य ने किया है। देखिए, अगर ऊपर वाले ने बनाया होता तो सब एक जैसा होता — लेकिन सब अलग-अलग तरीके से विवाह करते हैं। मतलब से भी विवाह होते हैं; जरूरत में, सिर्फ बच्चों को नाम देने के लिए भी विवाह करते हैं। विवाह करना या न करना — ये तो आपकी जरूरत है। पक्का विवाह कर रहे हैं तो पक्का उसका परिणाम भी पता कर लीजिए, और परिणाम के लिए भी तैयार रहिए।

प्रश्न: गुरु जी, क्या विवाह करके भी कोई मुक्त हो सकता है? (P24-0050)

मुक्ति और मोक्ष तो आपके कर्म के ऊपर है। हो सकता है विवाह करने वाला मुक्ति-मोक्ष तक पहुंच जाए और विवाह न करने वाला फंसा रहे। आप किस जगह पर रह के क्या कर रहे हैं — वो मायने रखता है। विवाह करना या न करना अलग बात है, वो आपके शरीर की जरूरत है। ऐसा नहीं कि विवाह नहीं करेंगे तो आप मुक्त हो जाएंगे। हो सकता है विवाह करने वाला ईमानदारी-सत्कर्म के साथ जीते हुए अपने आप को मुक्ति से मोक्ष तक लेकर चला जाए, उस परम सत्ता से मिलना करा ले; और जिसने विवाह नहीं किया, हो सकता है वो बेईमानी करके यहीं का यहीं घूमता रहे। ज्यादातर आदमी सोसाइटी मेंटेन करने के चक्कर में, बड़ा बनने के चक्कर में फंसता चला जाता है। आप जहां भी रहिए, बेईमानी-दुष्कर्म छोड़ दीजिए, ईमानदारी-सत्कर्म अपना लीजिए — बस बात खत्म। विवाह करना है या नहीं करना, वो आपकी जरूरत है।

प्रश्न: गुरु जी, जो बंदा लिव-इन रिलेशन में रहता है, क्या वो भी ठीक है? (P24-0051)

अगर आपको आगे बच्चे नहीं चाहिए तो ठीक है। लेकिन मान लीजिए आगे बच्चे चाहिए और आपने सामाजिक व्यवस्था से शादी नहीं की — तो आप तो जी के निकल जाओगे, लेकिन उस बच्चे की जिंदगी लोग बर्बाद कर देंगे, ताना मार-मार के। एक आने वाले की जिंदगी आपकी वजह से नर्क हो जाएगी। उसे माता-पिता का नाम ही नहीं मिलेगा; लोग उसे जीने नहीं देंगे, उसको घुटन भरी जिंदगी दे देंगे — समाज भी तो है।

प्रश्न: गुरु जी, पुनर्जन्म — अगला-पिछला जन्म होता है या नहीं? हमारे मजहब में तो ये माना नहीं जाता। क्या इसे जानना जरूरी है? (P24-0052)

महाभारत की एक कहानी है — भीष्म पितामह जब शैया पर लेटे थे तो उन्होंने कहा, मैंने पूरा जीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया, आखिर मैं किस जन्म का पाप भोग रहा हूँ? कहानी कहती है कि वो अपनी ऊर्जा से 20 जन्म पीछे गए, कुछ नहीं मिला; फिर 21वें जन्म में देखा कि राजकुमार थे और गुस्से में एक सर्प को तीर मारा था। अब देखिए, भीष्म पितामह 21वें जन्म तक गए, उन्हें ज्ञान नहीं हुआ; लेकिन अर्जुन एक जन्म भी पीछे नहीं गए, उन्हें ज्ञान भी हो गया, मोक्ष भी हो गया। तो हम काहे को अपनी ऊर्जा पीछे जाने में लगाएं? वो जिंदगी मैं जी के आया हूँ, जा के पीछे क्या कर लूंगा? और अगर कोई कहे कि अगला-पिछला नहीं होता, तो बताइए — कोई अपाहिज पैदा होता है, कोई राजा के यहां, कोई रंक के यहां; कोई कुरूप, कोई सुंदर; कोई झोपड़ी में, कोई महल में; कोई पैदा होते ही ऐसा रोगी कि हाथ से पानी भी नहीं पी सकता। ऐसा क्यों? 'खुदा की मर्जी' — ऐसा खुदा कैसे हो सकता है कि जीवों को तड़पता छोड़ दे? कोई मां-बाप चाहेगा कि मेरे बच्चे ऐसे दुखी रहें? अगर दुनिया खुदा के, परमात्मा के हिसाब से चलती तो इतनी गंदी नहीं होती। सारा बुरा कर्म हम करते हैं, दोष उसको देते हैं। वो बालक तो अबोध है, उसे कर्म का सिद्धांत ही नहीं पता, उसमें राग-द्वेष, इच्छा-अपेक्षा कुछ नहीं — फिर क्यों इतना भोग रहा है? कुछ तो बात होगी — अगला-पिछला इसी से समझ में आता है। हमारे कर्म की वजह से ही हमें वैसा घर, धन, तन और ज्ञान का बल, वैसे माता-पिता मिलते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, जो हम अभी प्रेजेंट टाइम में लाइफ जी रहे हैं, क्या ये प्री-डिसाइडेड है? क्या इसमें हमारे पास फ्री विल कुछ नहीं है? (P24-0053)

आपके बस में इतना है — ईमानदारी और बेईमानी, बस दो चीजें। अगर ईमानदारी करेंगे तो आप मुक्ति से मोक्ष तक जाएंगे; बेईमानी करेंगे तो आगे का बंधन बांध रहे हैं। कर्म के सिद्धांत को समझिए — आप पहले से सब फिक्स करके आए हैं और यहां कुछ फिक्स करना चाहते हैं। जैसे आपको इस सामान को यहां रखने का मौका मिला, तो यहीं रखना पड़ेगा। अब आप ईमानदारी से रखिए या बेईमानी से — ईमानदारी से रख लिया तो मुक्त हो गए, बेईमानी से रखा तो आगे का कर्मफल बांध लिया। लिखने वाले भी आप ही हो। लेकिन अब आप बदलना चाह रहे हो, क्योंकि देश-काल-स्थिति-परिस्थिति बदल गई है; जब लिख रहे थे तब परिस्थिति अलग थी। अब कह रहे हो 'मुझे और चाहिए', और उस 'और चाहिए' के लिए बेईमानी करने लगते हो, फिर बेईमानी में फंस जाते हो। सब फिक्स था, आप फिक्स करने में बुरी तरह फंस गए।

प्रश्न: गुरु जी, जितने बुरे कर्म हमने पिछले जन्म में किए हैं, उन्हें सही करने के लिए ईमानदारी-सत्कर्म करें — तो क्या उन्हें भोगना भी पड़ेगा? (P24-0054)

भोगना भी पड़ेगा। कुछ इधर-उधर, अप्राकृतिक आप नहीं कर सकते; कोई सेटिंग नहीं कर सकता। आप देखिए — कृष्ण हों, राम हों — ये अपने कर्म को खुद भोग के गए, इनके परिवार भी गए। मोहम्मद को देखिए, उनके पास खाने को रोटियां नहीं थीं, उस गरीबी में उन्होंने जिया। जीसस को भी अपने कर्म का परिणाम भोगना पड़ा, सूली पे लटके। इस धरती पे जितने भी आए, सबको अपने कर्म का परिणाम भोगना पड़ा। और ये लोग कहते हैं, 'आओ, हम तुम्हें इनके सहारे बचा लेंगे' — जब ये खुद नहीं बचे तो आपको कैसे बचाएंगे? ये सीधा नहीं कह देते कि ईमानदारी-सत्कर्म करो। दुनिया के जितने भी धर्म-संप्रदाय-मजहब में चले जाओ, मूल यही है — ईमानदारी-सत्कर्म। जिसे भी उस परम सत्ता से मिलना है, बस ईमानदारी-सत्कर्म अपना ले। लोग बताते हैं ये ध्यान करो, कुंडलिनी जगाओ, थर्ड आई खोलो, 20 मिनट ये करो — इसी ने समाज को भटका दिया। लोग समझते हैं आश्रम में दो-तीन महीना रहेंगे और मुक्त होकर चले जाएंगे। इन सबने यही सिखाया है कि अपने कर्म के परिणाम को भोगो और ईमानदारी-सत्कर्म के साथ जीवन जीते हुए निकल जाओ — और वो आपके हाथ में है, किसी और के हाथ में नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, मुक्ति और मोक्ष में डिफरेंस क्या है? (P24-0055)

मुक्ति मतलब — आप अपने बनाए हुए संसार से, जिसमें बेईमानी और दुष्कर्म साथ कर रहे थे, उससे मुक्ति पा लिए। ईमानदारी पकड़ के आप मुक्त हो गए, अब आगे का बंधन बंधना बंद। लेकिन ईमानदारी से जी तो रहे हो, पिछला खत्म कैसे होगा? पिछला खत्म होगा सत्कर्म के द्वारा। अगर सिर्फ ईमानदारी पकड़ ली तो मुक्ति तो पा गए लेकिन मोक्ष नहीं मिलेगा — चक्रव्यूह में घुस तो जाओगे, बाहर नहीं निकल पाओगे। इसलिए ईमानदारी के साथ सत्कर्म जरूरी है; सत्कर्म जोड़ने से आपकी गति डायनामिक हो जाएगी, स्पीड पकड़ लेंगे। पवित्रता सत्कर्म से आएगी। जब पिछला खत्म होगा तो मोक्ष होगा — मोक्ष मतलब उस परम सत्ता से मिलना, चाहे उसे परमात्मा कह दो, खुदा कह दो; उसके बाद वापस लौटना नहीं होता। उसके बाद क्या होता है, वो मैं नहीं बोलूंगा — मेरा भाव है कि आप लोग भी चल के देखो। आप बहुत आसानी से अपने आप को ईमानदारी-सत्कर्म के द्वारा पवित्र करा सकते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, एक स्टूपिड सा क्वेश्चन — क्या आप किसी को देख के बता सकते हैं कि ये मुक्त हो जाएगा या नहीं होगा? (P24-0056)

मैं पक्का बोल सकता हूँ — जिनके पास भी समझ है, वो अपने आप को मुक्त करा सकते हैं। मुझे देखने की जरूरत नहीं है, मैं बिना देखे भी बोल रहा हूँ कि जिनके पास समझ है, वह चाहे तो अपने आप को मुक्त करा सकते हैं। इसमें संशय मुझे नहीं है; अगर संशय होता तो मैं इतनी रात को, एक-डेढ़ बजे तक सत्संग नहीं करता, आराम करता। मुझे इतना समझ में आ गया कि उस परम सत्ता से मिलने का हर व्यक्ति अधिकारी है — इसलिए मैं इतनी मेहनत कर रहा हूँ। मैं अब पाप-पुण्य, सत्कर्म में भी नहीं रहा, क्योंकि मुझे कुछ नहीं चाहिए; है सत्कर्म, लेकिन मैं उस सत्कर्म से भी परे हो गया।

प्रश्न: गुरु जी, अगर कोई पिछला जन्म जानने पर ऊर्जा लगाना चाहे तो क्या उसकी कोई विधि है? (P24-0057)

जिससे आपका भटकाव होगा, वो विधियां मैं क्यों दूँ? और मेरे पास है भी नहीं, क्योंकि मैंने उस पर काम ही नहीं किया — मैं बिना मतलब का काम करता नहीं। मुझे पता है कि आप लोग उस परम सत्ता से मिलेंगे, आप चाहो तो — तभी ये काम कर रहा हूँ। पिछले जन्म में जाकर उसे सुधार तो सकते नहीं, तो कम से कम आगे तो सुधार लो। आपके पास समझ है तो उस परम सत्ता से, उस परमात्मा से, उस खुदा से, उस गॉड से मिलना कैसे हो जाए — उसके लिए काम करो, ये ज्यादा ठीक है; क्योंकि उससे मिलने के बाद सब क्लियर हो जाएगा, सब खुल जाएगा। पिछला जानने के बाद कुछ क्लियर नहीं होगा, उसी में फंस जाओगे — पिछला, फिर उसका पिछला, जानते रहो, और जान के हुआ क्या? कुछ नहीं, क्योंकि वो तो जी के आए ही हो। तो मैं कह रहा हूँ कि ऐसा कुछ जान लो कि जानने के लिए कुछ ना बचे; उससे मिल लो कि किसी से फिर मिलना ना हो। हां, किसी और की ऊर्जा है, उस पर मेरा अधिकार नहीं — हो सकता है मैं मुक्ति-मोक्ष में खुश हूँ और वो बंधन में खुश है।

प्रश्न: गुरु जी, स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के पास गए थे तो उन्होंने एक मिनट में सब दिखा दिया था — वो क्या था? औरों को क्यों नहीं कराया? (P24-0058)

दिखा नहीं दिया था। ऐसा है कि वो जिज्ञासु थे, खोजी थे; उन्हें उसके अलावा कुछ नहीं चाहिए था — अगर वो है तो है। उन्होंने पूछा कि भगवान है? उन्होंने कहा, हां है। बात किए हो? हां, जैसे तेरे से बात कर रहा हूँ। मुझे दिखा सकते हो? दिखा सकता हूँ। तो वो तैयार थे, उन्हें रिटर्न नहीं जाना था; उन्होंने स्पर्श करके कुछ एहसास कराया था, लेकिन वो पूरी तरह तैयार थे, और फिर वो वापस दुनिया में नहीं गए। बाकी और भी शिष्य थे — उन्हें क्यों नहीं कराया? क्योंकि वो तैयार नहीं थे। तो क्या सच में आपको रिटर्न नहीं जाना है? क्या इस स्थिति पर आ गए हो कि अब पीछे नहीं मुड़ना है? तो आपको कुछ कराया जा सकता है। जांचो — पक्का है, कि पक्का कर रहे हो? पक्का है तो बात बन जाएगी; पक्का कर रहे हो तो अभी नहीं बनने वाली — अभी चाय बन रही है, पूरी बनी नहीं है, अभी स्ट्रगल में है।

प्रश्न: गुरुदेव, ध्यान में सांसों पर ध्यान करते हैं, बोलते हैं इसी से मुक्ति मिलेगी — गौतम बुद्ध को भी इसी से मिली थी। क्या ये सही है? (P24-0059)

सांस तो अपने आप आ-जा रहा है, उस पर ध्यान से क्या मतलब? कौन बताता है गौतम बुद्ध को इसी से मिली थी? किताबों में सब नहीं लिखा है। किताबें लिखने वाले आदमी ही हैं, किताबों की लिपि सब बदली जाती है। गौतम बुद्ध करते-करते थक गए तो आखिरी में हठ योग में बैठ गए। वो निराश हो गए, सब छोड़कर बैठ गए — 'और कुछ नहीं चाहिए' में आ गए। करके थक गए; इस स्थिति में पहुंच जाता है जीव। वो सांसों से नहीं पहुंचे थे। कोई किसी विधि से नहीं पहुंचा है, किसी का भी नाम ले लो। आखिर में विधियां छूट जाती हैं, थक जाता है व्यक्ति, सब छूट जाता है, वह बचता है शेष — उस समय उसकी उपलब्धि होती है। बोधि वृक्ष के पास बैठ गए कि अब उपलब्धि होगी तभी उठूंगा, नहीं तो मर जाऊंगा। अब उनके नाम से लोग विधियां बांट रहे हैं। वो जब तक थे, सत्संग किए, दया-करुणा-प्रेम सिखाए लोगों को। हिंदू में बोला गया ईमानदार हो; मुस्लिम कौन — जिसमें ईमान हो; क्रिश्चियन — जिसमें प्रेम हो, लव इज गॉड; बुद्ध — दया, करुणा, प्रेम; महावीर — अहिंसा परमो धर्म, यहां तक कि किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचाओ; कबीर — भाईचारा, समभाव, समदृष्टि; गुरु नानक — जरूरतमंद की सेवा करो, परोपकार में लग जाओ। तो मैंने सबको देखा, सबको निचोड़ा, और कहा — परोपकार धर्म है, यही धर्म की परिभाषा है। इसमें कोई विधियों की बात नहीं होती। मैं जाकर लोगों से मिल-मिलकर बात किया — चर्च, दरगाह, मंदिर, श्मशान, नदियों में — फिर मैंने पक्का कर लिया कि सब मिलाजुला के परोपकार है: जरूरतमंद की सेवा करो, ईमानदारी से जीवन जियो। यही मूल है, और यही मेन बात लोग नहीं बता रहे।

प्रश्न: गुरुदेव, लोग कहते हैं आंख बंद करके दो-तीन घंटे बैठे रहो। क्या ईमानदारी-सत्कर्म से उस परम सत्ता से मेरा डायरेक्ट कनेक्शन बन जाएगा? (P24-0060)

मैं कह रहा हूँ कोई भी व्यक्ति पूजा करे, पाठ करे, तपस्या करे, नमाज पढ़े, प्रार्थना करे, कुछ भी करे — अगर ईमानदारी-सत्कर्म ना करे तो उसका क्या होगा? कुछ नहीं होगा, पतन होगा। और ईमानदारी-सत्कर्म अपना ले, तो ये करे चाहे ना करे, कल्याण पक्का — वो आपसे आकर मिलेगा। सीधा, एकदम सीधा। इसीलिए तो मदर टेरेसा पूरी दुनिया में फेमस हो गई — उन्होंने सिर्फ सत्कर्म किए। मूल यही है: जरूरतमंद की सेवा करना और ईमानदारी का जीवन। मैंने जहां तक समझा, हर व्यक्ति से वो मिलने के लिए तैयार है — एकदम पक्का, ये फाइनल है — बस तैयारी तुम्हारी हो जाए। बताने वाले अनेक विधियां बांट दिए, पर मूल नहीं बताए कि सर्वप्रथम, नमाज पढ़ने से पहले, पूजा करने से पहले, तपस्या करने से पहले ईमानदारी-सत्कर्म अपनाना। आप कर्म से फंसे हो, कर्म से ही निकल सकते हो — ताला जिस चाबी से बंद होता है उसी से खुलता है। अपने आप को पवित्र कराने के लिए ईमानदारी-सत्कर्म, बस। क्योंकि बेईमानी-दुष्कर्म में अनेक लोगों ने आपको श्राप दिया है। जब आप जरूरतमंद की सेवा करते हो, उसकी जरूरत पूरी कर रहे हो, तो आप उसके लिए भगवान हो जाते हो, मसीहा हो जाते हो। अब वो मसीहा को आशीर्वाद देता है — और भगवान को आशीर्वाद परमात्मा के अलावा कौन देगा? उस समय वो आशीर्वाद सीधा उस परम सत्ता से आता है। इसीलिए निर्विकार होने में, विकारों से और अपवित्रता से मुक्त होने में सहायता मिलती है। किसी जरूरतमंद की सेवा करके उसे कुछ देर देखो — वो मुंह से नहीं, रोम-रोम से आशीर्वाद दे रहा है। साधना का मतलब अपने आप को सुधारना।

प्रश्न: गुरुदेव, इटली, फ्रांस, यूरोप में तो लोग गरीब हैं ही नहीं, सरकार खुद मदद करती है — वहां सत्कर्म कैसे करेंगे? (P24-0061)

क्या इटली में, फ्रांस में आपने किसी को रास्ता नहीं बताया? क्या लोग आपको ऑफिस वगैरह का रास्ता नहीं बताते? ये सत्कर्म है। फिर जीव-जंतुओं की सेवा भी हो सकती है। मान लीजिए कोई गिर गया तो आपने उठाया कि नहीं? ये सत्कर्म है — इसे गवर्नमेंट नहीं रोक सकती। हो सकता है कोई गिर गया तो दवाखाने तक ले जाना पड़ा, एंबुलेंस बुला दिया। कहने का मतलब, सत्कर्म का मौका प्रकृति हर समय देती है, हर जगह देती है। इंडिया में ज्यादा देती है, क्योंकि यहां बेईमानी-दुष्कर्म ज्यादा है, तो इसलिए ज्यादा देती है कि भैया निकल ले। ईमानदारी और सत्कर्म अपना लीजिए जीवन में, ये मूल है — चाहे जहां भी रहें। गवर्नमेंट कैसी भी व्यवस्था कर दे, कितना भी सिस्टम बना दिया जाए, कितना भी मैप बना दिया जाए, लेकिन कोई जिंदा आदमी चाहिए पता बताने के लिए।

प्रश्न: गुरुदेव, यहां भारत में कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर जैसे इतने बड़े-बड़े महापुरुष पैदा हुए, फिर भी ऐसा लगता है कि सबसे ज्यादा बीमार लोग यहीं हैं — ऐसा क्यों? (P24-0062)

जहां ज्यादा बीमार होते हैं, वहीं ज्यादा डॉक्टरों की जरूरत पड़ती है। हम लोग ज्यादा ही बीमार हैं, इसलिए ज्यादा ही महापुरुष यहां उतार लेते हैं। महापुरुष के साथ-साथ में दुष्कर्मी भी तो होते हैं। पहले तो महापुरुषों को पत्थर उठा के मारते थे। अब ऑनलाइन गाली देते हैं, फिर कमेंट में आते हैं, लोगों को लिखते हैं — बताओ, ज्यादा बीमार है ना?

प्रश्न: गुरुदेव, ईमानदारी का मतलब झूठ भी नहीं बोलना है? बीवी से भी नहीं? थोड़ा-बहुत तो चलेगा? (P24-0063)

थोड़ा-बहुत नहीं — या तो आप ईमानदार हैं या तो बेईमान हैं, बस इतनी सी बात है। बोल दीजिए जैसा है वैसा, चाहे पद हो, लड़ाई हो, कोई चक्कर हो, और परिणाम के लिए तैयार रहिए। परिणाम में रोना मत फिर। जो होगा होगा — कहिए कि हमने तो बता दिया, ऐसा था तो था। कहना आसान है, लेकिन 24 घंटा बिल्कुल ईमानदार होना एक बहुत बड़ा टास्क है। यहां तक कि आप किसके साथ बात किए और दोनों के प्रति क्या भाव रखा — यहां भी ईमानदारी है। ऐसा तो नहीं कि आप किसी के प्रभाव में आ गए? हर वक्त सचेत रहना है कि एक आया, एक गया, तो दोनों से हम समानता में बात किए या एक का प्रभाव ज्यादा पड़ा, एक का कम। बहुत समझना है।

प्रश्न: गुरुदेव, अगर कोई पुलिस वाला पैसे ले रहा है और आम पब्लिक दे रही है, तो क्या लेने वाला और देने वाला दोनों बेईमान हुए? (P24-0064)

लेने वाला तो पक्का-पक्का बेईमान है। लेकिन देखना पड़ेगा कि देने वाला किस स्थिति में दे रहा है। मान लीजिए गाड़ी पकड़ी गई, गाड़ी के लिए दे रहा है पैसे — हो सकता है उसका हॉस्पिटल में कोई इंतजार कर रहा है, जल्दी के मारे अपना निपटा के जा रहा हो। वो गलत नहीं होगा, तो मन में गाली भी देता होगा। बात ये है कि देने वाले की स्थिति क्या है, वो देखना पड़ेगा; लेकिन लेने वाला तो पक्का बेईमान हो गया।

प्रश्न: गुरुजी, आपने ईमानदारी के लिए कठोर शब्द बोले कि वही व्यक्ति जिंदा है जो ईमानदार है, बाकी सब बेईमान मृत हैं — इससे उनको क्या फर्क पड़ेगा? (P24-0065)

जो बेईमानी करता है, वो मरा ही हुआ है ना — उसकी आत्मा मरी हुई है। मैं तो कह रहा हूँ अपने आप को निकाल लो। जिसको जैसा करना है वैसा करे, उसको फर्क क्या पड़ेगा — मुझे अपने आप को निकालना है, बस बात खत्म। मुझे इतनी बात समझ में आ गई कि इस जीवन में ईमानदारी-सत्कर्म करते हुए निकल लो; जितना आपसे हो सके कर दो और निकल लो। घुमा-फिरा के वही हाल है रोज — दिन भर खाओ, फिर धो, फिर खाओ — क्षणिक सुख के लिए। यहां मैंने देखा, समझा — कोई किसी को नहीं मानता, सब अपनी जरूरत को मानते हैं और कहते हैं कि हम तुम्हें बहुत मानते हैं। क्या सच में आप उससे गले मिल रहे हो, उससे बातें कर रहे हो, या उसके पीछे कुछ चाहिए? मैंने अपने आप को पूरी तरह जांचा और पाया कि यहां सब एक-दूसरे की जरूरत है। तो जरूरत पूरा करो और निकलो — धन सेवा, तन सेवा, ज्ञान सेवा, जो आपके पास है करके निकल लो। ऐसी दुनिया में जीने के दो ही ऑप्शन हैं — एक बेईमानी-दुष्कर्म के साथ, एक ईमानदारी-सत्कर्म के साथ। मेरे लिए ईमानदारी बेस्ट है, और इससे उसका मिलना भी पक्का। आज तक इतिहास में जो ईमानदारी-सत्कर्म में लगे रहे, वो पवित्र हुए और उन्हें वो मिला — चाहे हिंदू में जाओ, मुस्लिम में, सिख में, ईसाई में। सांस पर ध्यान से लोग रिलैक्स हो जाते हैं, लेकिन क्या हमेशा के लिए? दो दिन छोड़ दो, फिर वही आ गए। मूल पर काम करो और मूल तक पहुंचो।

प्रश्न: गुरुजी, आपने एक सत्संग में कहा कि इच्छा का त्याग करना चाहिए, तो क्या आत्मज्ञान की इच्छा का भी त्याग करें? (P24-0066)

आत्मज्ञान कोई इच्छा में नहीं आता। ये खुद का ज्ञान है, तो इच्छा में नहीं आता। अब जैसे मान लीजिए आप किसी दूसरे का हाथ पकड़ो, तो कोई ना कोई इच्छा होगी तभी आप पकड़ोगे — ये इच्छा में आएगा। लेकिन आप अपना ही हाथ पकड़ रहे हो, तो कोई इच्छा नहीं है। इच्छा तब होती है जब आप किसी और को जानते हो। अपने आप को छूना कोई इच्छा थोड़ी है।

प्रश्न: गुरुजी, कल आपने बोला था कि शराब पीना बंद कर दो, दुकान से लाना बंद कर दो। अभी दो दिन हो गए हैं — आगे के लिए सामर्थ्य दें कि इन चीजों से दूर रह पाऊं। (P24-0067)

अब दो दिन गिनो मत। छोड़ दिया तो छोड़ दिया। थूक दिया तो थूक दिया, चाटो मत। अब गिनो मत कि दो दिन, एक हफ्ता, दो महीना — छोड़ दिया तो छोड़ दिया, बात खत्म। अपना ही थूक है, मुंह में घुमाते रहो तो अच्छा लगेगा, लेकिन अब थूक दिया फिर वही चाटोगे तो कैसा लगेगा? इसलिए थूक दिया तो थूक दिया, बात खत्म करो। अब मत चाटना कभी, यह ध्यान रखना। अभी ताजा-ताजा है, दो ही दिन हुए हैं; एक हफ्ते बाद कोई कहे कि चलो वही चाटो, तो? इसलिए कर दिया तो कर दिया, बात खत्म।

प्रश्न: गुरुजी, क्या एकाकार और मोक्ष एक ही हुआ? (P24-0068)

नहीं। एकाकार तो आप इस शरीर में रहते हुए कर लोगे; मोक्ष जब लेन-देन खत्म हो जाएगा तब होगा। एकाकार का मतलब हुआ कि आपने उसे महसूस कर लिया — उस एनर्जी को, चाहे परमात्मा कहो, चाहे गॉड कहो, चाहे खुदा। मतलब आपने उसकी उतरती हुई ऊर्जा को आंखों से देखा अपने अंदर। लाइट नहीं बोल सकता — पूरी ऊर्जा उतर रही है। मैं शब्दों में बता नहीं सकता; बताऊं तो आप समझेंगे कैसे? उदाहरण क्या दूं? अनुभव भी नहीं बोल सकते — प्रत्यक्ष है, प्रत्यक्ष देख रहे हैं उतरते हुए।

प्रश्न: गुरुजी, ये हमें कैसे पता चलेगा कि लेन-देन क्लियर हो गया? और अगर मैंने आज से ईमानदारी-सत्कर्म चालू किया और एक महीने बाद मर गया, तो?

(P24-0069)

जब मोक्ष होगा तब पता चलेगा; तब तक करते रहना। पहली बात तो मोक्ष के पहले ही आपको आत्मज्ञान हो जाता है। आपने आज से ईमानदारी-सत्कर्म अपना लिया और मान लीजिए एक महीने बाद मर गए, तो उसी स्थिति में शरीर लगे — जब तक पूरा नहीं होगा। बाकी रहा तो अगले शरीर में उसी जगह से आपकी साधना होगी। जब तक मोक्ष नहीं मिलेगा, तब तक लेन-देन चालू ही रहेगा। आत्मज्ञान मोक्ष के पहले हो जाता है — जैसे रामकृष्ण परमहंस को आत्मज्ञान पहले हो गया, कैसर का भोग बाद में भोगे। ऐसा होता है। इसलिए कहा जाता है कि आत्मज्ञान भी करवा सकते हो, लेकिन मोक्ष नहीं।

प्रश्न: गुरुजी, आत्मज्ञान मतलब क्या? क्या सारी इच्छाओं का अंत ही आत्मज्ञान है — मतलब बीवी-बच्चे सब छोड़ दिए जाएं? (P24-0070)

आत्मज्ञान मतलब स्व के होने का ज्ञान, खुद के होने का ज्ञान। आप बाहर से — राग-द्वेष, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, मेरा, कर्ता के भाव से — छूट गए, स्व में आए, तो आपको आत्मदर्शन हुआ, अपने स्वयं के होने का बोध हुआ, प्रत्यक्ष हो गया। जब बाहर से आप पूरी तरह छूट जाओगे, हर चीज से कोई इच्छा नहीं, तब आत्मज्ञान होगा। बीवी को नहीं छोड़ना है, उम्मीद छोड़ देनी है। हो सकता है बीवी को छोड़ के हिमालय में चले जाओ — कुछ नहीं होगा, क्योंकि बीवी से जो चाहिए वो यहां फिट हो गया है, तो वहां सताएगा; जितना उसके साथ किया वो सब याद आएगा। चाहे जहां भी रहो, जिस-जिस तरीके से आपने उम्मीद बनाके रखी, वो छोड़ देनी है। लोगों को छोड़ने से कुछ नहीं होगा, उनसे उम्मीद छोड़ दो — कि उनसे ये फायदा होगा, ये नुकसान होगा। बस जरूरत में जियो, उम्मीद छोड़ दो। हमने अलग-अलग लोगों से अलग-अलग उम्मीदें बनाके रख दीं। उम्मीद छोड़ दोगे तो जरूरत में आ जाओगे। भाग-भाग के कुछ नहीं होगा। पहले तो उम्मीद छोड़ने का भाव बनाओ। जब मैंने भाव बनाया कि कुछ नहीं चाहिए, तो मुझे बीच में वो स्थिति हुई — कुछ नहीं चाहिए।

प्रश्न: गुरुजी, आज के समय में कोई बिजनेस में या जॉब में आगे बढ़ने की सोच रहा है, तो क्या वो आगे बढ़ना भी उम्मीद है? (P24-0071)

नहीं, उम्मीद अलग है। उम्मीद मतलब आपने हर तरीके से लोगों से उम्मीद बनाके रखी है। आगे बढ़ना है तो मेहनत करो, आगे बढ़ो। गड़बड़ ये है कि आप दूसरों से अलग-अलग तरीके से उम्मीद बनाके रखे हो।

प्रश्न: गुरुजी, इंसान इंसान की योनि में ही क्यों आया? और सब योनियों में तो कुछ है नहीं। (P24-0072)

छूटना भी इसी योनि से है। बात ये है कि गलती आपसे एक हो गई — आपने अपने आप को इंसान समझ लिया, और इसे आपने जानवर समझ लिया। ये सबसे बड़ी भूल है, जो इस पृथ्वी पर मानव कर बैठा। ये मानव शरीर आपको मिला है; ये उन्हें भी मिलने वाला है। आप मानव नहीं हो। और जब तक आप अपने आप को मानव समझेंगे, आप मुक्त भी नहीं हो पाएंगे, मोक्ष भी नहीं होगा। छूटने का मार्ग इसी शरीर में है — इस शरीर में मुक्ति और मोक्ष है, कर्ता का अधिकार है। उसे पशु ना समझिए और अपने को मानव मत समझिए। मानव योनि में भी निकृष्ट कर्म करके आप वापस उधर जा सकते हो। आप भोग-भोजन में पड़े रहेंगे, योग नहीं करेंगे, अपने आप को नहीं साधेंगे, निकलने का प्रयास नहीं करेंगे — तो आपको क्या चाहिए, भोग-भोजन? तो जाओ उस शरीर में, करो भोग-भोजन फ्री में; वहां कोई समाज नहीं, कोई रोकने वाला नहीं। ये शरीर आपको योग के लिए मिला था; उसका उपयोग नहीं किया, तो फिर भोग और भोजन के लिए उस शरीर में जाओ — खोज के खाओ। उसमें जो ताकतवर है वो पहले खाता है, कमजोर बचा हुआ खाता है।

प्रश्न: गुरुजी, आपने कहा कि गौतम बुद्ध को हठ योग से मिला — वो हठ योग क्या था? (P24-0073)

हठ योग मतलब करते-करते थक गए, सब छोड़ दिया उन्होंने। फिर बैठ गए और बोले कि उपलब्धि होगी तभी उठूंगा, नहीं तो नहीं उठूंगा — इसी को हठयोग बोलते हैं। जिद कर लिया कि हां तो हां, ना तो ना, बस बात खत्म — इतना बड़ा संकल्प चाहिए। ये संकल्प उनको एक दिन में नहीं आया; वो पहले कर-कर के थक गए थे, कई साल लगे उनको इस संकल्प तक पहुंचने में। उन्होंने सोचा, अगर उपलब्धि नहीं हुई तो मैं रह के क्या करूंगा? इससे अच्छा तो मैं खत्म हो जाऊं — खत्म तो होना ही है, 20 साल बाद या अभी, बस यही फर्क है, और 20 साल की भी कोई गारंटी नहीं। तो साधक करते-करते थक जाता है तो ऐसे भी कर लेता है — ये हठ योग। लेकिन पहले दिन नहीं अपनाया; कई सालों तक प्रयास करते-करते थक गए। मुझे भी 2011 से 2020 लग गए। तब खोज में मेहनत थी, अब देने में मेहनत है — अब आप लोगों के लिए करना पड़ रहा है। लेकिन लोग समझें तब ना। यहां आते ही कहते हैं मुझे कुछ नहीं चाहिए, परमात्मा के अलावा कुछ नहीं चाहिए; दूसरे दिन बोलते हैं जा रहा हूं, जरा कमी है पूरा करके आता हूं।

प्रश्न: गुरु जी, ईमानदारी, सत्कर्म और उम्मीद छोड़ना — ये तीन बातें हो गईं। इन तीनों में कौन बड़ा है, कौन छोटा? (P24-0074)

इसमें बड़ा-छोटा कोई नहीं है। ये एक-दूसरे से कनेक्ट हैं। ईमानदारी-सत्कर्म करते रहोगे ना, तो ये उम्मीद से छुड़ा देगा। ये फाइनल है। उम्मीद शुरुआत है, उम्मीद आखिरी है। उम्मीद में आप बाहर गए हो, उम्मीद छोड़ के अंदर आ जाओगे। अब ये कैसे छूटेगा? ईमानदारी, सत्कर्म और योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग करो। बस।

प्रश्न: गुरु जी, ये कैसे तय करें कि कोई अपनी योग्यता से ज्यादा पाने की कोशिश कर रहा है? (P24-0075)

सबको पता है, जानवर तक को पता है। बिल्ली चूहे पे वार करती है, कुत्ते पे नहीं; कुत्ता बिल्ली पे वार करता है, शेर पे नहीं। सबको अपनी योग्यता पता है। अभी मैं आपसे बोलूँ कि चलो एक करोड़ की गाड़ी लेते हैं, तो तुरंत आपको अपनी योग्यता, अपनी जेब का पता चल जाएगा। मैं बोलूँ इनसे लड़ो, तो आपको तुरंत पता है कि हार जाओगे या जीत जाओगे। जितनी योग्यता है उससे ज्यादा पाने के लिए भागने की जरूरत नहीं है। मिल गया तो भी आप पछताओगे, नहीं मिला तो भी पछताओगे। मिला तो संभाल नहीं पाओगे, क्षमता नहीं है; और नहीं मिला तो फिर द्वेष होगा कि मिला क्यों नहीं। इतिहास में देखिए, जब भी किसी को योग्यता से ज्यादा मिला है, उसने अपना पतन ही किया है। कितने लोगों को लॉटरी मिली, फिर वो गरीब हो गए। आप इतिहास उठाओ, अपने जीवन में देखो। और जो मेहनत करके गया है, वो वहीं खड़ा है आराम से। मैं खजुराहो गया था। मेरी आदत है रिकशा वाले को भी मैं अपने साथ भोजन कराता हूँ। मैंने सूप मंगाया, उसने एक चम्मच लिया, दूसरा लिया, बोला मुझे जम नहीं रहा, समोसा दिला दो। ₹40 का सूप नहीं जमा, ₹10 का समोसा जम गया। देखा जाए तो सूप फायदेमंद भी है, लेकिन उसका काम समोसे में हो गया। ये है अपनी-अपनी सामर्थ्य, अपनी-अपनी योग्यता। इसलिए मेरा कहना है कि योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग करो।

प्रश्न: गुरु जी, योग्यता जन्मजात होती है क्या? (P24-0076)

योग्यता आप अपने कर्म से बढ़ा-घटा सकते हो। और जन्म से मिल रही है तो आपने पिछला कर्म किया है ना, तभी तो। सबको बुद्धि का स्तर, धन का स्तर, समझ का स्तर, शरीर की ताकत अलग-अलग मिली है। किसी को बल कम मिला, किसी को ज्यादा — क्यों? कुछ तो किया होगा। हाइट, पर्सनालिटी, आत्मविश्वास — क्यों कम-ज्यादा मिल रहा है? कोई सुंदर, कोई कुरूप क्यों? कर्म से। धन की ताकत कर्म से, शरीर की ताकत कर्म से, समझ की ताकत कर्म से मिलती है। कितने लोग मंदबुद्धि होकर घूम रहे हैं, कोई पैदा होते ही बीमार है, लंगड़ा है, हाथ-पांव पटकता रहता है — उन्हें तो कर्म का सिद्धांत भी नहीं पता, अच्छा-बुरा भी नहीं पता। कुछ तो बात है। उनके लिए आप इतना सहयोग कर सकते हो कि उनके मां-बाप गरीब हैं तो उन्हें काम-धंधे पर लगा दो, जिससे वो उनकी सेवा सही से कर सकें। समझने की क्षमता देना किसी के बस में नहीं है; समझाने के बाद भी इंसान नहीं समझता। हां, योग्यता बढ़ाई जा सकती है — मेहनत से। कोई बंदा पढ़ के पीएचडी भी तो बन सकता है। ये बालक अभी कमजोर है, लेकिन दो साल इसे काजू-बादाम खिलाओ और बढ़िया ट्रेनिंग कराओ, तो कहेगा अब मैं पटक सकता हूं। फिर ये भी देखना पड़ेगा कि ट्रेनिंग देने वाले की योग्यता क्या है।

प्रश्न: गुरु जी, नशा — पूरी दुनिया में लोग इसके पीछे भाग रहे हैं, चाहे ड्रग्स हो, अल्कोहल हो, तंबाकू हो। लोग इसके पीछे क्यों पड़े रहते हैं? यूरोप में तो लोगों को जिंदगी बेकार लगती है। (P24-0077)

देखिए, जीवन जीने का कोई आधार चाहिए, कोई बेस चाहिए। आदमी खा के, भोग भोग करके थक गया। थक गया तो करे क्या? जीवन में अध्यात्म नहीं है, तो फिर करे क्या? भोग से भी थक गया, भोजन से भी थक गया, नाम-शोहरत-पैसे से भी थक गया, तो नशे में लीन हो जाता है, नशे के सहारे जीने लगता है। उधर ईमानदारी है, पक्कापन है, लेकिन अध्यात्म नहीं है, इसलिए इस तरफ जा रहे हैं। घुटन तो है जिंदगी में, अशांति तो है। चाहे जितनी अच्छी लाइफ जियो, अशांति रहती है।

प्रश्न: गुरु जी, ईमानदारी का मतलब क्या है? ये कैसे पता चले कि ईमानदारी है या ऊपर-ऊपर से ईमानदारी का नाटक चल रहा है? क्योंकि हर आदमी खुद को सच्चा और ईमानदार ही मानता है। (P24-0078)

जब आपके द्वारा कर्म हो रहा है, तो बस इतना देख लीजिए कि उसमें छल, कपट, चोरी, बेईमानी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड ना हो। बस खत्म बात, तब आप ईमानदार हैं। ये तो खुद ही देखना पड़ेगा, दूसरा कोई है ही नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, सिगरेट पीना सही है क्या? पीकर अच्छा लगता है। (P24-0079)

ये आपको भी पता है — डिब्बी में भी लिखा है। हम किसी को रोकते नहीं। जैसे ये बालक अभी फेंक रहा था, मैं बोला अभी भी सोच लो, अभी भी मौका है, अभी भी बिन सकते हो; लेकिन छोड़ो तो पक्का करो। इतना है कि ये गलत है, ये आपको भी पता है। अब बताइए, जिस उम्र में कुछ करना चाहिए, उस उम्र में चिलम पी के मस्त है। भांग, चिलम — इन दो चीजों का सेवन करने वाला फिर लाइफ में कुछ कर नहीं पाता, बर्बाद हो जाता है। और भांग खाने वाले तो एकदम गए, क्योंकि भांग का नशा 24 घंटे रहता है; एक डोज का नशा नहीं उतरता, दूसरा डोज ले लेता है। नशा हर तरीके से जीवन का नाश करता है — ये खाने-पीने वाले को भी पता है।

प्रश्न: गुरु जी, कृष्ण जी ने द्रोणाचार्य को मारने के लिए युधिष्ठिर से जो बुलवाया 'अश्वत्थामा मारा गया' — वो ईमानदारी हुई या बेईमानी? (P24-0080)

कृष्ण भगवान सलाहकार थे, और युधिष्ठिर के अंदर झूठ था, वो निकला। सलाहकार युद्ध जिताने के लिए सलाह देता है; सलाहकार का काम है कि आप कैसे युद्ध जीत लो। और अधर्म की शुरुआत कौरवों ने पहले कर दी थी, अभिमन्यु को घेर के मारकर। घुमा-फिरा के अधर्म को मारने के लिए अधर्म का सहारा लेना पड़ता है। तो वहां युधिष्ठिर के अंदर झूठ था, और कृष्ण भगवान तो सलाहकार थे — सलाहकार ना झूठा होता है ना सच्चा, उसका काम है युद्ध जिताना। वही अर्जुन — जब उन्हें बोला युद्ध करो, बोले नहीं करूंगा, मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं जा रहा हूं। अर्जुन ने बात क्यों नहीं मानी? अर्जुन के अंदर कुछ नहीं था, पक्का था। और युधिष्ठिर को राजगद्दी चाहिए थी, राजा बनना था — इनके अंदर झूठ था, तो निकला। सत्यवादी के मुंह से थोड़ी ना निकलेगा।

प्रश्न: बाबा जी, बीता हुआ पुराना हम सुधार नहीं सकते, और आगे का निश्चित नहीं है — तो क्या इसी क्षण में जीना है? (P24-0081)

बस ईमानदारी-सत्कर्म अपना लो। जीना या ना जीना आपके बस में नहीं है, लेकिन कैसे जीना है ये आपके बस में है। क्या मिलेगा, क्या नहीं मिलेगा, ये आपके बस में नहीं है; लेकिन जो मिला उसका किस तरीके से उपयोग करो, वो आपके बस में है। इसलिए समझ के, जी के निकल जाओ। जीना आपके बस में नहीं है, कैसे जीना है ये आपके बस में है — ये ध्यान रखना।

प्रश्न: गुरु जी, पैसे हैं नहीं — सेवा कैसे करें और आत्मज्ञान कैसे प्राप्त करें? (P24-0082)

पैसे से सेवा नहीं होती है। सेवा जरूरतमंद की होती है। जैसे मान लीजिए आप भोजन तो रोज करते ही हैं — चाहे जैसे भी मिले, एक टाइम या दो टाइम। तो एक दिन का उपवास रखो, और एक वक्त का भोजन किसी को खिला दो। ये भी सत्कर्म है। आपके पास दो-तीन कपड़े हों, तो दो से काम चलाओ और एक किसी जरूरतमंद को दे दो। बहुत आसानी से सत्कर्म कर सकते हो।

प्रश्न: गुरु जी, पितृ ऋण, देव ऋण, ऋषि ऋण क्या है? और गुरु दक्षिणा क्या होती है? (P24-0083)

ऋण होता ही नहीं है — ना पितृ ऋण होता है, ना ऋषि ऋण, ना देव ऋण। होता ही नहीं; जबरदस्ती बना देते हैं। गुरु दक्षिणा एक होती है: गुरु अगर सिखा रहा है तो उसका भाव होता है कि तुम गुरु जैसे बनो। बन गए, वही गुरु दक्षिणा है। गुरु जिसके लिए ज्ञान दे रहा है, वो कर लिया, तो वही गुरु दक्षिणा है। वो नहीं कर पाए, तो कुछ भी दे दो, कोई मतलब नहीं है। स्कूल की शिक्षा आप किसके लिए लेते हो? रोजगार के लिए। यहां रोजगार नहीं, यहां आत्मिक कल्याण है। वो शिक्षा 'कुछ चाहिए' के लिए ले रहे हो; ये शिक्षा 'कुछ नहीं चाहिए' के लिए ले रहे हो।

प्रश्न: गुरु जी, क्या आध्यात्म में चलने वाले कमजोर होते हैं? अगर नहीं, तो वो सांसारिक जीवन में पीछे क्यों रह जाते हैं — जैसे अंबेडकर, आइंस्टाइन, मैडम क्यूरी आदि संपन्न होते हैं? (P24-0084)

वो जरूरत में जीते हैं। उन्हें पता है आखिरी क्या है। पता तो तुम्हें भी है, लेकिन तुम भोग की तरफ ज्यादा हो, इसलिए तुम ज्यादा कपड़े, ज्यादा वस्तुएं, ज्यादा सामान संग्रह करके रखते हो — क्योंकि तुम्हें अपने भविष्य का डर है। डरा हुआ आदमी हमेशा संग्रह करके रखता है, ये ध्यान देना। जितना डरा हुआ आदमी होगा, उतने उसके बैग में सामान मिलेंगे — दवा तक मिलेगी; बीमारी के पहले वो दवा रखे है, सर दर्द के पहले गोली रखे है। आध्यात्मिक व्यक्ति को पता चल जाता है कितनी जरूरत है — इससे ज्यादा ले के क्या करेंगे? जब जरूरत होगी तो देखेंगे। ऐसा नहीं कि वो कर नहीं सकते। लोग बोझा ढोते हैं और अपने को संपन्न समझते हैं; वो बोझा ढो रहे हैं। संपन्न तो वो है जो जरूरत में जी रहा है — ना उसे कोई डर है, ना भय।

प्रश्न: गुरु जी, जब ज्ञान होता है तो कैसे पता चलता है कि ज्ञान हो गया? (P24-0085)

अंदर प्रश्न हट जाते हैं, उत्तर हो जाते हैं। ज्ञान के पहले ही पता चल जाता है कि ज्ञान होने वाला है। जैसे किसी स्त्री को मां बनना हो, तो उसके पहले ही पीड़ा से उसे पता चलने लगता है कि अब कुछ हो रहा है; वैसे ही साधक को ज्ञान के पहले ही पता चल जाता है कि ज्ञान होने वाला है। मैं अपना अनुभव खुद बता रहा हूँ — मुझे कई महीने पहले पता चल गया था कि मैं ज्ञान के बहुत करीब में हूँ, बस अब मेरा समय आने वाला है। उसमें फीलिंग क्या बोल सकते हैं? बस इतना कि अब मैं बहुत करीब में हूँ।

प्रश्न: गुरु जी, आपको दूसरों का भी पता चल जाता होगा कि किसको ज्ञान उपलब्ध होना है? (P24-0086)

बातचीत से इतना समझ में आता है कि आदमी सच में निकलने के लिए बात कर रहा है, या बस ऐसे ही बात कर रहा है, या समझ के प्लानिंग कर रहा है। लाइव में लोग पूछते हैं तो उनके प्रश्न से पता चल जाता है कि वो किस स्थिति में प्रश्न कर रहे हैं — व्यक्ति निकलना चाहता है, या बस बातें कर रहा है, या समझना चाहता है।

प्रश्न: गुरु जी, जो आदमी सच में निकलना चाहता है, उसकी आप कितनी मदद करते हैं? और क्या गुरु के बगैर भी कोई निकल सकता है? (P24-0087)

पूरी तरह, हर तरीके से। गुरु के बगैर नहीं — गुरु चाहिए ही चाहिए। फंस गया है तो चाहिए। हर हाल में चाहिए ही चाहिए। गुरु शब्द है। शब्दों को काटने के लिए शब्द ही चाहिए। अगर आप इस किनारे से उस किनारे जाना चाहते हो, तो इसी पानी का सहारा लेकर जा सकते हो, और कोई रास्ता नहीं है। वैसे ही इस संसार में गुरु ही आपको मुक्ति से मोक्ष तक का रास्ता दिखा सकता है, और कोई नहीं। गुरु शब्द है, शरीर नहीं। शब्दों को लेकर आगे बढ़ जाओ।

प्रश्न: गुरु जी, अगर कोई शिष्य भटकना चाहे, तो क्या गुरु उसे रोक सकता है कि तू भटक रहा है, सीधे रास्ते पर चल? (P24-0088)

जैसे ये लड़का आज आया, बोला मैंने पीना छोड़ दिया; कल ये फिर पीना चालू कर दे तो इसकी जिंदगी है। हम कुछ नहीं बोलेंगे। गुरु बहुत कुछ कर सकता है, लेकिन कुछ नहीं करेगा, क्योंकि तुम्हारी मर्जी है। हां, अगर वो कहीं से विवश हो रहा है, तो उसे जरूर आंतरिक ऊर्जा मिलेगी, उसे पता भी चल जाएगा। यहां से बाहर चला गया तो भी, अगर शब्दों को याद रखेगा, जीवन में उतारेगा, तो उन शब्दों से बल मिलेगा; और खुद नहीं करेगा तो नहीं होगा। गुरु का बल किसी दायरे का बल नहीं है, अनंत से उसका बल है।

प्रश्न: योगी जी, अगर साधना से आदमी के अंदर सामर्थ्य भी आ रहा है, बल भी आ गया, और उसकी दबी हुई इच्छाएं भी उजागर हो रही हैं — तो अगर वो साधना भी करता रहे और अपनी इच्छाओं की पूर्ति भी करता रहे, तो इससे क्या होगा?

(P24-0089)

उसका स्तर उठेगा। बस उस इच्छा को पूरी करने में बेईमानी ना करे, धोखा ना करे, किसी को तकलीफ ना दे। तो ये इधर बढ़ेगा, और इधर से भी वो धीरे-धीरे छूटेगा। इच्छाओं की पूर्ति होगी तभी तो छूटेगा, ऐसे नहीं छूटेगा। तो एक तरफ इच्छाओं की पूर्ति भी होगी — बस वो साधना ना छोड़े, जिसकी वजह से ये सामर्थ्य आ रहा है, बल आ रहा है। ऐसा ना हो कि इच्छा पूरी करने में इसको छोड़ ही दे, तब वो गिर जाएगा। क्योंकि धीरे-धीरे उसकी ताकत खत्म हो जाएगी, और जैसे ही ताकत खत्म हो जाएगी, सब छीन लिया जाएगा। देखो ना, जैसे व्यक्ति पद पे बैठता है, पावर पे बैठता है, तो सारा सिस्टम उसका काम करता है; लेकिन जैसे ही पद गया, बस सब छूट गया। आज जो मकान-फ्लैट दे रखा है, उसका भी नोटिस आ जाएगा कि खाली करो। तो जिसके माध्यम से आपको मिला, वो ना छूटे; वो छूटा तो सब गया। और गलती ज्यादा यही होती है कि हम इच्छा पूर्ति में ही मशगूल हो जाते हैं, उसी में मस्त हो जाते हैं — वो जड़, जहां पानी देना था, वही भूल जाते हैं कि मेन स्रोत कहां था।

प्रश्न: योगी जी, मुझे कैसे पता चले — मैंने तो जाने-अनजाने पता नहीं क्या-क्या इच्छाएं बना रखी होंगी, बना-बना के भूल गई कि कितनी इच्छाएं बन गई। और अगर अब माहौल चेंज हो गया, अब वो चीज नहीं चाहिए, तो फिर क्या करें?

(P24-0090)

छोड़ दे ना, समझ गए। अगर नहीं चाहिए तो छूट गया ना। जरूरी नहीं कि भोग के छूटे, समझ के भी छूट जाता है। जिन बच्चों को खिलौना नहीं मिलता, बड़े होने पे वो भी तो छोड़ देते हैं, और जिनको मिलता है उनसे भी छूट जाता है — जिसकी समझ विकसित हुई। बचपने में अगर मुझे नहीं मिला और किसी और को मिला, तो उस समय दुख होता है। लेकिन जैसे ही समझ विकसित होती है, मैं देखता हूं कि मां-बाप किन परिस्थितियों में थे, तो पछतावा होता है कि दुख की कोई बात ही नहीं थी, फिर भी उन्होंने मेरे लिए इतना किया — तो छूट जाता है। तो वैसे ही कुछ इच्छाएं पूरा करने के बाद छूटती हैं, कुछ इच्छाएं समझ के ही छूट जाती हैं। आदमी यहां ये भी कर सकता है कि मेरे तप से जो सामर्थ्य मेरे अंदर आ गया, मैं उसको संग्रह करूंगा, फालतू चीजों में खर्च नहीं करूंगा, देखूंगा ये सामर्थ्य मुझे लास्ट तक कहां पहुंचाएगा। अगर आप इसे इच्छाओं में नहीं लगाओगे, तो ये साधना आपको उस परम स्थिति पे पहुंचा देगी। क्योंकि जैसे-जैसे साधना करोगे, वैसे-वैसे सामर्थ्य बढ़ता जाएगा। अपनी ताकत को सत्कर्म में लगा दो, जरूरतमंद की सेवा में लगा दो, तो कई गुना वापस आ जाएगा।

**प्रश्न: योगी जी, तो फिर जो सामर्थ्य वापस आए, क्या मैं उसको भी उसी में —
सत्कर्म और सेवा में — लगाती रहूँ? (P24-0091)**

जब तक उस परम स्थिति को ना उपलब्ध हो जाओ, तब तक लगाते रहो — वो बढ़ता जाएगा। बात ये है कि खर्च कहां कर रहे हो। अगर मैंने किसी भी पॉइंट पे इसे खर्च करना शुरू किया, तो मेरा गिरना चालू हो गया; फिर उसका नाश हो रहा है, खत्म हो रहा है — उधर से बंद हो गया और इधर मैंने इन चीजों में खर्च कर दिया, तो बस गिरते गए। जैसे-जैसे साधना करोगे, वैसे-वैसे ताकत बढ़ती जाएगी — देखना ये है कि बल का उपयोग कहां कर रहे हो, साधना का उपयोग कहां कर रहे हो। आपने दिन भर में एक रुपया कमाया, तो दुकान पर कुछ भी ले लो जाके — अब देखना ये है कि ले क्या रहे हो। क्या वो आपके शरीर को पोषण देगा, जिससे आप और काम कर पाओगे? या आप ऐसी नशीली वस्तुओं का उपयोग कर रहे हो कि दूसरे दिन काम ही नहीं कर पाओगे? दारू-भांग पी के पड़ जाएगा तो सुबह उठा ही नहीं जाएगा, अगले दिन भी नहीं कमा पाएगा — गिर ही गया ना। तो देखना है कि जो ऊर्जा मिली, उस ऊर्जा को खर्च कहां कर रहे हो — अपने आप को उठाने में, कि अपने आप को गिराने में। उस ऊर्जा के मालिक आप हो, आप चाहे जहां खर्च करो। इसी को हमें समझना है कि मैं अपनी ऊर्जा का खर्च कहां कर रहा हूँ।

प्रश्न: गुरुदेव, किसी भी तरह ये संसार छूट जाए — मुझे नहीं चाहिए संसार, पर मुझे खींचता है। पता नहीं हम ही नहीं छोड़ पा रहे या वो हमें नहीं छोड़ रहा? कैसे छूटूं, यह उपाय दे दीजिए। (P24-0092)

नहीं, तू ही नहीं छोड़ पा रही है। कोई बंधन तो है नहीं — तू देखो, आना चाही तो आ गई ना। तो कोई बंधन नहीं है। देख, मैं जहां हूं, क्या वहां मेरी जिम्मेदारी, कर्तव्य बाकी है — हां या ना? बस इतना मुझे देखना है। अगर हां, तो ठीक है, उसको निभाते हुए आते रहो। और अगर पूरा हो गया, अब मेरी जिम्मेदारी नहीं रही, अब मैं सिर्फ मोह के वशीभूत होकर वहां हूं — तो मेरा कहना है छोड़ दें कि भैया हम जा रहे हैं, आपको कभी मिलना हो तो आ जाना, आप स्वतंत्र हो; हम अपने कल्याण के लिए निकल रहे हैं, क्योंकि अब मेरा यहां काम नहीं है। अगर काम नहीं है तो मैं क्यों रुकी हूं? तुझे यह देखना है कि जिस परिवार में मैं हूं, वहां मेरा काम बाकी है या नहीं। अगर काम है तब तो रुक, और अगर काम नहीं है तो फिर रहने का क्या मतलब — तब मोह के वशीभूत होकर रह रही है। आखिर मैं कहीं हूं तो क्यों हूं — यह देखना है। और फिर अपने आत्मिक कल्याण में लगना पड़ेगा। तेरा निकलने का शुद्ध भाव है, तो उसके लिए काम भी तो करना पड़ेगा; अगर हम काम नहीं करेंगे तो होगा नहीं, चाहे कितना भी शुद्ध भाव हो। आज अगर हमारा भाव ही होता कि यमुना तट पर कुटिया बनाएं और हम काम नहीं करते, तो आज ना हम यहां होते ना आप। तो भाव के बाद काम भी है, कर्म भी है, तभी तो परिणाम आएगा — सिर्फ भाव से परिणाम नहीं आता, काम से परिणाम आता है। तो मुझे यह देखना है कि मैं उसके लिए काम कर रहा हूं, हां या ना।

प्रश्न: गुरुदेव, मैंने ऐसा सुना है और ऐसा सोचती भी हूँ कि जब समय आता है तो हर चीज अपने आप छूट जाती है। मैं तो इसी में हूँ कि समय आएगा तो सब अपने आप छूट जाएगा — क्या यह गलत है? (P24-0093)

ये सब किस पे लागू होता है? मनुष्य के अलावा जितने हैं, उन पर। जैसे फल का समय आया, फल गिर गया — उसमें कर्ता भाव थोड़ी ना है। समय आए तो डाल टूट जाएगी, पेड़ गिर जाएगा, फल गिर जाएगा, नहीं तो तूफान-आंधी गिरा देगी। मानव को भी बीमारी आती है तो शरीर गिर जाता है, लेकिन हम उसे बचाने का प्रयास तो करते हैं ना। पेड़ थोड़ी ना प्रयास कर रहा है, कहीं जा पा रहा है — फल सड़ रहा है तो वहीं सड़ के गिर जा रहा है, कीड़े खा जा रहे हैं। हम तो अनेक-अनेक उपाय करते हैं अपने आप को बचाने के। समय आएगा, छूट जाएगा — समय किसका आएगा? मृत्यु का। क्या छूट जाएगा? प्राण छूट जाएंगे — ये शरीर की अवधि है। बाकी उद्धार के लिए आपको मेहनत करनी पड़ेगी। जैसे आपने टिकट लिया, तो चाहे सीट पर बैठे रहो, चाहे खड़े रहो, चाहे घूमो — जब आपका स्टेशन आएगा तो उतरना पड़ेगा; लेकिन एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक आप क्या करते हो, वो आपके ऊपर है। तो वैसे ही मृत्यु के पहले आप क्या करते हो, आपके ऊपर है — आप अपने उद्धार के लिए काम करते हो कि नहीं करते हो। बिना प्रयास के मुक्ति संभव नहीं है। उद्धार के लिए हमको ही आगे बढ़ना है, कठोर मेहनत करनी पड़ेगी — ऐसे नहीं होने वाला। ऐसे तो कभी भी हम मोह से नहीं छूटेंगे; आसक्ति छूटेगी नहीं, बढ़ती जाएगी। अगर अपने आप होता, तो इतने संत-महापुरुष इतनी तपस्या क्यों करते, किस-किस स्थिति में उन्होंने प्रयास किया और मुक्ति-मोक्ष का मार्ग बताया? ऐसे होता तो बोल देते कि अपने आप हो जाएगा, इंतजार करो। नहीं — अथाह प्रयास, पूरी तरह सौ में एक सौ एक प्रतिशत प्रयास करना पड़ेगा अपने आत्मिक कल्याण के लिए, तभी संभव है।

प्रश्न: गुरुदेव, पूरी कोशिश तो करनी पड़ेगी — पर आप भी थोड़ी कृपा कर दीजिए।

(P24-0094)

मैं तो पूरी तरह कर रहा हूँ। मुझे पता है ना कि मैं क्या कर रहा हूँ। मुझे तो लगता है, जितना मैं कर रहा हूँ, अगर तू उतना कर ले तो निकल जा। जितनी मेहनत मैं आप लोगों के लिए करता हूँ, जितना शुद्ध मेरा भाव है, उसके बाद काम भी है — सिर्फ भाव ही नहीं है कि तू निकल जा। अगर तू कर दे तो निकलना पक्का हो जाए। तुम्हारी तरफ से बस मेहनत चाहिए। मैंने हर तरीके से काम कर दिया है, चाहे वो बाहरी तौर से हो, चाहे मानसिक तौर से — मैंने कहीं से भी कोई कसर नहीं छोड़ी। अब तुम्हारे ऊपर है।

प्रश्न: गुरुदेव, यहां इतनी एनर्जी, इतनी पॉजिटिविटी, इतना पावर कैसे है? और हमारे घर वालों को क्यों नहीं लग रहा कि यहां कुछ है, जो मैं महसूस कर सकती हूँ?

(P24-0095)

काम तो करना पड़ेगा ना — सिर्फ ऐसे आश्रम बना देने से कुछ थोड़ी ना होगा। और वो कहीं और लगे हैं ना; जहां व्यक्ति लगा है, वहीं का पावर उसे दिखेगा। श्रद्धा तब होगी जब आपको वह चाहिए; जब चाहिए ही नहीं, तो श्रद्धा क्या? आपकी आत्मा को अभी यह चाहिए, इसलिए आपको फील हो पा रहा है — डिमांड है। उनकी डिमांड अगर भोग-विलास है, पैसा, धन-दौलत, रुपया, प्रॉपर्टी है, तो वो ऊर्जा उसमें महसूस करते हैं। जैसे कोई एक घर में गया तो बहुत अच्छी फीलिंग हुई, झोपड़ी में गया तो बड़ा बुरा लगा; एक मोबाइल लिया तो बड़ा अच्छा लगा, उससे नीचे वाला लिया तो बुरा लगा। वो यात्रा करना भी नहीं चाहते ना, वो अपनी यात्रा में हैं। यहां हर जीव अपनी-अपनी यात्रा कर रहा है, हर जीव कहीं ना कहीं लगा हुआ है। हर वक्त, हर क्षण पूरी सृष्टि परिवर्तनशील है; यहां पर हर व्यक्ति की कहीं ना कहीं यात्रा हो रही है, कोई रुका नहीं है। अब वो कहां यात्रा कर रहा है, उसे पता है। तो बस निकलने के लिए तुझे काम करना पड़ेगा — बातों से बात नहीं बनने वाली, यह समझ ले। निकलने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी, अपार संघर्ष करना पड़ेगा।

प्रश्न: गुरुदेव, यहां रहती हूं तो मैं सब भूल जाती हूं; महीनों की उपासना, 45-45 दिन के कोर्स करती हूं, तब भी घर की याद नहीं आती। पर जब जाना होता है तो एक-दो दिन पहले फिर याद करती हूं — ये क्यों होता है? समझ में नहीं आता मैं वापस क्यों जा रही हूं। (P24-0096)

जब तू यहां रहेगी तो वहां धीरे-धीरे छूटेगा। जब तू यहां रहेगी तब पता चलेगा किसके प्रति आसक्ति है, किससे अटैचमेंट है, कहां लगाव है, कहां राग है, कहां द्वेष है। जब किसी से दूर होगी तब पता चलेगा उसके प्रति मोह कितना है। तो अपने आप को देखना है — मैं अगर अपने आत्मिक उद्धार के लिए आई, और जैसा मैं चाहती थी सब मिल गया, तो फिर मैं जा क्यों रही हूं? क्या जहां मैं हूं, वहां व्यवस्था नहीं है? और जाने का प्लान घर से ही बन जाता है कि बस सात दिन रह के आएंगी; ये नहीं छोड़ा कि ज्यादा अच्छा लगेगा तो ज्यादा रह के आऊंगी। तो मैं यही कह रहा हूं — जिम्मेदारी-दायित्व अगर हो गया हो, तो तू कल्याण में पूरी तरह लग जा। तेरी रुचि यहां है, कहीं ना कहीं जिज्ञासा है, इच्छा है कि मैं मुक्त हो जाऊं; लेकिन मुक्ति के लिए अथाह प्रयास करना पड़ेगा — अथाह का मतलब जिसका आदि-अंत नहीं; कल्पना से परे इतना संघर्ष, मेहनत करेगी तब जाके निकाल पाएंगी अपने आप को। अब तुम्हें भटकना नहीं है, क्योंकि तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर तुम्हें मिल गए। मैं अगर भटका, तो उत्तर के लिए भटका। आपको तो हर प्रश्न के उत्तर मिल गए, तो फिर आपको बस एकांत चाहिए, शुद्ध भोजन चाहिए, वह जगह चाहिए जहां दबाव-संकोच ना हो — वो आपको मिल गया। अब बस लग जा पूरी तरह — एकांतवास में, आत्मिक चिंतन में — कि मैं कहां उलझी हूं, कहां फंसी हूं, मुझे उपलब्धि क्यों नहीं हो रही। नहीं हो रही, तो इसका मतलब मैं कहीं ना कहीं फंसी हूं, सीधी सी बात है। जैसे मशीन नहीं चल रही तो इसका मतलब कुछ बिगड़ा है; मैकेनिक भी तुरंत नहीं खोज पाता, एक-एक तार चेक करता है, बहुत समय के बाद पाता है — जब तक देख ही नहीं पाएगा तो बनाएगा कैसे? तो पहले खोज ले कि मैं फंसी कहां हूं। तुम अगर नहीं निकाल पाई, तो गुरु मदद करेगा, गुरु की ऊर्जा तुझे खींचने में काम करेगी — लेकिन प्रयास पहले तेरा होगा, फिर वो तेरा सहयोग करेगा और निकाल ही देगा, क्योंकि गुरु में अथाह बल है। लेकिन गुरु पहले देखता है कि तू क्या चाहती है — अगर तुम नहीं निकलना चाहोगे, तो गुरु चाह के भी कुछ नहीं कर सकता, सिर्फ देख सकता है। तुम जब तैयार हो जाते हो, तब गुरु सहयोग करेगा और निकाल देगा।

प्रश्न: गुरु जी, एक भोग की इच्छा बाकी है और एक जिम्मेदारी है, उसके अलावा संसार नहीं चाहिए। तो क्या भोग और भोग से मुक्ति — ये दोनों यात्राएं एक साथ चल सकती हैं? कृपया मार्गदर्शन कीजिए। (P24-0097)

एक साथ चल सकती हैं, अगर आप ईमानदारी से करते हो — ईमानदारी, सत्कर्म के साथ। लेकिन कभी ना कभी, जब आपकी जिम्मेदारी-कर्तव्य पूरा हो जाए, आपको पूरी तरह लगना ही पड़ेगा। एक समय ऐसा आएगा, क्योंकि वो अवधूत की स्थिति ऐसे नहीं आने वाली; जब पूरी तरह लगोगे, तभी तो अवधूत की स्थिति आएगी।

प्रश्न: गुरु जी, ऐसा बनना है कि स्त्री के प्रति आकर्षण ना हो, क्योंकि जीवन में उस कारण बंधन महसूस होता है। इसके लिए क्या करूं? मुझे एक रास्ता मिला है कि जो भाव आ रहा है उसे आने दो, रोकूंगा तो वो जाएंगे नहीं — क्या यह सही तरीका है?

(P24-0098)

देखो कि आकर्षण क्यों है — आकर्षण के पीछे इच्छा किसकी है? और हां, एकदम सही। बस यह है कि उस भाव के ऊपर कभी काम मत करना। आ रहा है तो आने दो।

प्रश्न: गुरुदेव, क्या सभी आत्म खोजी गरीब ही रहते हैं? (P24-0099)

नहीं, ऐसा नहीं है। आत्म खोजी गरीब होता ही नहीं। गरीब आप किसे समझते हो? गरीब तो वह भी है जो अरबपति है, खरबपति है और उसे और भी चाहिए, लोगों से बेईमानी कर रहा है — तो वह गरीब है। गरीब बेईमान है, वह गरीब है; ईमानदार सत्कर्मी है, वह अमीर है — बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, सेवा करके हमें मुक्त होना है, या मुक्त होकर सेवा करनी है?

(P24-0100)

सेवा करके मुझे मुक्त होना है, और मुक्त होने के बाद भी सेवा ही करनी है।

प्रश्न: गुरु जी, हम अच्छा काम तो कर रहे हैं, लेकिन जो मेरी कमी है वह नहीं जा रही है — ऐसा क्यों? (P24-0101)

अच्छा काम करना और अपनी कमी को ठीक करना — ये अलग-अलग काम हैं। अच्छे काम के द्वारा ऊर्जा मिलती है; और आप में जो कमियां हैं, उन्हें दूर करने के लिए उन्हें छोड़ो। कमी छोड़ो और अच्छा काम करो — ये दोनों अलग-अलग हैं।

प्रश्न: योगी जी, मैं हैरान हूं — एक 25 साल का लड़का है, मैकेनिकल इंजीनियरिंग का कोर्स कर रहा है, फिर भी छोटे-मोटे काम में भी उसमें ये जिज्ञासा नहीं है कि ये कैसे होता है, वो कैसे होता है। बच्चे तो अपने खिलौने भी खोल के बैठ जाते हैं — तो वो सीखना क्यों नहीं चाहता? (P24-0102)

ना करना भी तो एक टैलेंट है — कि मैं 25 साल में भी देखो, मेरा बचपना का बचपना रहा, मैं बचपने से आगे नहीं गया। अभी भी मैं उतना ही करता हूं जितना आप कहते हो। उसे आज्ञाकारी भी नहीं बोल सकते, क्योंकि जब आता ही नहीं तो आज्ञाकारी क्या बोलें? उसमें कुछ करने का, कुछ सीखने का भाव पैदा नहीं हुआ। वो भाव तब पैदा होता जब उसके साथ, आसपास वाले उस दौड़ में होते। सबकी अपनी-अपनी एक दोस्ती-यारी होती है — अब उस सर्कल में कैसे लोग हैं, व्यक्ति वैसा ही बनता चला जाता है। सबकी एक झुंड होती है, और सबके झुंड में घुमा-फिरा के वैसे के तैसे ही लोग रहते हैं। तो सीखने का भाव नहीं जगा, कुछ करने का भाव नहीं जगा — बस जीना है, खत्म हो जाना है।

प्रश्न: योगी जी, 25 साल में तो मैंने गुड़गांव में अपना घर बना दिया था। हमारे नौजवान ऐसे होने चाहिए — शरीर से स्वस्थ लगते हैं, लेकिन अपना दिमाग नहीं खोलते, समझते भी नहीं। तो दुख होता है, क्या करें? क्या फिर इनको समझाना ही छोड़ दें? (P24-0103)

ऐसा है, आपने घर इसलिए बना लिया कि जो आपके पास घर था, वो आपके जैसा घर नहीं था — या आपकी जरूरत थी, या आपकी इच्छा थी। आपकी जरूरतों ने आपके लिए घर बनवाया। उसे तो घर बना-बनाया मिल गया; जैसा वो चाहता है वैसा घर है, जैसा चाहता है वैसा बाप है, वैसी मां है — तो उसे घर बनाने की क्या जरूरत है? अगर कोई समझना नहीं चाहता — आप देख लो क्या वो समझना चाहता है, कि जहां है उसी में जीना चाहता है — अगर जहां है उसी में जीना चाहता है, तो उसे छोड़ दो, क्योंकि समझाने में आपकी ऊर्जा भी खत्म होगी और वो समझेगा भी नहीं। फिर जितना उसका लेवल है, उतने लेवल का उससे काम ले लो। अगर वो सेवा करना चाहता है तो उतने लेवल पे ही लो। और अगर उसकी आगे बढ़ने की प्रवृत्ति है, बढ़ने की इच्छा है, तो फिर उसको आगे बढ़ाने का आप भी प्रयास करो — लेकिन देखो, उसका प्रयास है क्या। अगर वो बार-बार ऐसे ही कर रहा है, तो इसका मतलब उसकी इच्छा नहीं है; उसने अपने माइंड को फ्लाइट मोड में डाल दिया — अब तुम कितना भी कॉल करते रहो, कॉल लगने वाली नहीं है।

प्रश्न: योगी जी, और अगर कोई सच में बदलना चाहता हो, सीखना चाहता हो, तो फिर उसके लिए क्या करें? (P24-0104)

अगर कोई बदलना चाहता है, तो आप उसके लिए मेहनत करिए। लेकिन पहले उसे धिक्कारिए — पहले उसे बेमतलब का डांटिए, डपटिए। जब आप उसे बेमतलब का डांटोगे, तब पता चलेगा कि वो सच में सीखना चाहता है या टाइम पास करने आया है। ऐसे ही आया होगा तो भाग लेगा; और डांटने के बाद भी अगर रुक गया, तब वो सीखना चाहता है। उसका इंटरव्यू उसी में ले लो — उसके लिए बिना मतलब का इतनी विपरीत परिस्थितियां पैदा कर दो कि या तो वो भाग जाए, या उस परिस्थिति को पार कर जाए; तब फिर उस पर मेहनत करो। मैं सीधा कहता हूँ — निकल भाग, काहे को आया, मैंने तुझे बुलाया क्या? बुला तो मैं ही रहा हूँ, लेकिन मैं सीखने वाले को बुला रहा हूँ, टाइम पास करने वाले को नहीं; तो टाइम पास करने वाले को मैं वहीं खत्म कर देता हूँ। बेमतलब पे डांटोगे तभी पता चलेगा कि उसका ध्यान लक्ष्य पे है या मेरे डांटने पे। तुम्हें सीखना है तो सीखने के लिए मेरी डांट सुननी पड़ेगी। मैं गुस्सा इसलिए करता हूँ कि मेरे गुस्से के साथ मैं सिखाऊंगा — तुम्हें मेरे गुस्से के साथ सीखना है तो सीखो, नहीं तो जाओ। और तभी तुम सीख पाओगे। भागना होगा तो अभी भाग लेगा — ना मेरा कुछ गया, ना उसका कुछ गया। टाइम पास वाला बाद में भागेगा, तो मेरी मेहनत चली जाएगी। इसीलिए ज्यादातर लोग मेरे पास टिक नहीं पाते, मुझे गुस्से वाला कहते हैं — क्योंकि मैं जरूरतमंद के लिए काम कर रहा हूँ। सच में जिसकी जरूरत हो, जिज्ञासा हो, तड़प हो, बेचैनी हो, जीवन में कुछ करना चाह रहा हो, कहीं पहुंचना चाह रहा हो — मैं उसके लिए काम करना चाहता हूँ। क्योंकि ये मुझे फ्री में नहीं मिला है। अगर आज मैं सिखाने के लायक बना हूँ, तो इसके लिए मैंने मेहनत किया है; मैंने किसी की नकल नहीं की, किसी का फार्मूला नहीं चुराया, किसी की वाणी नहीं चुराई। कठोर तपस्या के बाद मैंने इसे पाया है, और मैं उस व्यक्ति को देना चाहता हूँ जो इस लायक हो।

प्रश्न: गुरु जी, मैं 2003 से इस लाइन में हूँ, दीक्षा ली, गुरु मंत्र लिया, अब ज्ञान का मार्ग पकड़ा है। लेकिन अभी भी हम एक पैर उस नाव में और एक पैर इस नाव में रख रहे हैं, तो गिरना ही संभव लगता है। आपके जैसी स्थिति कब और कैसे आएगी? (P24-0105)

लेकिन उधर क्यों गिरना? इधर ही गिर जाओ। अगर गिरना ही है — जब एक कदम उधर है, एक कदम इधर है — तो एक कदम इधर से खींच के उधर क्यों ले जा रहे हो? उधर से खींच के इधर ही लाओ ना। स्थिति आएगी तेरे प्रयास से। धीरे-धीरे प्रयास कर, प्रयास करेगी तो होगा। इस मार्ग के जितने मार्गी हैं, जिज्ञासु हैं, सत्य के खोजी हैं — बस इन पे मैं काम करता हूँ, इनके अलावा मेरा कोई नहीं। मेरी जिंदगी इन्हीं लोगों के लिए है; चाहे दिन हो चाहे रात हो, मेरा हर क्षण, हर पल इन्हीं लोगों के लिए है। प्रयास कर, जरूर हो जाएगा। यह तो होना ही है, क्योंकि अपने आप में ही है ना। बस मैं जहां हूँ वहां से निकल जाऊँ, तो हो ही जाएगा। यह उपलब्धि लानी भी नहीं है। मैं जहां लिप्त हूँ, बस वहां से अपने आप को निकाल लूं। मुझे निकलने के लिए प्रयास करना है, ना कि उपलब्धि के लिए। मैं जहां-जहां उलझा हूँ, जहां-जहां फंसा हूँ, जहां-जहां राग, द्वेष, मोह, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, मेरा, कर्ता का भाव है — वहां से मैं अपने आप को निकालूं। जब तक तू सब कुछ छोड़ेगी नहीं, विचार नहीं छोड़ेगी, तब तक नींद भी कैसे आएगी? वही हमारा ज्ञान भी है — ज्ञान में भी तो सब कुछ छोड़ना है, तो अपने आप प्राप्त होगा। फेंक दे बस। यह समझ ले कि तेरी यही पहली और आखिरी जरूरत है; उपलब्धि तो — इतनी ताकत तुम में है कि तुम करवा लोगी।

प्रश्न: गुरु जी, आपने ध्यान के बारे में इतना अच्छा समझाया है। अब मैं पहले की तरह घंटों नहीं बैठती, बस अपने में रहती हूँ — क्या यही ध्यान है? (P24-0106)

यही तो ध्यान है। फिर धीरे-धीरे हमें उससे भी छुटकारा मिल जाएगा। कहां-कहां मेरा ध्यान जा रहा है, कहां-कहां मुझे ग्रसित कर रहा है — तो धीरे-धीरे हम वहां से अपने आप को निकाल पाएंगे। जब ध्यान से देखेंगे, तो हम अपने आप को छुड़ा पाएंगे।

प्रश्न: गुरु जी, अब कोई प्रश्न नहीं रह गया, बस यही प्रश्न है कि मैं निकल क्यों नहीं रही हूँ? मुझे ऐसा लगता था कि कुदरत अपने आप छुड़वा देगी। (P24-0107)

अब तो तेरे ऊपर है ना। देख, जिम्मेदारी है, दायित्व है। जहां मैं हूँ, वहां मेरा कोई काम नहीं है, तो मैं फिर वहां क्यों रुका हूँ? और काम है, तो फिर जाना पड़ेगा, फिर छोड़ के भी नहीं जा सकते। तो देखो, जहां मैं हूँ, वहां मेरा कोई काम है क्या? अगर काम है तब तो रुको, वो भी करो, ये भी करो; जब वो काम पूरा हो जाए तो पूरा इस तरफ चले आओ। और पता चला कोई काम नहीं है, फिर भी मैं वहां हूँ — तब तो हम अपना समय बर्बाद कर रहे हैं ना। कुदरत तो — मैंने बताया ना, पेड़-पौधों पे होता है कि पत्ते का समय आएगा, गिर जाएगा, नया पत्ता आएगा। कुदरत कब छुड़वाएगी? जिस दिन शरीर से निकलना होगा। उसके पहले आपको जो करना है, कर लो। आप भौतिक जगत में भटकते हो, कि भौतिक जगत से मुक्त होने के लिए काम करते हो — अब आप क्या करते हो, आपके ऊपर है। प्राण तो समय पे छूटेगा। एक शरीर में हमारा एक समय है, उस समय का हमें नहीं पता; लेकिन जब तक सांस चल रही है, तब तक हम क्या कर रहे हैं, वो मायने रखता है। जैसे रात हम जहां सोए, तो सुबह वहीं से यात्रा होगी। तो हम जो भी करते हुए शरीर को छोड़ेंगे, वही तो आगे करेंगे। अगर हम साधना में शरीर छोड़ेंगे, तो साधना ही मिलेगी — ऐसे लोग मिलेंगे आसपास वाले कि वो मुझसे साधना ही करवाएंगे; जितनी अभी तक साधना हो रखी है, वही आगे कंटिन्यू होगी। अब आप कहां शरीर छोड़ते हो, किस भाव में शरीर छोड़ते हो, क्या करते हुए शरीर छोड़ते हो, कहां आप लिप्त हो — अपने कल्याण में कि संसार में — तो वही लोग मिलेंगे। और अगर उपलब्धि हो गई, तो बात ही खत्म हो गई।

प्रश्न: गुरु जी, क्या इसी शरीर में भी उपलब्धि हो सकती है? (P24-0108)

क्यों नहीं होगी? आप जहां छूटे, तहां हुआ। आप ही के तो ऊपर है। लेकिन उसके लिए काम करना पड़ेगा ना, तभी तो परिणाम आएगा। मैं कह सकूँ कि मैं उपलब्धि के लिए पूरा प्रयासरत हूँ — मैं यह कह सकूँ। जैसे वकील के लिए कल बोला — वो पूरा प्रयासरत है ना, तो उसकी तो होनी ही होनी है, क्योंकि वो उपलब्धि के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है, कर रही है, दिन-रात लगी है। चक्कर आने पे भी काम करती है, गिर रही है लेकिन काम करती है; मैं मना करता हूँ तो भी करती है। तो उसकी उपलब्धि तो पक्का है ना, क्योंकि वो पूरी तरह लग गई है — हर क्षण अपना सत्कर्म में दे रही है, लोगों की सेवा में दे रही है। और देखो, ये आप कह रहे हो — आप देख के कह रहे हो किस तरीके से वो लगी है। तुझे लग रहा है, लेकिन कहीं ना कहीं उसके पीछे की मेहनत तो देखी तूने?

प्रश्न: गुरु जी, जो सेवा कर रहा है, क्या उसे साधना की जरूरत है? (P24-0109)

अगर गुरु के सानिध्य में सेवा कर रहा है, तो फिर गुरु का दायित्व हो जाता है ना उसे पहुंचाना। लेकिन सेवा इतनी आसान भी नहीं है। सेवा में बहुत सुनना पड़ता है — मान, अपमान, शब्दों का; फिर उतार-चढ़ाव। बहुत सहनशक्ति चाहिए सेवा करने में, इतना आसान नहीं है, क्योंकि बहुत उतार-चढ़ाव होंगे। सामने वाला आपको डांटेगा, फटकारेगा, बहुत कुछ बातें होंगी — और आपको डटे रहना है। सेवा में डटे ही रहना है।

प्रश्न: गुरु जी, सेवा में तो दिखता है कि हम कुछ कर रहे हैं — खुद को भी लगता है और गुरु की नजरों में भी रहता है। साधना में तो दिखता ही नहीं, और साधना में अहम नहीं आ जाएगा? (P24-0110)

साधना में भी तो दिखता है। साधना भी अगर आप कर रहे हो, तो आपको दिखता है कि मैं तप कर रहा हूं। साधना गुरु के सानिध्य में करो। साधना में अहम कैसे आएगा? अहम तब आता है, जब आप साधना करते हो इच्छाओं की पूर्ति के लिए। अगर साधना आत्मिक कल्याण के लिए कर रहे हो, मुक्ति के लिए कर रहे हो, मोक्ष के लिए कर रहे हो — राग, द्वेष, मोह, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, मेरा, कर्ता के भाव से मुक्त होने के लिए कर रहे हो — तो अहम कैसे आएगा? अहम तो बेईमानी में आएगा, ईमानदारी में कभी आएगा ही नहीं। अगर भौतिक चीजें चाहिए, ताकत चाहिए कि मुझे समाज को झुकाना है, मुझे नाम-शोहरत-पैसा चाहिए, तो उसमें अहम आएगा। और मुझे तो मुक्त होना है, तो इसमें अहम आ ही नहीं सकता। मुझे बेईमानी छोड़नी है, इसमें क्या अहम? बेईमानी करने में अहम है, छोड़ने में नहीं। मान के चक्कर में अहम है, लेकिन मान छोड़ने में अहम नहीं आएगा।

प्रश्न: गुरु जी, सेवा करते हुए साधना नहीं हो सकती क्या? (P24-0111)

दोनों हो सकती हैं, दोनों साथ होती हैं। जैसे कोई सेवा कर रहा है, तो उसका एक क्षण भी बैठना बहुत हो गया। और उसकी पूरी जिम्मेदारी फिर उसकी हो जाती है, जिसके सानिध्य में वो सेवा कर रहा है। जिस कार्य में जिसने-जिसने भी सहयोग किया है, सबको आशीर्वाद जाएगा। अंतरात्मा से आशीर्वाद मिल रहा है — ये उसकी साधना है। उस आशीर्वाद में इतनी ऊर्जा होती है कि बड़े आसानी से उसकी यात्रा हो जाती है। साधना में हमेशा बैठा रहना नहीं है; हमें देखना है कि क्या सेवा है। सेवा करते हुए साधना बहुत अच्छा है — सही सेवा करना। लेकिन बिना जरूरत का भी नहीं; पहले जरूरत हो। सेवा मिलना भी इतना आसान नहीं है, सत्कर्म मिलना भी इतना आसान नहीं है। बस अपने आप को कैसे भी निकाल ले — मेहनत कर।

प्रश्न: गुरु जी, मैं किसान हूँ। खेती में फसल करते हुए निर्दोष जीव मर जाते हैं, मारने का भाव नहीं होता — तो क्या पाप लगता है? (P24-0112)

आप देखिए, कुछ भी आप करते हैं — घर बनाते हैं, यहां तक कि आप चलते हैं, तो बहुत जीव तो पैरों के नीचे मर जाते हैं, घर बनाने में मर जाते हैं। तो आपका भाव तो काम करने का है, आपका भाव उन्हें मारने का थोड़ी ना है — तो दोष नहीं लगता।

प्रश्न: गुरु जी, यह जीव क्यों फंसा है? पहले से पूर्ण था, तो अब पूर्णता क्यों चाहता है? (P24-0113)

अब पूर्णता इसलिए चाहता है कि अपूर्णता में उसे दुख है, बेचैनी है, उदासी है, तकलीफ है। इसलिए वह पूर्ण में होना चाहता है — जहां ना दुख हो, ना सुख हो, जहां आनंद हो। क्योंकि जीव सुख के चक्कर में तो गया, लेकिन जहां-जहां से उसे सुख मिला, वहां-वहां से दुख मिलने लगा। तो वो बड़ा परेशान हो गया कि मैं कुछ भी कर रहा हूँ, उसका परिणाम दुख ही दुख आता है — चाहे वो रिश्ते हों, चाहे नाते हों, धन हो, वैभव हो, प्रॉपर्टी हो; शरीर एक तरफ धीरे-धीरे कमजोर हो रहा है। तो सुख जुटाता गया, और उसके सुख का परिणाम आया दुख। जब परिणाम दुख ही आता रहा, तो वो सोचने लगा कि बस अब एक काम करो, इससे छुटकारा पाओ। क्योंकि सुख से छुटकारा पाओगे, तभी दुख से छुटकारा पाओगे; जब तक सुख लेते रहोगे, वही सुख दुख का कारण बनेगा। तो यह बात जिनके भी समझ में आ जाती है — बहुत लोग समझ नहीं पाते, तो सुख ही इकट्ठा कर रहे हैं; और जो समझ पाते हैं, वो धीरे-धीरे अपने आप को इससे निकालने का प्रयास करने लगते हैं — उन्हीं को जिज्ञासु, उन्हीं को साधक, उन्हीं को सत्य का खोजी कहा जाता है।

प्रश्न: गुरु जी, बच्चे या पत्नी कुछ उल्टा-सीधा बोलते हैं, करते हैं, तो गुस्सा आता है — कृपया मार्गदर्शन करें। (P24-0114)

उन्हें उचित तरीके से समझाइए। अगर समझ गए तो ठीक है; नहीं समझेंगे तो आप प्रयास करते रहिए। क्योंकि आप वहां पे हो — कभी भी अगर कोई भी बिगड़ रहा हो, और मैं उसके पास हूँ, तो मेरा कर्तव्य है, दायित्व है, जिम्मेदारी है कि उसको सुधारने के लिए मैं क्या करूं।

प्रश्न: गुरु जी, पहले डर आता है या भ्रम? (P24-0115)

भ्रम आएगा तब डर आएगा। अगर भ्रम नहीं होगा, तो डर नहीं होगा। और भ्रम तभी आएगा, जब कोई इच्छा होगी, कामना होगी — उसी में भ्रम पैदा होता है।

प्रश्न: गुरु महाराज, परमात्मा-भगवान, जिससे हमारा मिलना होगा — वह रूप है? (P24-0116)

वो रूप से परे है। वो खुद आप हो, तुम हो। रूप का तो नाश हो जाएगा। शब्द, दृश्य, गंध, रस, स्पर्श से परे हो आप। और आप तभी मिल पाओगे, जब शब्द, दृश्य, गंध, रस, स्पर्श के द्वारा जिस पिंड में, जिस रूप में आप घुसे हो — उससे अपने आप को निकाल लो; तब अपने स्व में आ जाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, एक आत्मज्ञानी व्यक्ति की पहचान क्या होती है? (P24-0117)

वो आपके कल्याण के लिए बात करेगा। जब भी वो आपसे बात करेगा, तो आपके आत्मिक कल्याण के लिए — बस यही उसकी पहचान है।

प्रश्न: गुरु जी, कृपया ईमानदारी को कुछ उदाहरण के साथ बताइए। (P24-0118)

ईमानदारी तो ईमानदारी है, ईमानदारी में क्या उदाहरण लो? बेईमानी मत करो। छल, कपट, चोरी, बेईमानी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड मत करो — बस ईमानदारी है। बस बेईमानी आप मत करो; बेईमानी करना छोड़ दो, वही हो गया।

प्रश्न: गुरु जी, आपने कल बोला था कि यहां से छोड़ोगे तो अगला वही मिलेगा। अगर मैं वापस उन्हीं लोगों के बीच जाकर उनमें लग गई और शरीर छूट गया, तो अगला जन्म कहां होगा? (P24-0119)

जहां लगी रहेगी, वहीं मिलेगा। अब तू यहां है, अब इस स्थिति में अगर शरीर छूटता है तो तेरा जन्म तो साधना में ही होगा। अब तू जैसे ही वहां से वहां जाएगी, उन लोगों में लगेगी, अगर वहां शरीर छूटा तो तेरा शरीर उन लोगों के आसपास ही आएगा। जैसे देख, कोई घर लेता है तो छिपकली आ जाती है — छिपकली का उस घर से कोई रिश्ता है, ऐसे नहीं आ गई। चूहे का रिश्ता है उस घर से, वो उस घर में दौड़ रहा है, उस व्यक्ति के साथ घूम रहा है। हम लोग घर बनाते हैं, छिपकली कहां से आ जाती है? रिश्ता है उसका, कोई रिश्ता है। तो ऐसे — अगर हमें मानव शरीर नहीं मिला, हो सकता है उन्हें मानव शरीर मिले, तो हम उनके आसपास ही रहेंगे; चाहे कुत्ता, कुछ भी हो, हम आसपास रहेंगे और अपना उद्देश्य पूरा करेंगे। जितने लोगों से मेरा लेनदेन है, उतनों के आसपास हम जन्म लेते हैं। इसलिए हो सकता है अगला शरीर मिले तो उसमें मोह-माया में, इच्छाओं में जकड़े रहो; फिर जब समझ आए तो समय चला जाए; और हो सकता है फिर मार्ग ही ना मिले। बहुत लोगों को मार्ग भी नहीं मिल पाता, जन्म-जन्म लग जाते हैं मार्ग मिलने में। अभी समय भी है, समझ भी है — इसी में निकाल ले अपने आप को।

प्रश्न: गुरु जी, मैं हमेशा यही बोलती हूँ कि मुझे अब शरीर नहीं चाहिए, मुझे मुक्ति चाहिए। तो क्या ऐसा कहने से दोबारा शरीर नहीं मिलेगा? (P24-0120)

तेरे कहने से क्या होगा? कोई अपराधी कह दे कि मुझे सजा नहीं चाहिए, तो क्या उसे सजा नहीं दी जाएगी? अपराध तो मैंने किया, लेकिन सजा नहीं चाहिए — ऐसा थोड़ी ना होता है। मेरे कर्म के आधार पर मुझे शरीर मिलेगा। और तेरी इच्छा है, तो इच्छा की पूर्ति बिना शरीर के हो ही नहीं सकती — तुझे शरीर दिया ही जाएगा। इच्छा से शरीर मिलता है, तेरे बोलने से नहीं। बोलने से राजगद्दी नहीं मिलती, कर्म से मिलेगी। जिनके प्रति तेरा राग-द्वेष है, जिनके लिए तू जा रही है, जिनके आसपास रह रही है — जब तक उपलब्धि नहीं होगी, उनके साथ ही शरीर मिलेगा। "मुझे शरीर नहीं चाहिए, मुझे मुक्ति चाहिए" — ये बोलने से नहीं होगा। बोलने से होता तो कितने लोग बोल रहे हैं "मैं ब्रह्म हूँ"; कितने लोग अपने आप को भगवान समझ के घूम रहे हैं, कि सब में मैं ही हूँ। अगर सब में तुम हो, तो तेरे घर में सब आ जाएं तो रखोगे? नहीं अपना सकते — इसका मतलब तुम तुम हो, वो वो है। ये खाली रट्टा है; इससे कुछ नहीं होने वाला। फांसी की सजा वाले से उसकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है — भोजन या परिवार से मिलना, वो इच्छा पूरी होगी; पर वो कहे "मेरी फांसी की इच्छा नहीं है", तो फांसी तो पक्का है। ऐसे ही जब तक तेरी कामना है, इच्छा है, तब तक तुझे शरीर मिलना ही मिलना है — और उन लोगों के पास, जिनके प्रति इच्छा है, जिनसे लेनदेन है, उन्हीं के पास तू जन्म लेगी। वही कारण है जन्म का। अगर कोई योग-साधना में है, अपने आप को साध रहा है, तो उसमें से कोई इंसान बन सकता है; अगर कोई भोग में है, तो हो सकता है उसके पास कोई जानवर बन के जाए।

प्रश्न: गुरु जी, मुझे नहीं पता कि मैंने किसी का कर्ज लेना है या देना है — शायद दोनों हैं, इसलिए रुकी हूँ। ऐसे में कैसे निकलूं? (P24-0121)

देख, तूने अगर दिया तो कहीं से लिया; ऐसे तो दिया नहीं। तेरे पास क्या है? जीरो, कुछ भी नहीं। तो कहीं से लिया, तब दिया। ज्यादा के चक्कर में उधर दिया, तो जब उधर से ज्यादा मिलेगा तब इधर देगी और उसमें से कुछ खाएगी — यही हो रहा है। देने में अगर ज्यादा मिला तो इधर भी दे दोगे; और पता चला देने में वो मिला नहीं, तो इधर भी तुम्हें जवाब देना पड़ेगा और तुम्हारी मेहनत का भी नहीं मिला। ऐसे ही चल रहा है। इसीलिए मेरा कहना होता है कि अपने परिवार की देखरेख करने के बाद सत्कर्म में लगाओ — चाहे वो धन हो, चाहे तन हो, चाहे समझ हो। जब इच्छा में, पुण्य के चक्कर में कोई काम करते हैं, तो वो बीज की तरह होते हैं — कुछ एक ही बार फल देते हैं, जैसे केला, गाजर; अरहर वगैरह एक-दो साल देते हैं। बीज या तो खा सकते हो या लगा सकते हो, दोनों नहीं — गेहूं या तो खा सकते हो या लगा सकते हो। लेकिन सत्कर्म फल की तरह है — आम खा भी लिया और लगा भी दिया; और फल का पेड़ हजारों साल फल देता है, जब तक वो रहेगा, सत्कर्म मिलता रहेगा। तो निकलने के लिए क्या करो? सत्कर्म ज्यादा से ज्यादा करो, निकलने के भाव से करो, आत्मिक चिंतन करो। इतना सत्कर्म कर दो कि सत्कर्म ही तुम्हें निकाल दे — क्योंकि तुम चाहे जिस शरीर में रहो, तुम्हें ये मिलता रहेगा। और बिना मेहनत का सत्कर्म तो होगा नहीं — मेरे पास चाहे धन का बल हो, तन का बल हो, समझ का बल हो, वो मेरी साधना से ही तो आया है। देखो, एक जानवर को पेट भर रोटी नहीं मिलती, इलाज नहीं मिलता, सड़ रहा है; और एक जानवर ऐसा है कि हेलीकॉप्टर में घूम रहा है, जरा सा बुखार आ जाए तो तुरंत डॉक्टर के यहां — क्योंकि उसका सत्कर्म इतना भारी है कि भले उसे पशु का शरीर मिल गया, आज भी राजाओं की तरह जी रहा है; आगे शरीर बदलेगा तो उसका सत्कर्म उसे निकलने में सहायता करेगा। आर्मी के जानवर पशु शरीर पाने के बाद भी देश के लिए जिए, उन्हें कितने सम्मान के साथ विदा किया जाता है — और मानव शरीर में लोग अपराध, कुकर्म, दुष्कर्म कर रहे हैं। और जो पाप करता है, उसकी समझ कम हो जाती है, मंदबुद्धि होने लगता है, शरीर का बल कम हो जाता है, धीरे-धीरे धन कम हो जाता है और वो सड़ता है। इसीलिए मैं जोर देता हूँ — निकलना है तो ज्यादा से ज्यादा सत्कर्म करो। सत्कर्म का परिणाम तुम्हें किसी भी शरीर में मिलेगा, और सत्कर्म तुम्हें निकाल देगा। चाहे धन हो, चाहे तन हो, चाहे समझ हो — सब लगा दो।

प्रश्न: गुरु जी, मैं घर वालों को प्रेम से मना के निकलना चाहती हूं, ताकि मेरे द्वारा किसी को द्वेष ना लगे। क्या वो प्रेम समझ पाएंगे? और अगर बिना माने निकली तो क्या मैं राग-द्वेष लेकर आऊंगी? (P24-0122)

प्रेम उपलब्धि के बाद ही समझ में आएगा। प्रेम की जितनी परिभाषा लोग देते हैं — प्रेम तो जब उपलब्धि होगी, तब समझ में आएगा कि प्रेम क्या है। राग-द्वेष तब होगा जब तू उनका अपमान करके आएगी। अपमान करके कहाँ आ रहे हो? जब आपने अपनी जिम्मेदारी निभा दी, तो अपमान क्या है? अपमान तो तब होता जब आप अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाए होते और भाग रहे होते। तो हम जा रहे हैं, वो ना मानें तो भी अपमान नहीं। उन्हें पता दे दो कि भाई, कभी भी तुम मिलने आ जाना; मेरी प्रबल इच्छा है, मुझे निकलना है, मैं ऐसे ही निकल पाऊंगी। अगर हम बिना पता बताए जाते तो बात अलग थी। लोग अपना करियर बनाने अमेरिका-इंग्लैंड चले जाते हैं, मां-बाप को छोड़ के। और ये शरीर धीरे-धीरे जर्जर हो रहा है — हर सांस जा रही है, शरीर कमजोर हो रहा है। जब हम मना ही लेंगे, तो अभी क्यों नहीं? उन्हें दुखी मत कर, और सुखी भी मत कर — बोल दे, भाई मुझे निकलना है, तो निकलना है। बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, मैं पूरी कोशिश कर रही हूं, मेरी जिम्मेदारी-दायित्व भी पूरे हो चुके हैं, फिर भी कुछ तो है जो मुझे बांध रहा है। वो क्या है? (P24-0123)

तू ही तुझे बांध रही है, और कोई नहीं है तेरे अलावा बांधने वाला। तू ही तुझको बांध के रखी है। कोई नहीं बांधा है — क्योंकि अगर जिम्मेदारी होती तो मैं कहता जिम्मेदारी ने बांधा है, कर्तव्य ने बांधा है। जब ऐसा कुछ है ही नहीं, तो फिर तूने ही तुझको बांधा है। इस दोष से मुक्त हो जा, और अपने निकलने के लिए पूरा लग जा। जब पूरी तरह लगेगी, तभी निकल पाएगी।

प्रश्न: गुरु जी, क्या गृहस्थ जीवन में रहते हुए आत्मज्ञान को लक्ष्य बनाया जा सकता है? (P24-0124)

हां, हो सकता है। लेकिन मैंने कहा ना — साल के 12 महीनों में एक महीना एकांतवास दो, और अपनी जिम्मेदारी-कर्तव्य को निभाते रहो। जैसे ही वो पूरा हो, निकल जाओ पूरी तरह।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मचिंतन करते समय अगर घर का कोई सदस्य बार-बार टॉर्चर करे, तो क्या करें? (P24-0125)

उस सदस्य को छोड़ दो, या तो इतना सामर्थ्यवान बन जाओ कि वो टॉर्चर करने से पहले सोचे।

प्रश्न: गुरु जी, जहां मैं काम करता हूं, वहां सीनियर किसी दूसरे का काम मुझे दे देते हैं, और जिसका काम है वो दूसरे कामों में लगा रहता है या काम पर नहीं आता। क्या मुझे वो काम करना चाहिए या छोड़ देना चाहिए? (P24-0126)

आप अपना काम करो, बात खत्म। या तो अगर ज्यादा काम कर रहे हो तो उसका पेमेंट लो और वो पैसा सत्कर्म में लगाओ; नहीं तो मत करो। अपनी ऊर्जा को गलत जगह उपयोग मत करो। वो व्यक्ति अगर उस काम का पैसा ले रहा है और नहीं कर रहा, तो तुम क्यों कर रहे हो? अगर तुम कर रहे हो तो पैसा लो और उसे सत्कर्म में लगाओ, क्योंकि उसमें तुम्हारी ऊर्जा तो लग रही है।

प्रश्न: गुरु जी, कई बार दिन-रात मेहनत करने के बाद भी परिणाम नहीं आता, तब क्या करें? (P24-0127)

परिणाम क्यों नहीं आएगा? मेहनत करें और परिणाम ना आए — ऐसा हो नहीं सकता। मेहनत की हो तो सामने वाले से लड़ जाओगे; और पता चला ऐसे ही कर दिया, तो लड़ोगे किससे? मेहनत करेंगे तो परिणाम आएगा।

प्रश्न: गुरु जी, साधना में आसन की शुद्धता का क्या महत्व है? (P24-0128)

आसन शुद्धि का मतलब होता है — जहां पर आप विश्राम कर रहे हैं या जहां पर आप साधना कर रहे हैं। ऐसा नहीं कि बस उतना आसन लगा दिया, वही आसन है। जितने दायरे में आप साधना कर रहे हैं, उस स्थान का, उस वातावरण का, उस जगह का, उन लोगों का आपके ऊपर प्रभाव पड़ेगा। आसन के नीचे एक और भी आसन है — चाहे उसे पृथ्वी कह लो, जमीन कह दो। फिर देखना है वो किसके दायरे में है, क्योंकि यहां मेरा-तेरा की बात है। जैसे आपके हाथ में कोई वस्तु आती है — पता चले मेरे मित्र की है तो उसके प्रति अलग भाव होगा, शत्रु की है तो अलग भाव होगा; वस्तु वही की वही है। भोजन कर रहे हो — पता चले शत्रु का है, तो उसी भोजन को करने में घुटन होने लगेगी। देश, काल, स्थिति, परिस्थिति — आप कहां साधना कर रहे हो? साधना का मतलब होता है अपने आप को सुधारना, अपने आप को संवारना। कैसे वहां लोग हैं, कैसा वहां प्रभाव है, किसके दायरे में मैं साधना कर रहा हूं, वो व्यक्ति कौन है? आप किसी गांव में किसी व्यक्ति के यहां जाना चाहते हो — उस व्यक्ति का गांव में जैसा प्रभाव रहेगा, लोग आपको भी उसी भाव से देखेंगे। सम्मानित आदमी के यहां जा रहे हो तो घर तक छोड़ के आएंगे; दरिद्र के यहां जा रहे हो तो कहेंगे "चला जा सामने"। तो आप कहां साधना करते हो — ये आसन का महत्व हो गया। और फिर देखना ये है कि साधना करके पाना क्या चाहते हो। दो ही चीज होती हैं इस ज़िंदगी में — या तो अपने आप को बिगाड़ना है, या सुधारना है। ज्यादातर लोग साधना नाम, शोहरत, पैसे के लिए करते हैं; मंदिर में 99.9% लोग अपनी कामनाएं, मन्त्रों पूरी करने के लिए जाते हैं, उस देवता के लिए नहीं। तो साधना क्यों करना चाहते हो, ये पहले देख लो।

प्रश्न: गुरु जी, मैं ईमानदारी, सत्कर्म, प्रार्थना कर रहा हूँ, रोज खुद को देख रहा हूँ। पर अभी भी मेरे अंदर डर है — आंख बंद करके किसी स्थिति को देखता हूँ तो भय आता है, ध्यान में अंधेरा दिखे तो भी भयभीत हो जाता हूँ। इस भय से कैसे निकलें?

(P24-0129)

डर आया, तो डर का कारण क्या है, उसके पीछे क्या है? कमजोरी — कहीं ना कहीं आप में कमजोरी है; उस कमजोरी को दूर करो। और जिससे डर लगता है, उसे देखते रहो, भय खत्म हो जाएगा। जिस चीज का हम सामना करते हैं, उसके पास रहने लगते हैं, वो छूट जाती है। जैसे विवाह के बाद पहले दिन लगता है छोड़ूँ ही नहीं, छह महीने बाद वो लगाव नहीं रहता। कोई भी वस्तु — गाड़ी, बंगला — उसे पाने के लिए बेचैन थे, जब पा जाते हो और उसमें रहने लगते हो, तो ऊब जाते हो। तुम्हें लोगों ने बचपन से बता दिया कि इन सब में सुख है; नहीं, ये सब बस संसाधन हैं — तुम्हें तुम चाहिए, बस। जंगल में शेर से डर क्यों है, बिल्ली से क्यों नहीं? क्योंकि बिल्ली मार नहीं सकती। शेर का भय नहीं है, मृत्यु का भय है — जीने की इच्छा है, और वो ताकतवर है। तो या तो सुरक्षित हो जाओ — जहां शेर ना पहुंचे वहां साधना करो — या शेर से ताकतवर हो जाओ; शेर के सामने मत जाओ। भय तब रहता है जब आपके पीछे कोई इंतजार कर रहा हो, जब कुछ चाहिए हो। जब कटने का डर उसी को है जिसकी जेब में पैसा है; पैसा ही नहीं तो भय किसका? जो कुछ है, उसका सामना करना पड़ेगा — सामना करोगे तो निकल लोगे, सामना नहीं करोगे तो बचे रहोगे, पार नहीं हो पाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, कोई जोर-जोर से, ऊंची आवाज में बात करता है तो मुझे इरिटेशन होती है, अंदर कुछ होता है। इसे कैसे निकालें? (P24-0130)

कोई सीनियर ऊंची आवाज में बोले तो भय लगता है; कोई जूनियर कितना भी गुर्रा के बोले, भय नहीं लगता, हंसी आती है। बिल्ली जोर से चिल्लाए तो भय नहीं लगता, शेर दहाड़ दे तो लगता है — क्यों? वो ताकतवर है। अगर दूसरी नौकरी का ऑफ़शन नहीं है, पीछे बच्चों को भोजन कराना है, तो बॉस गाली भी देगा तो कांपते रहोगे; ऑफ़शन है तो कहोगे "रख अपनी नौकरी, मैं जा रहा हूँ"। डर का मतलब कमजोरी — कहीं ना कहीं आपके पास ऑफ़शन नहीं है, कहीं ना कहीं आप कमजोर हो। तो अगर डर को हटाना है तो कमजोरी को भगाओ। सीधी सी बात — ताकतवर बनो। ₹20 लेके श्री स्टार होटल में जाओगे तो वेटर से भी डरोगे; ₹1 लाख रहेगा तो मालिक से भी नहीं डरोगे। जिसके पीछे बैक-सपोर्ट है, उसकी आवाज से लोग डरते हैं — उस आदमी से नहीं, उसके पीछे की ताकत से। अमीर आदमी के कुत्ते से भी लोग डरते हैं, और सीधे-सादे गरीब आदमी को भी लोग छेड़ देते हैं, क्योंकि उसके पीछे बैक-सपोर्ट नहीं है।

प्रश्न: गुरु जी, ताकत जरूरत आने पर ही इकट्ठी की जाए, या हमेशा ताकतवर बनकर रहें? (P24-0131)

ताकतवर बन के रहो हमेशा; जरूरत आने पे उपयोग करो। अब जरूरत आने पे तुम ताकत लाओगे तो कहां से लाओगे? पहले से पूरी व्यवस्था रखो। ताकत बाद में नहीं लाई जाती। युद्ध के मैदान में कहोगे "मैं तलवार बनवा के लाता हूं", तब तक गर्दन उड़ जाएगी। युद्ध के मैदान में जाने से पहले तलवार लेके जाइए। अगर जीवन में, समाज में अपने लिए काम करना है, तो आपको सब चाहिए — धन, तन, ज्ञान। उपयोग जरूरत आने पर करो, और तुरंत करो — तलवार का जवाब तलवार से दो, गुलाब के फूल से नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, बचपन में मम्मी ने सिखाया था कि गलती अपनी ना हो तो भी किसी से झगड़ा नहीं करना, चुप रहना — यही आदत बन गई है। क्या यह सही है?

(P24-0132)

गलत बात है, ये गलत शिक्षा है। गलत करो मत, और कोई गलत करे तो छोड़ो मत — सीधी सी बात है। ये आदत छोड़िए। गलत करो मत, और कोई गलत आपके साथ करे तो अपने आप को इतना सामर्थ्यवान बना के रखो कि उसे ऐसा जवाब दो कि वो किसी और के साथ गलत करने से डरे। तुरंत रिएक्ट करना, हमेशा तुरंत बोलना चाहिए। समझदार बनो, मजबूर नहीं। अगर कोई मजबूर समझता है, बेवकूफ समझता है, तो उसे जवाब दो। कहा गया है — सीधे का मुंह कुत्ता चाटता है। इतने भी सीधे मत बनो कि कोई कुछ भी करके चला जाए और तुम देखते ही रह जाओ। इसीलिए तो अपराध बढ़ता जाता है — सही लोग बस चुपचाप बैठ के तमाशा देखते हैं, और फिर कहते हैं अपराध बढ़ रहा है। अपराध बढ़ने के जिम्मेदार आप हो, और कोई नहीं, क्योंकि गलत पे बोलते ही नहीं हो।

प्रश्न: गुरु जी, जब से पति गए हैं, मन बहुत पीछे जाता है, उनकी बहुत याद आती है। क्या करूं? (P24-0133)

देखो, क्या होता है कि कोई भी आपकी जिंदगी से जाए — चाहे राग में, चाहे द्वेष में — उसकी याद तो आनी ही आनी है। अब देखना यह है कि जब तक वो मेरे साथ था, मैंने क्या किया। जाना तो होगा — चाहे आपका, चाहे उसका, जिंदा या मुर्दा, एक दिन। अगर संयोग है तो वियोग है। अब देखना यह है कि संयोग हुआ और फिर वियोग होने तक मैंने क्या किया? जिस रोल को लिया, जैसा रिश्ता मैंने बनाया, क्या उस रिश्ते को मैंने 100 में 101% निभाया? बिछड़ना तो पक्का है। आप मत ये सोचिए कि साथ में रह के बस हम साथ ही रहेंगे। नहीं, एक दिन तो जाना ही है। वो जाने से पहले आपने उनके साथ क्या किया, वह देखो। तो यही है — आप इन सब बातों को समझते हुए अपने जीवन में क्या लक्ष्य बनाए हैं, उस पे ध्यान दीजिए। उस लक्ष्य पर पूरी तरह काम करिए। जब आप उस लक्ष्य पर पूरी तरह काम करेंगे तो एक दिन परिणाम आएगा, और परिणाम होगा तो वहां आप होंगे, क्योंकि लक्ष्य और आप अलग नहीं हैं। बस कर्म करके उस लक्ष्य तक पहुंचना है, लेकिन उस लक्ष्य तक कर्म करके ही पहुंचा जा सकता है, बातों से नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, मेरा अपना अनुभव है कि जब तक अंदर से अच्छा नहीं है, तब तक बाहर से अच्छा नहीं हो सकता — क्या यह सही है? (P24-0134)

नहीं। बाहर से अच्छा होगा, तभी अंदर से अच्छा हो सकता है। अगर बाहर से अच्छा नहीं होगा तो अंदर से भी अच्छा नहीं हो सकता, क्योंकि बाहर को बाहर से ही पकड़ के आपने अपने अंदर को गंदा किया। ठीक है? तो बाहर से ही पकड़ के आप अपने आप को अच्छा कर सकते हो। बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, मेरी उम्र 61 साल है, लेकिन जीवन का मकसद क्या है, समझ में नहीं आ रहा। मार्गदर्शन कीजिए। (P24-0135)

अब कब समझोगे? 61 तक समझ में ही नहीं आया कि जीवन का मकसद क्या है? जीवन का मकसद है आत्मिक कल्याण। अभी तक मकसद ही नहीं समझ में आया, तो यात्रा कब करोगे?

प्रश्न: गुरु जी, आप बताते हैं कि 'चाहिए' से निकलो, पर संसार में आवश्यकता तो रहती है — इस 'चाहिए' से कैसे निकलें? (P24-0136)

योग्यता जितनी है, उसमें जियो। अगर ज्यादा चाहिए तो योग्यता बढ़ाओ, और अपनी जरूरत में जीना चालू करो। बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, हम शरीर में अटके हुए हैं — इससे निकलने का उपाय क्या है? (P24-0137)

शब्द, दृश्य, गंध, रस, स्पर्श — जब तक इनमें से एक भी चाहिए, तब तक आप शरीर में अटके हुए हो। तो इससे निकलने के लिए आप जरूरत में जीना चालू करो। ईमानदारी, सत्कर्म अपनाओ और अपना कल्याण कर लो।

प्रश्न: गुरु जी, बच्चों को अच्छी बातें सिखाते समय बच्चे सीखना नहीं चाहते, टालते रहते हैं, तो क्रोध आता है। क्या करें? (P24-0138)

बच्चों को अच्छी बातें सिखाने से पहले, क्या आप उस अच्छाई पर चल रहे हो? अगर आप चलते, तो बच्चे देख के सीख जाते; आपको सिखाना नहीं पड़ता। अगर बच्चों को अलग से सिखाना पड़ रहा है, इसका मतलब आपका रहने का, उठने का, बैठने का, बोलने का माहौल अलग है, और आप बच्चों को कुछ अलग सिखाना चाहते हो। आप अलग तरीके से रह रहे हो, तो दोनों मैच नहीं हो रहा है। इसलिए बच्चे बाद में बहुत पिटाई करने वाले हैं, जब वह जवान हो जाएंगे। अभी वह कमजोर हैं, इसलिए आपकी डांट-डपट सब सुन रहे हैं। आप देखो कि जो कुछ आप उन्हें सिखा रहे हो, क्या उसमें आपका जीवन है? तब तो सिखाने की जरूरत नहीं, आपको देख के ही सीख लेते। सिखाना पड़ रहा है, इसका मतलब है कि आप कुछ और कर रहे हो और उनको कुछ और करवाना चाहते हो। क्योंकि बच्चे नकल करते हैं — वह मां-बाप को, भाई-बहन को देखकर सीखते हैं। तो घर का माहौल देखो क्या है।

प्रश्न: गुरु जी, हमारे साथ कोई गलती कर रहा है, तो उसे क्षमा करना चाहिए या अनदेखा करना चाहिए? (P24-0139)

अनदेखा तो नहीं करना चाहिए। अब देखो कि गलती हो रही है कि अपराध हो रहा है। अगर जानबूझकर कर रहा है, तो उसे समझाइए, या तो उसका त्याग कर दीजिए।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मचिंतन कैसे किया जाता है? (P24-0140)

आप कहीं भी एकांत में बैठ जाइए — कि कैसे मैं अपने आप को निकाल लूं? कैसे उस परम स्थिति को उपलब्ध हो जाऊं? राग, द्वेष, मोह, इच्छा, अपेक्षा, मेरा और कर्ता के भाव से मैं कैसे अपने आप को निकाल लूं? यह निकलने का भाव बनाना ही आत्मचिंतन है — मतलब मैं अपनी आत्मा को इस दलदल से कैसे छुड़ा लूं।

प्रश्न: गुरु जी, कल आपने बोला था कि नसीब से सत्कर्म मिलता है। यहां जो साधक अपने आत्मिक कल्याण के लिए आया है, उसे अपने हाथों से भोजन (प्रसादी) कराना क्या सत्कर्म है? और कोई बार-बार दरवाजे पर खाने आए तो? (P24-0141)

हां, ये सत्कर्म है कि तेरे द्वारा ये मिल रहा है, क्योंकि वो जितने क्षण, जितने पल यहां आया है, उसके (परमात्मा के) लिए आया है। तो अभी देखो, यहां जैसे उसे कुछ भी खिलाएं तो उस ताकत का उपयोग किसके लिए करेगा? उसके आत्मिक चिंतन में। अब यही संसार में तुम हजारों को खिलाते और वो उस ताकत का उपयोग बेईमानी में करते, तो वो सत्कर्म नहीं होता। जो परमात्मा की सेवा में लगा है, उसके पास तो खुद लोग लेके जाएंगे; वह क्यों तुम्हारे दरवाजे पे आएगा? परमात्मा की सेवा में लगने वाला कभी दरवाजों पर नहीं जाता। परमात्मा के मार्ग पर चलने वाला अगर भिक्षा भी ले रहा है, तो एक बार जाके एक दरवाजे पर मांगेगा, फिर दोबारा उस दरवाजे पे नहीं जाएगा। और वो भी उतना लेगा — अल्पाहार, भोजन — जितने में उसका जीवन चल सके। वो भी एक दरवाजे पे एक बार जाएगा। दुनिया कितनी बड़ी है; अगर पूरी जिंदगी कोई मांगे तो उसका जीवन कम पड़ जाएगा। नहीं तो दूसरे दरवाजे पे क्यों जाएगा? अगर दूसरे दरवाजे पे जा रहा है, इसका मतलब उसके अंदर लालच जगा है — संचित करने का, परिचय बनाने का। ठीक है? नहीं तो एक दरवाजे पे मांगेगा, आगे बढ़ जाएगा। हां, तो बस यही है सत्कर्म। कैसे भी अपने आप को लगा दो।

प्रश्न: गुरु जी, दशहरे के दिन किसी ने पूछा था कि मैं राम जैसा कब बनूं, तो आपने कहा — राम क्यों बनना है, तुम तुम क्यों नहीं होना चाहते? पर हम तो सोचते हैं कि उन पर चलकर हम और अच्छे बनें? (P24-0142)

हां, तुम तुम हो जाओ ना। मैं कह रहा हूं, तुम तुम हो जाओ ना। तुम उस परमात्मा से हो, तो तुम तुम हो जाओ ना। तुम्हें अपने से इतनी घृणा हो गई कि तुम राम बनना चाहते हो, तुम कृष्ण बनना चाहते हो — तुम तुम क्यों नहीं होना चाहते? राम तो कभी तुम्हारे बनने की कोशिश किए? कृष्ण तो कभी तुम नहीं बने। वह तो वह बने, जो थे वो बने। बस इंसान ने अपने से इतनी घृणा कर ली कि वो किसी और को अपना बनाना चाहता है कि हम ऐसे बनें। तुम राम बनोगे तो भी भटकोगे, विवेकानंद बनोगे तो भी भटकोगे। मेरा यही कहना है कि तुम तुम हो जाओ, और तुम तुम हो जाओगे तभी आनंद घटित होगा।

प्रश्न: गुरु जी, मेरी उम्र 25 साल है। मैं एक रुपया भी नहीं कमाता, मेरा पेट मेरी मां भरती है। मुझे भी आत्मचिंतन करना है — क्या करूं? (P24-0143)

पहले रुपए कमा लो। पहले रुपए कमा लो, और उन रुपयों से पहले मां को कुछ सुख दे दो। जब तुम एक रुपया कमाते नहीं हो, तो आत्मचिंतन क्या करोगे? धन की ताकत, तन की ताकत — अगर तुम्हारे तन की ताकत है, और मां तुम्हें खिला सकती है, तो तुम मां को क्यों नहीं खिला रहे? वह देखो। जब तुम अपना पेट नहीं भर सकते, तो तुम आत्मचिंतन क्या करोगे? तुम तो एक बोझ हो धरती पर — अपनी मां के लिए, सबके लिए। मां क्या करे, बेचारी को खिलाना ही पड़ेगा। तुमसे क्या आत्मिक चिंतन होगा? तुम तो एक मजबूर, कमजोर, लाचार व्यक्ति हो। जो जीवन में अपना पेट नहीं भर सकता, जिसमें अपना पेट भरने की क्षमता नहीं हो, वह क्या आत्मिक चिंतन करेगा? वह तो कमजोर व्यक्ति है, आलसी व्यक्ति है। बैठे-बैठे सब मिल रहा है, बढ़िया से खा रहा है, और करना है आत्मिक चिंतन! पहले इस बोझ से हटो। खुद कमाकर अपनी मां को खिलाना शुरू करो, तब उसके बाद आत्मिक चिंतन होगा। जब जीवन में किसी के लिए कुछ किया ही नहीं, मां का अभी तक खा रहे हो, तो क्या आत्मिक चिंतन करोगे?

प्रश्न: गुरु जी, नाम की क्या महिमा है? कहते हैं कि नाम लेना जरूरी है। (P24-0144)

ठीक है, आपको लगता है नाम लेना जरूरी है, तो ईमानदारी के साथ लो। अगर आप ईमानदारी के साथ नाम ले रहे हो, फिर नाम का कोई मतलब है; और पता चला कि आप नाम ले रहे हो और बेईमानी कर रहे हो, तो उस नाम का कोई मतलब नहीं है। नाम से ऊर्जा मिलेगी। अगर आप ईमानदारी करोगे तो उसे वहां लगाओगे, सत्कर्म करोगे; और आप बेईमानी करोगे तो उस बेईमानी में लगाओगे, तो आपका और पतन होगा। तो बस आपको यह समझना है कि मैं लगा कहां हूं।

प्रश्न: गुरु जी, वेश्यावृत्ति सही है या गलत? अगर कोई पैसों के लिए करे तो?

(P24-0145)

अपने शरीर को बेचना तो किसी भी तरीके से गलत है ना। शरीर को तो सत्कर्म में लगाना चाहिए — शरीर की ताकत को सत्कर्म में लगाना चाहिए। आपको भी पता है गलत है, तो उसे भी पता है।

प्रश्न: गुरु जी, कोई आकर मेरी कार को ठोक दे और फिर उल्टा मुझसे ही झगड़ा करे, तो हम सोचते हैं कि झगड़े में समय क्यों गंवाएं — ₹1000-2000 देकर निकल जाएं। क्या यह सही है? (P24-0146)

आपको एक घटना बता रहा हूं। मैं था और एक बाबा जी थे; हम अमरकंटक की तरफ जा रहे थे। दो लोग मोटरसाइकिल पर झंडा लेकर जा रहे थे, उन्होंने रास्ता पूछा, तो हमने गाड़ी साइड में रोकी और रास्ता बताने लगे। तभी एक बाइक वाला आया और सीधा मारा। हम नीचे गिरे, चोट भी आई, खून निकला। उसका तो पूरा फूट गया था, दारू पिया था। उसने तुरंत बोला — बाबा ने ठोक दिया। फिर उसने गांव में फोन लगाया, लोग आए, बातचीत हुई तो पता चला कि गलती उसकी है। तो उन लोगों ने बोला — आप लोग निकल जाओ, जाने दो, छोड़ो। हम कहे — नहीं, हम नहीं निकलेंगे। क्यों निकल जाएं? कल कोई यही बोलेगा कि बाबा लोग ठोक के निकल गए। जो होगा देख लेंगे। पहले दवाखाना ले गए, उसकी पट्टी करवाई, और बाद में उसको खूब डांटा — दारू पीने के बाद गाड़ी चलाता है? आज तुझे कुछ हो जाता तो जिम्मेदार कौन होता? बाद में उसने माना कि मेरी गलती थी। चाहते तो हम उसी समय चले जाते, लेकिन फिर मानवता कहां रही? अगर हम गलत हैं तो सिद्ध करो। जवाब देना ही चाहिए। पहले तो गलत करो मत, फिर गलत सहो मत; नहीं तो तुम कमजोर व्यक्ति हो जाओगे, मानसिक तनाव हो जाएगा, समाज से अलग होते जाओगे और घुटन होने लगेगी कि यार सब बेकार लोग रहते हैं। अगर आप गलत हो तो माफी मांग लो या उसकी भरपाई करो; और गलत नहीं हो तो क्यों भरेंगे? जो भी होगा देखा जाएगा। आप सोचते हो लाइफ ठीक चल रही है, क्यों कॉम्प्लिकेट करें — लाइफ ठीक से नहीं चल रही, आपकी लाइफ घुटन में, कमजोरी में चल रही है। लाइफ ठीक से तब चलती है जब जवाब देते हो, जब सामना करते हो। और जिसे नीचे वाला समझते हो — नीचे वाला होता तो तुमसे झगड़ा ही नहीं करता। छोटा बालक मजबूत आदमी से लड़ेगा क्या? अगर लड़ रहा है तो जरूर उसके अंदर ताकत ज्यादा है; तुम्हें अपनी ताकत का भ्रम है। ताकतवर आदमी सामना करता है।

प्रश्न: गुरु जी, जिसके पास कुछ नहीं है, वो हमारे घर पर पत्थर फेंक दे तो हमारा ही 10-20 हजार का नुकसान होगा; उससे झगड़ा करने से उसका तो कुछ नहीं जाएगा। तो उससे झगड़ा क्यों करें? (P24-0147)

ऐसा लगता है। सबको अपनी जान प्यारी होती है — सबको क्या, चींटी को भी। ऐसा नहीं है कि उसका कुछ नहीं जाएगा। कानून किस लिए है? संविधान किस लिए है? अपराध क्यों बढ़ता है? ऐसे ही तो अपराध बढ़ता है। अपराध के जिम्मेदार कौन हैं? हम ही लोग तो हैं, जो सामना नहीं करते। मैंने अपने जीवन में सामना किया है। मेरे सामने चाहे कोई भी आए — अगर मैं गलत नहीं हूँ तो नहीं हूँ, और हूँ तो मैं क्षमा मांग लूंगा। बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, पैसे वाले के आगे पुलिस भी बिकती है, न्यायालय भी बिकता है, रिपोर्ट गलत लिखी जाती है — तो सही होकर भी अपने आप को सही सिद्ध करना कहां हो पाता है? (P24-0148)

अरे नहीं, मैं भी जिंदगी जिया हूँ। मैंने भी कार चलाई है, बाइक चलाई है, मुंबई में भी रहा, लेकिन आज तक कभी ऐसा पुलिस वाला नहीं मिला कि मुझसे गलत फाइन लिया हो। ट्रैफिक पुलिस हो चाहे जो पुलिस हो — एक बात बताएं, सब में मानवता होती है; लेकिन आप किस तरीके से उससे पेश आए हो? मेरे समझ से तो मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ; आप लोग भले सहमत हो। आप आगे जाइए। अगर आप पक्के सही हैं तो कानून आपकी पूरी मदद करेगा, जहां तक मैंने समझा। और जो पैसे वाला जेल में जाता है, उसके लिए वहां फाइव स्टार सुविधा हो जाती है — वो अलग बात है। अपुन उससे हटके हैं। अपुन तो एक ही बात कहते हैं कि ईमानदारी से जियो। जो जैसा कर रहे हैं, उसका परिणाम वो भोगेंगे। आप ईमानदारी से जियो।

प्रश्न: गुरु जी, ईमानदारी और सत्कर्म पर कुछ बताइए — जब आप ईमानदारी बोलते हो तो उसका क्या मतलब है? (P24-0149)

ईमानदारी — जब आपके द्वारा कर्म हो रहा है, लेनदेन हो रहा है, चाहे शब्दों का, चाहे वस्तुओं का। देखने का भी लेनदेन होता है — कि आप किसी को धूर के देख रहे हो कि प्यार से देख रहे हो। तो लेनदेन में ईमानदारी हो; लेनदेन में छल, कपट, चोरी, बेईमानी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड ना हो। और जब मुझे मौका मिले, तो जरूरतमंद की सेवा कर देनी चाहिए, जिस लायक मैं हूँ। यही है ईमानदारी और सत्कर्म। इसी से निर्विकार होने में सहायता मिलती है। जरूरतमंद कौन? भूखे को भोजन, प्यासे को पानी। जिसका पेट भरा है, वहां देने की जरूरत नहीं है; वो तो पहले से भरा है।

प्रश्न: गुरु जी, सत्कर्म करने में भी तो अहंकार आ सकता है — कि मैंने किसी का अच्छा किया? (P24-0150)

सत्कर्म में इच्छा-अपेक्षा ही नहीं होती, तो अहंकार कैसे होगा? किसी का अच्छा सोचा, प्लानिंग कर दी — वो सत्कर्म नहीं। सत्कर्म का मौका प्रकृति देती है, आपके बस में नहीं है। आप रास्ते में जा रहे हो, किसी ने मार्ग पूछा और आपने बता दिया — उसमें अहंकार आएगा? कोई गिर गया, आपने उसे उठा दिया — उसमें अहंकार आएगा? वहां सोचने का समय ही नहीं होता; वहां सीधा करने का समय होता है। पहली एंट्री किसकी है? उसकी। सोचने का मौका किसने दिया? उसने, कि मुझे मार्ग बताओ। अब तुम्हें बस इतना सोचना है कि तुम्हें मार्ग मालूम है या नहीं; आप वहां और कुछ नहीं सोच सकते। उसने कहा मुझे भोजन कराओ — अब दो ही बात हैं, या तो मैं कराऊंगा या नहीं। हमें लगता है हम सोचते हैं — अरे, आपसे करवाया जा रहा है, आपको लग रहा है मैं कर रहा हूं; यही तो भ्रम है। आपसे सोचवाया जा रहा है। जरूरत आपसे करवा रही है।

प्रश्न: गुरु जी, इसका मतलब तो यह हुआ कि प्रकृति हमसे सत्कर्म करवा रही है। तो हमारे अपने बस में क्या है? (P24-0151)

अब सत्कर्म करना या ना करना आपके बस में है। उसने सत्कर्म का मौका दे दिया; आप कह सकते हो मैं रास्ता नहीं बताऊंगा। फिर वो कुछ नहीं बोलेगा, चला जाएगा किसी और से पूछने। आप पर ब्लेम भी नहीं करेगा, किसी से कहेगा भी नहीं कि उस आदमी ने मुझे रास्ता नहीं बताया।

प्रश्न: गुरु जी, अगर हम सोच के करें कि मुझे गरीबों की मदद करनी है, या कोई अनाथ आश्रम चलाना है — तो क्या वह सत्कर्म नहीं है? (P24-0152)

ये तो प्लानिंग हुई। ये मदद हो गई, सेवा हो गई; सत्कर्म नहीं। मदद कमजोर की करते हो; सत्कर्म में मजबूत-कमजोर नहीं होता। जब आप किसी को मार्ग बताते हो तो उसका बैकग्राउंड पता रहता है आपको? अनाथ आश्रम चलाना सेवा में आएगा — लेकिन सेवा भी ठीक है। सत्कर्म का मौका प्रकृति देती है; सेवा प्लानिंग से कर सकते हो। सेवा में आप बड़ा-छोटा देख सकते हो; सत्कर्म करते हुए बड़ा-छोटा पता ही नहीं रहता, क्योंकि सामने वाला कौन है पता ही नहीं। हो सकता है जिसको आप मार्ग बता रहे हो, या जिसने कहा बेटा एक गिलास पानी पिला दो, वो आपसे भी करोड़पति हो। सत्कर्म चेतना कराती है, प्रकृति मौका देती है; वहां कर्ता भाव आएगा ही नहीं। किसी के घर में आग लगी, हम पानी डालते हैं — वहां सोचते नहीं कि अमीर का घर है या गरीब का, दोस्त का है या दुश्मन का; बस करते हैं। सत्कर्म में सोचने का मौका नहीं मिलता। जब सोचने का समय हो, मौका हो, तो समझ लेना आप सत्कर्म नहीं कर रहे हो, सेवा कर रहे हो। सत्कर्म में तो ऑन द स्पॉट फैसला लेना पड़ता है।

प्रश्न: गुरु जी, हम रोज बच्चों को बिस्किट देते हैं — यह सत्कर्म है या सेवा? और रास्ते में किसी का एक्सीडेंट हो जाए और हम उसे अस्पताल पहुंचा दें, तो?

(P24-0153)

ये सत्कर्म है, क्योंकि उन बच्चों का मुझे नाम तक नहीं पता; मुझे पता ही नहीं कब आएंगे, नहीं आएंगे। मेरी कोई प्लानिंग नहीं है कि इन्हें रोज बिस्किट देना ही है — आए तो दे देंगे, नहीं तो कोई बात नहीं। हम उन्हें खोजते नहीं, कभी किसी का इंतजार नहीं करते, बुला-बुला के नहीं देते; नेचुरली होता है। हमारा काम यही है कि इस रास्ते से कोई भी गुजरे, उसे बिस्किट दो, मटके में पानी है तो पी लो। वो कौन है, कौन नहीं, मुझसे मतलब नहीं। और किसी का एक्सीडेंट हुआ, आपने उसको अस्पताल तक पहुंचाया — यह सत्कर्म है, क्योंकि आपकी प्लानिंग नहीं थी कि कोई एक्सीडेंट होगा और मैं पहुंचाऊंगा। कर्म का मौका प्रकृति देती है; आप कर भी सकते हो, नहीं भी कर सकते — वो आपके ऊपर है। आपको कोई आके शिकायत नहीं करेगा कि आपने क्यों नहीं किया। लेकिन ईमानदारी तो पूरी तरह आपके हाथ में है।

प्रश्न: गुरु जी, इंदौर जाते समय मैंने दो लोगों को लिफ्ट दी — एक को मैंने खुद पूछा कि कहीं छोड़ दूं, और दूसरे लड़के ने खुद आकर कहा कि भैया एक घंटे से खड़ा हूं, मुझे छोड़ दोगे? इनमें सत्कर्म कौन सा है? (P24-0154)

इस सिचुएशन में जो खुद आके बोला कि छोड़ दोगे, वो सत्कर्म है। दोनों की फीलिंग देख लो — जब तुमने खुद किया उस समय की फीलिंग, और जब वो आके बोला तब की फीलिंग; उसका एहसास करो। एक सत्कर्म है, एक सेवा है। जो तुमने खुद बुला के किया, ये भी ठीक है; कहीं ना कहीं ये भी ठीक है। भोजन नहीं मिला तो नाश्ता कर लो — कम से कम जिंदा तो रहोगे; जिंदा रहोगे तब ना भोजन करोगे। तो सत्कर्म मिल रहा है तो ठीक है, सेवा तो करते रहो। जब भी हम भोजन करते हैं, आसपास कुछ जीव-जंतुओं को तो भोजन करा ही सकते हैं। दुनिया में कहीं भी चले जाओ, रोटी डाल दो, वहीं आकर खा लेंगे। हर वक्त, हर दिन आप सेवा-सत्कर्म कर सकते हो, करते रहो। आखिर कुछ ना कुछ तो करोगे; सेवा-सत्कर्म नहीं करोगे तो दुष्कर्म करोगे। करना आपका स्वभाव है — जब तक निकलोगे नहीं, तब तक करते रहोगे।

प्रश्न: गुरु जी, आपने बताया कि सत्कर्म का मौका प्रकृति देती है। तो प्रकृति किसको मौका देती है, किसको नहीं — यह भी उसकी इच्छा है? यानी सत्कर्म करना हमारे हाथ में नहीं? चिड़िया के लिए दाना डालना तो हम करते हैं ना? (P24-0155)

वो तो उसके ऊपर है; हमारी इच्छा से थोड़ी देगी कि मैं कहीं मुझे सत्कर्म का मौका दे दो। हां, सत्कर्म हम सीधा कर नहीं सकते। चिड़िया के लिए आप दाना डाल देते हो — खाना या ना खाना उसके हाथ में है। अब चिड़िया भेजेगी तो प्रकृति भेजेगी; अगर वो ना भेजेगी तो दाना पड़ा ही रहेगा। हमने भोजन रखा — हमें नहीं पता कौन खाएगा, चिड़िया, कबूतर, चूहा या कोई और जानवर। वो प्रकृति की व्यवस्था है कि वो किसे खिलाएगी; ये हम तय नहीं कर सकते। और अगर हमने चिड़िया के लिए डाला और कुत्ता आ रहा है तो उसे भगा रहे हैं, चूहा आ रहा है तो भगा रहे हैं — तो वो हमारी प्लानिंग हो गई कि चिड़िया ही इसे खाएगी। ये सत्कर्म नहीं; आप प्लानिंग में फंस गए, सेटिंग कर ली। डालने के बाद देखो आपकी स्थिति क्या है — अगर रखवाली कर रहे हो तो सत्कर्म नहीं है। आप डाल के चले जाते, जिसको खाना है खाए। आपके हाथ में बस आप हो, और कुछ नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, मेरी घरवाली का रूटीन है कि पड़ोस की एक गाय के लिए रोटी निकालती है, और जब तक वो गाय नहीं आती, शाम तक वो रोटी उसी गाय के लिए रखी रहती है। मैंने उसे कहा यह तो प्लानिंग हो गई, सत्कर्म कहां हुआ? क्या मैं सही समझा? (P24-0156)

सत्कर्म आप अगर प्लानिंग से कर रहे हो तो वो सेवा हो गई। सत्कर्म का मतलब — आपने जो भी रोटी बनाई है और बाहर जो चबूतरा है, वहां डाल दीजिए। अब उसे कुत्ता भी खा सकता है, सांड भी, गाय भी; मनुष्य भी उठा के खा सकता है, जिसको जरूरत है — कोई भी खा सकता है। आप ये तय नहीं कर सकते कि ये रोटी मैंने इसी के लिए की; अगर तय किया तो फिर वो सेवा है। दाना डालने के पहले, रोटी डालने के पहले अगर पता है कि कौन खाएगा, इसका मतलब ये सेवा है, सत्कर्म नहीं। और अगर रोटी बना ली और कौन खाएगा पता नहीं — कोई भी आ जाए उसे खिला रहे हो — तो ये सत्कर्म है। सेवा में थोड़ा कर्ता का भाव होता है, सत्कर्म में बिल्कुल नहीं होता; सत्कर्म में बस होता है। सेवा करते हैं, सत्कर्म होता है। जो अनजाने में हो वो सत्कर्म, और जो सोच-समझ के हो वो सेवा। लेकिन फिर भी सेवा दुष्कर्म से तो ठीक ही है।

प्रश्न: गुरु जी, हम कुत्तों के लिए बिस्किट या टोस्ट एक जगह डाल आते हैं, और एक-दो दिन बाद जाते हैं तो वैसा का वैसा पड़ा मिलता है। मन में आता है कि किसी ने खाया ही नहीं। क्या इसका मतलब प्रकृति हमें सत्कर्म का मौका नहीं दे रही?

(P24-0157)

ऐसा नहीं है; चार दिन के बाद देखो। आप रख के चले गए, जरूरतमंद के लिए कर रहे हो, और वो वर्तमान में मौजूद है — तो आपको लग रहा है ये सत्कर्म हुआ; देखना कहीं आप फेंक के तो नहीं आ रहे हो। और जो रोज घर की रोटी, फल-सब्जी के छिलके गाय को जाके खिलाते हो — ये ठीक है, सेवा तो है। किसी की भूख तो मिट रही है; अच्छा है, करना चाहिए। सत्कर्म का मौका तो प्रकृति देगी, आप सेवा तो करते रहो। अगर सेवा करोगे तो आगे सत्कर्म का मौका प्रकृति देगी। सेवा से भी पीछे मत हटो। ऐसा नहीं कि मौका मिलेगा तब करेंगे — अभी से करते रहो।

प्रश्न: गुरु जी, एक सांप चूहे को खाने आ रहा है और हम देख रहे हैं — तो हमें चूहे को बचाना चाहिए या सांप को खाने देना चाहिए? (P24-0158)

वहां बस देखते रहो। और चूहे को बचाना है तो फिर अपना मांस काट के सांप को दो, उसे भोजन दो। अरे भाई, वो उसका भोजन है। सांप कब दूध पीता है? आज तक किसी ने देखा नहीं। एक चिड़िया दिन भर में कितने छोटे-छोटे कीड़े खाती है, पता है? चूहे को बचा लोगे तो क्या वो शाकाहारी हो जाएगा? वो भी तो खाता है। जीव जीव का आहार है; मानव को छोड़ के — मानव के लिए शाकाहारी शुद्ध भोजन है, बाकी जीव जीव का आहार है। आपको किसी का भोजन छीनने का अधिकार नहीं है; छीनोगे तो दंड लगेगा, बाद में भोगना पड़ेगा, आपका भी भोजन छीना जाएगा। क्या पता वो तीन-चार दिन से भूखा हो, अंतिम अवस्था में हो, और आपकी वजह से भोजन ना मिलने से मर जाए — तो उसका जिम्मेदार कौन? हम, जिसने उसके भोजन में बाधा डाली। इसलिए मकड़ी के जाले में अगर कोई तड़प रहा है और मकड़ी है, तो मैं नहीं छुड़ाता; और मकड़ी नहीं है, खाली जाला है, तो छुड़ा देते हैं — कि मर भी जाए तो खाएगा कौन? बहुत समझ के जीना पड़ता है।

प्रश्न: गुरु जी, नॉनवेज की दुकानें या खुले में बिकता मांस देखकर अंदर से बहुत अलग सा भाव आता है, घृणा सी होती है, मन खराब होता है। ऐसा क्यों होता है और क्या करें? (P24-0159)

आप देखो ना क्यों आ रहा है। अच्छा नहीं लगता, लेकिन क्या कर सकते हो? नॉनवेज की दुकान बंद करवा सकते हो? नहीं; तो वहां जाना बंद कर दो, बस इतना तो कर सकते हो। रास्ते में कहीं बदबू आ रही है तो नाक बंद करके निकल सकते हो; उस बदबू को बंद नहीं कर सकते, या जहां-जहां जाओ स्प्रे नहीं छिड़कवा सकते। जियो, निकलो, बस। आपका जितना अधिकार है उतना काम करो, निकल लो — सीधी सी बात। अधिकार से ज्यादा क्यों बढ़ रहे हो? क्या कर लोगे? बोलने से कुछ नहीं होता। आप अपनी क्षमता अनुसार काम करो — जितना आपकी प्राकृतिक अधिकार मिला है, जितनी ताकत आपके पास है, संविधान से जितनी ताकत मिली है।

प्रश्न: गुरु जी, कहा जाता है कि जो तीनों गुणों — सत, रज, तम — से विचलित नहीं होता और दुख-सुख में समान भाव रखता है, वह आत्मज्ञानी के लक्षण हैं। क्या यह सही है? (P24-0160)

हां, वो तीनों से मुक्त हो गया होता है — सात्विक से भी, रजोगुण से भी, तमोगुण से भी — और सुख-दुख में समान भाव है। सात्विक गुण भी कब तक है? जब तक आप निर्विकार नहीं होते। निर्विकार हो गए तो तीनों गुणों से परे हो गए; वो अपने आप में हो गया। उस पर किसी भी गुण का प्रभाव नहीं पड़ता। राग-द्वेष से मुक्त हो गया, बात खत्म हो गई।

प्रश्न: गुरु जी, क्या गुरु की पहचान इस भाव से होती है कि जिसे मिट्टी का ढेला और सोना-धन एक समान नजर आता है? (P24-0161)

नहीं, ऐसे नहीं कर सकते आप। गुरु की पहचान बस एक ही है — गुरु ज्ञान का प्रतीक है। आपके प्रश्नों के उत्तर से पता चल जाएगा वो गुरु योग्य है या नहीं। जैसे नल पानी दे रहा है — पानी पी के प्यास बुझ रही है तो पता चल सकता है कि इसका पानी सही है; लेकिन नल को देखकर, मशीन लगा के जांच करके कुछ नहीं किया जा सकता। 'गु' मतलब अंधकार, 'रु' मतलब प्रकाश — जिसके अंदर अंतरात्मा को प्रकाशित करने की क्षमता है, वो गुरु है। गुरु वही होता है जो आपके प्रश्नों के उत्तर दे दे, जो आपके संशय को मिटा दे। वैसे तो हर आदमी कह रहा है 'माया है, छोड़ो' — और कहता है मेरे पास लाओ। त्यागी तो सब बनते हैं, इससे कुछ नहीं होगा। एक पागल को भी सोने से मतलब नहीं है — उसके सामने भोजन रख दो, सोना रख दो, वो भोजन करेगा और चला जाएगा। तो क्या इसका मतलब वो आत्मज्ञानी है? नहीं है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या आत्मज्ञानी प्रिय-अप्रिय में, निंदा-स्तुति में, मान-अपमान में और मित्र-शत्रु से भी समान व्यवहार रखता है? (P24-0162)

वो व्यवहार से मुक्त रहता है; उसे व्यवहार से मतलब ही नहीं है। वो व्यवहार में जीता ही नहीं, वो सिर्फ अपनी जिंदगी जीता है। चाहे कोई खुश हो जाए, चाहे नाराज हो जाए — उसे मतलब ही नहीं है। वो आपको रुठाने भी नहीं आएगा और मनाने भी नहीं आएगा।

प्रश्न: गुरु जी, मैं रोज सुबह अपनी दुकान के सामने पक्षियों को दाना डालता हूं, पक्षी रोज ज्यादा हो जाते हैं, लेकिन सामने वाला पड़ोसी उनको उड़ा देता है। क्या करूं?

(P24-0163)

कोई बात नहीं। आपका काम है दाना डालना — आप और ज्यादा डाला करो। उसका काम है उड़ाना, आपका काम है डालना; बस चारों तरफ पक्षी ही पक्षी। अब वो उड़ाए तो आप ये मत बोलना कि मेरे पक्षियों को क्यों उड़ा रहे हो। आपका काम है दाना डालना, बस।

प्रश्न: गुरु जी, मैं शाकाहारी हूं। ईश्वर ना करे, पर अगर कभी ऐसी स्थिति आ जाए कि भूख के कारण मैं मृत्यु के निकट हो जाऊं और सामने केवल मांस हो, तो क्या करूं? (P24-0164)

अगर मांस है और उसमें कोई जीव जीवित नहीं है — प्राकृतिक रूप से, अपने आप मरा पड़ा है — तो जीवन रक्षा के लिए आप उसे ग्रहण कर सकते हो; लेकिन मार के नहीं। और वो भी अपने जीवन रक्षा के लिए, स्वाद के लिए नहीं — आखिरी स्थिति में, क्योंकि आप रहोगे तभी ना कुछ कर सकते हो। तो आखिरी स्थिति में अपने आप को बचाने के लिए, बस।

प्रश्न: गुरु जी, सत्य हर जगह है, हर समय है — अभी अगर हम उसे नहीं देख पा रहे तो कुछ आवरण है। वह आवरण क्या है? (P24-0165)

मैं कब कहता हूं भगवान हर जगह, हर क्षण है? मैंने कभी नहीं कहा। मैं तो कहता हूं — वो परमात्मा, चाहे ईश्वर कहो, इस दुनिया से परे है। लोग कहते हैं, मैं नहीं बोलता। और आवरण — उम्मीद। उम्मीद आवरण है, बात खत्म। जब तक उम्मीद है, तब तक आप अलग हो; उम्मीद का अलगाव है। उम्मीद चाहे किसी चीज की भी हो, क्या फर्क पड़ता है — इनको दिल्ली जाना है, आपको मुंबई जाना है; दिशाएं अलग हैं लेकिन जा तो रहे हो। उम्मीद किसके सहारे खड़ी है? 'कुछ चाहिए' के सहारे। कुछ चाहिए मैं उम्मीद खड़ी है; कुछ नहीं चाहिए तो उम्मीद गई, बात खत्म। ये तुरंत, अभी हो सकता है। फिर आप जो साधना कर रहे हो, वो आप देखो आप क्या कर रहे हो; जिसने साधना बताई है उसको पकड़ो, उससे पूछो कि इस साधना को करने से होगा क्या — वही बताएंगे। उम्मीद हट गई तो यही अवस्था मौन भी है। वहीं तक तो आना है; वहीं तक आने के लिए तो सब कुछ किया जा रहा है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या कोई किताब या कोई गुरु आपके मार्ग में सहायक रहे?

(P24-0166)

मैंने किताबें बहुत पढ़ीं, लेकिन मैं बोल नहीं सकता कि ये किताब सहायक रही। सहायक रहती तो मैं बोल देता कि इस किताब के द्वारा मैं पहुंचा। हर किताब पढ़ने के बाद इतना समझ में आया कि जो मुझे समझना है वो इसमें नहीं है — जो इसमें लिखा है वो मेरे काम का नहीं, और जो मेरे काम का है वो इसमें लिखा नहीं। इसलिए मैं किसी किताब का नाम भी नहीं ले सकता। उन्होंने अपने-अपने तरीके से बोला है; मुझे किस तरीके से करना है, वह मैं करूंगा। आदमियों से भी मिला तो यही समझ में आया — इनके पास बहुत अनुभव है, लेकिन वह अनुभव मेरे काम का नहीं। लेकिन कहीं ना कहीं उस समय को बिताने में वो किताबें और वो आदमी सहायक रहे, क्योंकि ज्ञान तो 2020 में हुआ; 2011 से 2020 तक क्या करता? कुछ ना कुछ तो करता ही। मेरा तो अब कहना है — बस अपनी किताब पढ़ लो, देख लो अपनी किताब में क्या-क्या लिखा है। लिखते वक्त परेशान नहीं हुए, तो पढ़ते वक्त क्यों परेशान हो जाते हो? लिखा भी हमने, तो पढ़ना भी हमें है; पढ़ लो तो आप मुक्त हो जाओगे। हम बगैर पढ़े ही निकलना चाहते हैं — लेकिन लिखा क्यों, जब नहीं पढ़ना था?

प्रश्न: गुरु जी, पहले जानकारी के अभाव में मैंने इच्छा-पूर्ति के लिए पूरी कोशिश से नाम जप किया, धुनों का रसपान किया। अब जब मैं खुद को गहराई से देख रहा हूं, तो वही पुराना प्रयास और वो धुनें बीच-बीच में आकर मुझे भटका रही हैं। इसे कैसे काटूं? (P24-0167)

वही आपने जो किया है, वो सामने आएगा। अब वो धीरे-धीरे हटेगा — समझ-समझ के। धुन बीच-बीच में आ रही है तो कुछ नहीं, बस देखो; और क्या करें? झेलो उसे।

प्रश्न: गुरु जी, अगर गाय फसल खाए तो उसे खेत से निकालना चाहिए या नहीं?

(P24-0168)

खिला दो, क्या फर्क पड़ता है — लेकिन देख लेना आपके बच्चे क्या खाएंगे। देख लेना गाय किसी की है या ऐसे ही घूम रही है; क्या इतनी कमजोर है कि खाना जरूरी है? उस खेत के पीछे और कोई है, परिवार है; गाय को तो और कहीं चारा मिल जाएगा। आपका खेत कितना बड़ा है, ये भी देख लो — खेत ज्यादा बड़ा हो तो कोई फर्क ना पड़े, तो एक आय और छोड़ दो, वो बात अलग है। और खेत छोटा है, तुम्हारा ही काम नहीं चल रहा, तो फिर गाय खा जाएगी तो तुम्हारे बच्चे क्या खाएंगे?

प्रश्न: गुरु जी, 'ईमानदारी और सत्कर्म' ये दो शब्द बोले बिना बताइए — कुछ नहीं में कैसे आएँ? बिना बोले कैसे समझें? (P24-0169)

अगर आपके पास प्रश्न है तो यहां उत्तर है; पहुंचा के ही रहूंगा। आप बोलोगे मुझे बोलो मत और बता दो, तो भी बता दूंगा। एक स्त्री गर्भ धारण किए है, और उससे कोई कहे कि बिना बोले मुझे बता दो तुम गर्भवती हो — तो तुम्हारे पास इतनी बुद्धि होनी चाहिए कि उसका पेट देख लो। पहला-दूसरा महीना है तो इंतजार करो, नौ महीने उसके साथ रहो, दिन-रात उसे देखते रहो — बिना बोले समझ जाओगे, रिजल्ट आ जाएगा। तीसरे महीने से समझने लगोगे, और नौवें महीने में भी नहीं समझे तो भी फाइनल रिजल्ट सामने आ जाएगा कि ये ले, यही है। और ये भी देख लेना किसके पास रुक रहे हो — भैंस का 11 महीने, बकरी का कुछ महीने, हाथी का 22 महीने होता है। लेकिन रिजल्ट से पहले ही बदलाव दिखने लगता है; ऐसे बहुत लक्षण होते हैं जिन्हें देखकर पता लग जाता है। समझो और इंतजार करो।

प्रश्न: गुरु जी, आपके सानिध्य में मेरी जो स्थिति बनी, वो मैं आपसे ही शेयर कर सकता हूं; पर यह भी पता है कि मेरी स्थिति कोई टिकी नहीं है। अब यह स्थिति आगे कहां बनती है? (P24-0170)

जैसे ही लगे कि मुझे समझ में आ गया, तो बस समझ लेना कि अब ये टिकेगा नहीं, अब ये जाने वाला है। कोई स्थिति टिकती नहीं है। आइसक्रीम खाते हो ना — हाथ में लेकर देखते रहो, गलती जाती है, गिरती जाती है, आखिर में डंडी हाथ में रह जाती है। स्थिति टिकानी ही तो नहीं है; टिकती ही नहीं है, तो क्या टिकाओगे? जो आवरण चढ़ा हुआ है, सब धीरे-धीरे निकल जाएगा, और आखिर में डंडी बचेगी — उस डंडी की कोई कीमत नहीं, वो बिकेगी नहीं, लोग चूस के फेंक देते हैं। आखिर में शरीर का क्या होता है? जला दिया जाता है। प्याज है — छीलते जाओ, छीलते जाओ; बस आखिर में छीलने वाला बचता है।

प्रश्न: गुरु जी, सेवा, सत्कर्म और कर्तव्य में क्या अंतर है? (P24-0171)

सेवा प्लानिंग से करते हो; सत्कर्म का मौका प्रकृति देती है; और कर्तव्य — जो आपको दायित्व मिला है, जो जिम्मेदारी आपने ली है, उसका आप पालन कर रहे हो, वो कर्तव्य है।

प्रश्न: गुरु जी, अपनी किताब पढ़ने का मतलब अतीत को ताजा करना है क्या?

(P24-0172)

अपनी किताब पढ़ने का मतलब — पढ़कर उससे अपने आपको निकालना है। लिखा है तो एक बार तो पढ़ना पड़ेगा। पढ़ के मिटाना भी तो है; पढ़ोगे तब देखोगे कि मिटाने लायक क्या है, क्या नहीं। जब देखोगे मशीन बिगड़ी कहाँ है, तब वही सामान लाओगे ना। और अगर आपसे नहीं सुधरती, तो अपने से बड़े मैकेनिक के पास जाओ जो सुधार सके — लेकिन वो मैकेनिक मशीन को अपने हिसाब से सुधारेगा, आपके तरीके से नहीं। आपको तो खड़ा भी नहीं करेगा, कहेगा साइड में हो जाओ; उसमें आपकी राय नहीं चलेगी। अगर आप कहोगे ऐसे नहीं, ऐसे सुधारो, तो वो निकल लेगा, उसके पास इतना समय नहीं है। या तो खुद से सुधारो।

प्रश्न: गुरु जी, आपकी यात्रा में कई बार ऐसा समय आया होगा जब मन ने या पूर्व के संस्कारों ने जोर मारकर आपको रोकना चाहा होगा। तब आपने किसका सहारा लिया या क्या प्रयोग किया? (P24-0173)

मैंने हमेशा बस एक बात याद रखी कि यह फैसला तेरा ही है, तुझे पीछे नहीं जाना। सब लोग मना कर रहे थे और तुमने यह फैसला लिया है, इसलिए तुम्हें पीछे नहीं जाना। या तो खोज लेंगे या खोजते हुए मर जाएंगे — बस यही थी अपनी जिंदगी; पीछे कुछ था नहीं मेरे लिए। खोज लिए तो जीवंत हो गए। हर व्यक्ति ने मुझे मना किया, यहां तक गुरु ने भी मना किया — बोला खाओ-पियो, पड़े रहो, भजन करो। हम कहे ना, हम खोज में निकले हैं, भजन के लिए नहीं; मैं खोज करने निकला हूँ, खोज के ही रहूंगा, चाहे कुछ भी हो। मैं किसी से पूछने भी जाता था तो कहता था — मेरी योग्यता है या नहीं, ये नहीं पूछ रहा; मुझे पता है मेरी योग्यता है। आगे का रास्ता मालूम हो तो बताओ, नहीं तो बात खत्म, हम आगे जाएं। मैं सही जगह हूँ या गलत जगह — इससे क्या फर्क पड़ता है? मैं सही आदमी या बुरे आदमी की, सही या गलत जगह की खोज नहीं कर रहा था; मैं अपनी खोज कर रहा था। तुम क्या करते हो, उससे मुझे मतलब नहीं। और कोई कुछ भी पकड़ा दे, ऐसे थोड़ी पकड़ लेंगे — मुझे क्या चाहिए, कैसा माल चाहिए, उसका ज्ञान मुझे है। अगर तुम्हें क्या चाहिए इसका ज्ञान नहीं है, तो वहीं पड़े रहते — कोई बोल देता भजन करो, 10 साल में भगवान मिल जाएगा, तो 10 साल भजन करते बैठे रहते।

प्रश्न: गुरु जी, आपको रास्ता किसने बताया — ईश्वर ने या किसी गुरु ने? (P24-0174)

रास्ता बनाने वाला भी मैं था, खोजने वाला भी मैं था, तय करने वाला भी मैं था कि मुझे कहां जाना है। घुमा-फिरा के जिसने सहयोग नहीं किया वह भी सहयोगी बना, जिसने किया वह भी बना। ज्यादातर लोग पीछे ही जाने को बोलते हैं; अगर मैं किसी की भी बात मान लिया होता तो मैं यहां नहीं होता। सबने मुझे रोका है।

प्रश्न: गुरु जी, कोई गुरु बनकर श्राप देने की बात बोले, तो वो क्या है? (P24-0175)

जहां तक हो सकता है, गुरु तो श्राप नहीं देता; लेकिन आप विवश कर रहे हो तो बात अलग है। जैसे कृष्ण को विवश कर दिया गया, तो सौ गाली पे उन्होंने शिशुपाल को मारा ना — मारना पड़ा उसे। कहने का मतलब, अगर विवश करोगे तो वो क्या करेगा? बाकी तो वो नहीं देता।

प्रश्न: गुरु जी, 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं' — इसका वास्तविक अर्थ क्या है? किताब से पढ़ के तो समझ आ गया, प्रैक्टिकल रूप में कैसे समझ में आएगा? (P24-0176)

जब तक मेरा अस्तित्व है, तब तक वो नहीं — क्योंकि जब तक अस्तित्व है तब तक मैं दायरे में हूं, और वो दायरे में आ नहीं सकता। मैं कहां हूं? मेरे में। मैं किसके सहारे खड़ा है? मेरा से। मेरा मिटा तो बात खत्म; तो वही है, और कौन है। मिटाना किसी को नहीं है, उठाना किसी को नहीं — बस छोड़ना है। मानसिक पकड़े हुए हैं तो मानसिक ही छोड़ना है; और मानसिक इसलिए पकड़े हैं कि उससे कुछ मिलेगा, ये उम्मीद है। उम्मीद छोड़ दो, मानसिक छूट जाएगा। सीधा मानसिक छोड़ोगे तो नहीं छूटेगा; जब तक उम्मीद है, आशा बनी है कि मिल जाएगा, तब तक मानसिक बंधन है।

प्रश्न: गुरु जी, दिखावा और दिखाने में क्या अंतर है? (P24-0177)

दिखावा मतलब जो नहीं है उसे आप दिखा रहे हो — जिस लायक आप नहीं हो, वो दिखा रहे हो, उसे दिखावा कहते हैं। और दिखाना — अब किस भाव से दिखा रहे हो, क्या दिखाना चाह रहे हो, वो आपके ऊपर है।

प्रश्न: गुरु जी, जब आप निकले थे तब आपको आत्मज्ञान पाना था या भगवान पाना था? आत्मज्ञान की समझ बाद में आई? (P24-0178)

शुरुआत में तो भगवान, परमात्मा; बाद में आत्मज्ञान की समझ आई। मुझे लगा आखिरी आत्मज्ञान है — चलो फाइनल आत्मज्ञान तक पहुंच जाते हैं। और जब आत्मज्ञान पर पहुंचे तो पता चला कि अब तो यात्रा की शुरुआत होगी। अगर मुझे पहले ही पता होता कि आत्मज्ञान अलग, ब्रह्मज्ञान अलग, तो मैं सीधा आखिरी में रुकता। आत्मज्ञान के बाद पता चला कि अभी तो यात्रा की शुरुआत हुई; अभी तक तो शुरुआत के लायक बन रहे थे। तो आप लोगों की यात्रा की शुरुआत अभी नहीं हुई है, अभी तो प्लानिंग कर रहे हो। आत्मज्ञान तक पहुंचे, उसके बाद यात्रा की शुरुआत होती है। भ्रम में मत रहना — अभी तो लाइन में खड़े हो, अभी तैयारी कर रहे हो।

प्रश्न: गुरु जी, अंदर की यात्रा तो मुझे अब क्लियर है कि क्या करना है, पर बाहर की उलझनें — कुछ सालों से कर्ज की परेशानी है, मेहनत भी कर रहा हूं, फिर भी मन बहुत परेशान रहता है। क्या करूं? (P24-0179)

उससे आराम से आप निकल सकते हो। जैसे कहीं कर्ज लिया तो कोई प्रॉपर्टी ही बनाई होगी — उस प्रॉपर्टी को निकालो, दे दो। लेकिन वहां लगता है मान गिर जाएगा। क्यों फंसे हो? निकाल दो प्रॉपर्टी, बात खत्म; एक दिन में निकल जाओगे। घुट-घुट के जीने का क्या मतलब — प्रॉपर्टी रखी है और हम घुट के जी रहे हैं, तगादा सुन रहे हैं; भोजन है और हम भूखे हैं। बहुत आसानी से हम निकल सकते हैं, लेकिन एक बात बताएं — हम निकलना ही नहीं चाहते। ज्यादा फैलाव हमने कर दिया। अब पूरी तरह अपने काम में भी लग सकते हो, अपने में भी, क्योंकि काम के द्वारा ही तो अपने आप को शुद्ध करना है। लोगों ने कहा काम अलग है और ये अध्यात्म अलग है — ये फंसा दिया है लोगों को। ये नहीं देखा कि काम करते हुए ही अपने आप को शुद्ध करना है; काम ही सहायक बनेगा। प्रॉपर्टी तुम्हारे द्वारा बनी थी, तुम प्रॉपर्टी के द्वारा नहीं बने; फिर बना लोगे। और अगर प्रॉपर्टी नहीं है तो या तो समझा दो कि भर दूंगा, या जब चुकाने के योग्य हो जाओ तब आके चुका दो। टेंशन ना पालो, घुट के ना जियो।

प्रश्न: गुरु जी, जैसे आपने बताया कि हम अपना विश्लेषण करें — पिछले जीवन की कई चीजें हमें खटक रही हैं। तो क्या उनको बदलने के लिए फिर काम करना है?

(P24-0180)

एकदम काम करो — बदलने के लिए नहीं, उससे निकलने के लिए। अब तो बदल नहीं सकते। अब तो वो व्यक्ति पता नहीं तुम्हारे सामने है या नहीं है, अब कैसे बदलोगे? जितनों के साथ बेईमानी किए, जितनों के साथ आपका झगड़ा-झंझट हुआ जीवन में, क्या उन व्यक्तियों को खोजोगे? वो अब नहीं मिल पाएगा ना। अब तो संसार में लोगों के साथ ईमानदारी, सत्कर्म करोगे तो निकलोगे।

प्रश्न: गुरु जी, विश्लेषण में बैठता हूं तो एक चीज खटकती है — किसी से मुझे पैसे लेने थे, बहुत बार फोन किया पर उसने दिए नहीं, एक प्रकार से धोखा हो गया। उसका बिजनेस में लॉस हुआ था, बहुत लोगों का कर्ज उस पर है। उससे निकलने के लिए मैं क्या करूं — उम्मीद छोड़ दूं या कानूनी कार्रवाई करूं? (P24-0181)

देखिए, उसकी स्थिति-परिस्थिति क्या है — वो देने लायक है और नहीं दे रहा, या देने लायक नहीं है? नियत की बात है। दो बातें हैं। अगर नियत उसकी खराब है, तब तो आपको पूरी ताकत लगा के लेनी चाहिए — जितनी ताकत है वसूलने में लगा दो। और अगर वह मजबूर है, उसकी परिस्थिति गड़बड़ है, और आप उस लायक हो कि उतना पैसा सह सकते हो, कोई बड़ी बात आपके लिए नहीं है, तो छोड़ दो। उसको बोल भी दो — "मैं समझ गया, आपके पास नहीं है; जब आपके पास होगा तो दे देना।" ये आपको जांचना पड़ेगा। जब उसको बोलोगे कि जब आपको मिलेगा तब देना, तब उसका ख्याल अच्छा रहेगा, आपके लिए उसका वाइब्रेशन अच्छा छूटने लगेगा। भूलना बात नहीं है, ऐसे नहीं भूला जाता। बस इतनी सी बात है — नियत खराब है तो वसूल लो, मजबूर है तो छोड़ दो और बोल दो।

प्रश्न: गुरु जी, अगर उसे बोल दें कि जब हो तब देना, तो फिर वो भी एक उम्मीद बन जाएगी कि वो दे देगा? (P24-0182)

किसकी उम्मीद? आप तो उसके ऊपर छोड़ दिए ना। उम्मीद यह है कि वो होगा तो दे देगा — कोई बात नहीं। इसमें आप फंसे नहीं रहोगे, राग-द्वेष नहीं होगा। इस तरीके से उससे निकल सकते हो। और अपने ही मन को समझा लूं कि नहीं आएगा — ऐसे मन नहीं समझा सकते, हो ही नहीं सकता। मैं आपको बता रहा हूं — लेने में जितनी ताकत दिखाते हो, उसके यहां से उतनी नेगेटिव एनर्जी आपको आती है। अगर आप उसे बोल दोगे कि "मैंने भी समझा कि आप मजबूर हो, आपके पास नहीं है, जब आपके पास होगा तो देना" — तो वहां से आपको पॉजिटिव एनर्जी आने लगेगी।

प्रश्न: गुरु जी, हमारी की हुई क्रिया से अगर कोई और राग-द्वेष में बंध गया, तो उसकी वो एनर्जी — राग की हो या द्वेष की — उसका मेरे ऊपर क्या प्रभाव पड़ेगा?

(P24-0183)

अगर आपने (गलत) काम किया है तो प्रभाव पड़ेगा, नहीं किया है तो नहीं पड़ेगा। जैसे जिसने मदद के भाव से पैसा दिया, उसके ऊपर प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि उसने कुछ गलत किया ही नहीं है। वहां भले कितना भी नेगेटिव आए, उन तक नहीं पहुंचेगा, क्योंकि उन्होंने उसके साथ ऐसा कोई व्यवहार नहीं किया है। लेकिन फिर भी बोल देना ठीक है — बोल देंगे तो पॉजिटिव आने लगेगा।

प्रश्न: गुरु जी, अब उस व्यक्ति की नजर से देखें — जिसने पैसा लिया और स्थिति-परिस्थिति के कारण दे नहीं पा रहा, और देने वाला क्रोध में है कि सब काम कर रहे हो, हमारा ही देने के लिए नहीं है। इस सिचुएशन में क्या लेने वाला गलत है?

(P24-0184)

एक कहानी सुना रहा हूँ, ध्यान से सुनना। एक पंडित जी के यहां एक आदमी गया, बोला — महाराज जी, मैं जिंदगी में बहुत परेशान हूँ, कुछ उपाय बताइए। बोले — नीलम पहन लो, शनि तुम्हें परेशान कर रहा है। नीलम बीस हजार के ऊपर की बताई। बोला — महाराज जी, इतना पैसा तो नहीं है। बोले — कोई बात नहीं, ग्यारह हजार देकर मुझसे शनि का हवन करवा लो। बोला — इतना भी नहीं है। बोले — हर शनिवार-मंगलवार हनुमान जी को तेल, सिंदूर, लड्डू चढ़ाया करो। बोला — महाराज जी, इतना पैसा भी मेरे पास नहीं। तो बोले — बेटा, तेरा शनि उखाड़ क्या लेगा? जब तेरे पास कुछ है ही नहीं, तो शनि आके भाग जाएगा। तू निकल ले बेटा। जब है ही नहीं, तो कोई क्या कर लेगा? उसमें सही-गलत के लिए बचा क्या? शनि तो उसे परेशान करेगा जिसके पास कुछ रहेगा।

प्रश्न: गुरु जी, आपने बताया था कि कर्म के पहले और कर्म के बाद जो भाव होता है, उससे निर्णय होता है। अब एक भाव उठा कि इस क्रिया को इस तरह करेंगे, पर स्थिति-परिस्थिति के हिसाब से वो क्रिया वैसी नहीं हो पा रही। तो क्या हम भाव में गिर गए? (P24-0185)

दूसरा भाव कहाँ उठा? दोनों भाव उठेंगे तब कुछ होगा ना। एक भाव बना — मैं करूँगा — और किया ही नहीं, तो दूसरा भाव आया ही नहीं, तो बात ही खत्म। दूसरा भाव तो कर्म के बाद आएगा ना। कर्म के पहले एक भाव, कर्म के बाद एक भाव बनता है — उससे फल का निर्णय होता है। कर्म तो हुआ ही नहीं। दोनों होना चाहिए, प्लस-माइनस मिलेंगे तभी कुछ होगा। कर्म होगा तभी दूसरा भाव पैदा होगा। और दूसरा भाव ही मेन है — वो कर्म के बाद ही बनता है, उसमें आप कुछ नहीं कर सकते।

प्रश्न: गुरु जी, तो हमारे हाथ में सिर्फ कर्म को सचेतता से करना है — और अगला भाव भी हमारे हाथ में है कि नहीं? (P24-0186)

नहीं, वो भी आपके हाथ में नहीं है। आपके हाथ में बस इतना था कि यहां से यहां तक मारना है, लेकिन चोट आपके हाथ में नहीं था — चोट लगेगा ही लगेगा।

प्रश्न: गुरुदेव जी, मेरा एक सवाल है — अपने देश में ज्यादातर लोग ऐसे हैं जिनकी इनकम इतनी कम है कि वो इकट्ठा कर ही नहीं सकते। उनके लिए क्या? (P24-0187)

मैं जिसकी है उसकी बात कर रहा हूँ, जिसकी नहीं है उसकी बात नहीं कर रहा। आंतरिक यात्रा तभी होगी जब आप संपन्न हैं। अगर आप संपन्न नहीं हैं, मजबूर हैं, लाचार हैं, तो आपकी आंतरिक यात्रा हो ही नहीं सकती — आप करो भी मत, आपसे होगी ही नहीं। आध्यात्मिक यात्रा संपन्न व्यक्ति करता है; अभाव-कुभाव वाला नहीं कर पाता। वो अपने आप को लायक बनाए। अब आपको चिंता है पेट की रोटी की, तो अंतर्मुखी यात्रा कैसे होगी? संपन्नता जरूरी है, इसलिए तो मैंने कहा — संपन्न होके इसमें आइए। पड़े रहने का मतलब क्या है? कि अब मुझे कोई टेंशन नहीं है; जब तक मैं इस शरीर में रहूँगा, तब तक इस शरीर की व्यवस्था मैंने कर ली। शरीर की व्यवस्था के बाद आंतरिक यात्रा होगी। आध्यात्मिक यात्रा संपन्न व्यक्ति कर सकता है — लालच त्याग दे और संपन्न हो जाए, तब कर सकता है।

प्रश्न: गुरु जी, आपने बताया कि लगातार ध्यान रखना है कि ये मेरा टारगेट है। बहिर्मुख में बार-बार अभ्यास से मुझमें परफेक्शन आई, वहां मैंने समय, मेहनत, रातों की नींद दी। तो अब मुझे बाहर का सारा अटैचमेंट, हर चीज छोड़ के अंतर्मुखी हो जाना है — क्या पड़े रहने का मतलब अपने अंदर ही रहना और सारी चीजें छोड़ देना है? (P24-0188)

सारी चीज तो छोड़ ही नहीं सकते। उन चीजों को छोड़ो जिनसे चिंतन बढ़ता है। सारी चीजों का मतलब आपने क्या समझा? मैंने एक फार्मूला दिया है आप लोगों को — ईमानदारी, सत्कर्म, योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग। अगर इस फार्मूला को आपने पकड़ लिया, तो आगे का बंधन बढ़ेगा ही नहीं। वो इतना सूक्ष्म रूप से काम कर जाता है। इसीलिए तो आश्रम बनाए गए, कुटिया बनाई गई, कि आप एकांतवास में जाओ, वहां समझ में आएगी। कभी ना कभी आपको निकलना पड़ेगा — इसीलिए तो कहा गया, निकल सकते हो तो 60 के बाद निकलो। आपको घर से निकलना ही पड़ेगा, नहीं तो निकालेंगे। जब तक आप काम के हो, नहीं निकालेंगे; जिस दिन काम के नहीं रहोगे, तब घर वाले निकाल देंगे।

प्रश्न: गुरु जी, ये चीजें बुढ़ापे में ही नहीं, जवानी में भी दिख जाती हैं — शरीर में ताकत है तो पता चलने के बाद भी हम अनदेखा करके, दबा के जी रहे हैं। तो फिर बुढ़ापे में क्या होगा, क्या मानसिक यात्रा होगी? (P24-0189)

अनदेखा करते हैं क्योंकि उसमें रस आ रहा है, इसलिए रस ले रहे हैं। बुढ़ापे में वो रस का स्रोत ही बंद कर देता है — इंद्रियां शिथिल हो जाती हैं, कमजोर हो जाती हैं, तब एक जगह घुटन में व्यक्ति जीता है। तब डिजीजन नहीं ले पाता। कहां से लेगा? जब गाड़ी का इंजन ही खराब है तो वो जाएगा कहां? तब मानसिक यात्रा नहीं होगी। जब तक इंद्रियां मजबूत हैं, तभी तक यात्रा होगी। गाड़ी का इंजन फेल तो सब गया — अगर आगे नहीं जा सकती तो पीछे भी नहीं जा सकती। अगर बहिर्मुखी यात्रा आप नहीं कर सकते, तो अंतर्मुखी भी नहीं कर पाओगे। सीधी सी बात है। जब तक आगे जाएंगी, तभी तक पीछे रिवर्स आएंगी; जब आगे जाना बंद हो गया, तो पीछे जाना भी बंद हो जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, तो फिर अगर मेरी ऐसी स्थिति हो जाए, तो क्या अगले जन्म में मैं वही कैरी ऑन करके ले जाऊंगी? (P24-0190)

जैसा आपने किया है, फिर आप वहीं खड़ी हो जाएंगी — फिर वही चक्कर काटोगी। इसीलिए अभी समझ लो। अभी तो समय है, समझ है, दोनों हैं। पता नहीं फिर कौन से शरीर में रहो, क्या स्थिति-परिस्थिति रहे। अभी तो निकलने का पूरा चांस है। हो सकता है आगे कोई और शरीर हो और परिस्थितियां फंस जाएं, मोह-माया में जकड़ जाओ — विवाह हो, बच्चे ऐसे हो जाएं कि डोल ही नहीं पाओ। अब तो चाह के भी यात्रा नहीं कर सकते। ऐसे मात-पिता हैं जो एक मिनट के लिए अपने बच्चों को छोड़ नहीं सकते, क्योंकि उनकी स्वतंत्रता छीन ली गई। सबको चाहिए स्वतंत्रता, और जब स्वतंत्र थे तब यात्रा नहीं की। इसलिए अगर समय है, समझ है, तो करो — पूरी तरह लग जाओ।

प्रश्न: गुरु जी, हमें इसकी पूरी जरूरत क्यों नहीं लगती? (P24-0191)

जरूरत लगती है, ऐसा नहीं है। समझ में तो आता है — जब कोई ऐसी स्थिति पहुंचता है तो पूजनीय हो जाता है, हम उसका सम्मान भी करते हैं कि इन्होंने अपने जीवन को तार लिया। सब समझ में आता है। लेकिन अटैचमेंट क्या है? लालच। कुछ चाहिए, कोई उम्मीद दे रखी है या ले रखी है, कुछ करने का जज्बा, कुछ करने की इच्छा, बड़ा बनने की इच्छा, कुछ दिखाने की इच्छा — अपने टैलेंट को, अपने विवेक को, अपनी समझ को। मैं कह रहा हूं, ये दिखाना ही है तो आत्मिक कल्याण में दिखाओ ना। आपके विवेक-समझ का तब पता चलेगा जब आप आत्मिक कल्याण करोगे। वो (बाहर का) तो बहुत छोटा दायरा है। आपका टैलेंट अगर इतना ही है, तो आत्मिक कल्याण करके बताओ, आत्मज्ञान की स्थिति पहुंच के बताओ — तब आपके टैलेंट का पता चले।

प्रश्न: गुरु जी, एक डाउट है — इस रास्ते में मार्ग इतने अनंत हैं, इतने तरीके हैं, इतना भटकाया भी गया है, कि कोई फिक्स चीज नहीं मिली। बाहर प्रोजेक्ट पूरा करो तो सीधा फायदा दिखता है; पर आप कहते हो पड़े रहो — घंटों पड़े रहे, कुछ भी तो नहीं हो रहा। तो पड़े रहने में क्या मिलेगा? (P24-0192)

कुछ ना करने में तो कुछ नहीं मिलेगा। आप कहीं जाओ और कहो मैं कुछ नहीं करूंगा, तो कोई कुछ देगा? कुछ ना करने में तो कुछ मिलेगा नहीं — मिलने से मुक्त हो जाओगे। और मिलना चाहिए, तो फिर भटको। पहले अध्यात्म को तो समझिए — अध्यात्म कुछ नहीं चाहिए की यात्रा है। आप प्रत्यक्ष ज्ञान कब से सुन रहे हो? इसमें मार्ग आपको पक्का समझ में आया? ये पक्का पहुंचाएगा — ईमानदारी पक्का पहुंचा देगा। तो ये कर लो, बात खत्म। फिर ये प्रश्न ही नहीं रहा जिंदगी में। अब यात्रा करो।

प्रश्न: गुरु जी, मुझे करोड़ों मिल भी जाएं, तो मैं उतना ही खाऊंगी, उतना ही पहनूंगी। मान-इज्जत मिलेगी, अहंकार पोषित होगा, और साथ में भय भी — चोर, इनकम टैक्स, दुश्मन। ये दोनों चीजें मुझे दिख रही हैं, वहां मैं रह भी नहीं पा रही। फिर भी जन्मों-जन्मों का अभ्यास है — उसका क्या करूं? (P24-0193)

हर अभ्यास में तो आप ही थे। तो अब करने में अभ्यास किए, तो छोड़ने में अभ्यास लगाओ। छोड़ना आपको पड़ेगा, यही रास्ता है। फैसला आपको लेना पड़ेगा — पांच से दस बनाना है, दस से बीस बनाना है, या छोड़ के निकलना है। यह फैसला आपको ही लेना पड़ेगा, क्योंकि आप स्वतंत्र हो, कर्ता का अधिकार है। देखिए, शुरुआत में जब कोई विद्यार्थी एडमिशन लेता है, तो स्कूल फैसला करता है कि कौन से विषय पढ़ेगा। एक समय आता है कि विद्यार्थी को मौका दिया जाता है कि आप कौन से विषय पढ़ना चाहते हो। अब वो कहे मुझे नहीं पता — तो स्कूल फैसला नहीं दे सकता; अगर यह फैसला आप नहीं कर पाओगे तो कॉलेज में आपका एडमिशन नहीं होगा। तो यह फैसला आपको लेना है कि बहिर्मुखी यात्रा करनी है या अंतर्मुखी। बहिर्मुखी करनी है तो ऐसे लोग मिलेंगे, अंतर्मुखी करनी है तो वैसे लोग मिलेंगे। आपको यात्रा कोई करवा नहीं सकता, ये अधिकार किसी को नहीं दिया गया। बहिर्मुखी में कुछ मिलेगा, उसका नाश होगा। अंतर्मुखी में कुछ नहीं मिलेगा — आखिर में खोजने वाला ही मिलेगा। बहिर्मुखी छोड़ दिया, फिर जब अंतर्मुखी भी छूट जाएगा तो वह बचेगा, शेष। मिलने से मुक्त हो जाएगा। मिलना ही भटकाव है, उम्मीद ही भटकाव है — इसलिए संपन्न होके पड़े रहो।

प्रश्न: गुरु जी, तब अंतर्मुखी होकर बस पड़े रहेंगे? (P24-0194)

हां, सत्संग के साथ, समझ के पड़े रहो — कि राग, द्वेष, मोह, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, मेरा, कर्ता, समर्पण, श्रद्धा ये सब क्या है। पूरी समझ के साथ जब आप रहेंगे, तभी आपकी अंतर्मुखी यात्रा होगी। अगर बिना समझे ही सब बंद कर दिया, तो आप एकदम घुटन में जिएंगे। सत्संग जीवन में बहुत जरूरी है। सत्संग सुनो और पड़े रहो। बस पड़े रहने के लिए पूरी व्यवस्था कर लो — व्यवस्था हो ही जाती है। आप जैसी यात्रा करोगे, वैसे लोग मिलने लगेंगे।

प्रश्न: गुरु जी, एक आदमी ईमानदारी, सत्कर्म और काबिलियत से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग करके, काम करते हुए अंतर्मुखी यात्रा कर रहा है, और एक पड़े-पड़े कर रहा है — किसकी यात्रा जल्दी होगी? (P24-0195)

जो पड़े-पड़े कर रहा है, उसकी जल्दी यात्रा होगी, क्योंकि वो पूरी तरह लग गया; दूसरा एक काम के साथ लगा है। इसलिए तो मैं कह रहा हूं कि एवरेज निकाल लो, उतना कमा लिए तो पड़ जाओ। काम करते हुए भी होगा, लेकिन इसमें जल्दी तो नहीं होगी। जिसको तेजी से करना है, वो पूरी तरह लग जाए। लेकिन जब आपके पास जिम्मेदारी है, कर्तव्य है, दायित्व है, तो उसको निभाते हुए करो — कम से कम कर तो रहे हो, लगे तो हो। जहां भी रहो, लगे रहो; और पूरी तरह लग जाओ तो बहुत अच्छी बात, और जल्दी यात्रा होगी।

प्रश्न: गुरु जी, कई बार ऐसा होता है कि जब कोई आध्यात्मिक जीवन में जाने की कोशिश करता है, तो उसके प्रियजनों को ऐतराज रहता है या उन्हें लगता है कि उन्हें दुख दिया जा रहा है। उस स्थिति में क्या करना चाहिए? (P24-0196)

देखो, अध्यात्म को लोगों ने बहुत भ्रमित कर दिया कि अध्यात्म में जाने का मतलब सब छोड़ना है। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है। अध्यात्म में जाने का मतलब है बेईमानी छोड़ना। तो इसमें क्या गलत है, बताओ? जीवन आप ज्ञान से जीते हो — जो भी काम करते हो, ज्ञान लगता है ना। जीवन जीने के लिए ज्ञान की जरूरत है, उसे कहते हैं अध्यात्म; और संसाधन का सही तरीके से उपयोग करते हैं, उसे कहते हैं विज्ञान। अगर मुझे जानकारी है कि कौन सा पानी शुद्ध है, कौन सा अशुद्ध, तभी हम सही पानी का उपयोग करेंगे; जानकारी नहीं तो हम गटर का ही पानी पी रहे हैं और बीमार हो जाएंगे। तो अध्यात्म का मतलब है ज्ञान — उचित-अनुचित, और राग-द्वेष से कैसे मुक्त हो जाओ। राग-द्वेष से मुक्त होना तो अच्छी बात है, सबके लिए है। वो अपनी जिंदगी में खुश रहने लगेगा, तो अच्छा है ना। बाकी परिवार भी ऐसे हो जाए, सब हो जाएं — खुशियां ही खुशियां झूमें। हम झूठा प्यार जता रहे हैं; हमारे प्यार के पीछे तो वासना है, प्यार का तो हमने नाम दे दिया है। अगर हम समझ के, ज्ञान में होके एक-दूसरे के साथ जिएं, तो जीवन और खूबसूरत होगा। अब तो अध्यात्म में दोनों साथ जा रहे हैं, बच्चे भी जा रहे हैं — सब अपनी मस्ती में रहें तो कितनी अच्छी बात है। झूठा जीवन तो खत्म होगा, जीवन ईमानदारी का होगा, सच्चाई का होगा। पहले तो अपने से ही शुरुआत करनी पड़ेगी। जो अड़चनें आएंगी, उन पर अपने संकल्प के साथ, बिना किसी को तकलीफ दिए, बढ़ते रहना चाहिए — क्योंकि हम अपने आप को बदल रहे हैं। कह दो: अगर आपको बदलना है तो साथ आ जाओ, नहीं तो हम आपको कुछ नहीं कर रहे, आप मस्त से अपनी लाइफ जियो, हमें जीने दो। हम पीछे अब नहीं आ सकते, आप हमारे साथ आगे आओ — मैंने वो जिंदगी जी, मुझे इसमें सुकून मिल रहा है; एक बार ये जिंदगी जी के देखो, अगर ना पसंद आए तो वापस जाने का रास्ता तो है ना। उन्हें समझाइए, और नहीं समझें तो आप अपना जीवन जियो, अपने आप को समझो और आगे बढ़ो। अध्यात्म का मतलब घर-बार छोड़ देना थोड़ी ना है; अध्यात्म का मतलब है आप और अच्छे तरीके से जीवन जी सकते हो। जरा सोचो — हर व्यक्ति का देने का भाव होगा, लेने वाला कोई नहीं होगा; अगर पूरे परिवार में सब एक-दूसरे को देने ही लगे, तो वो परिवार कैसा होगा!

प्रश्न: गुरु जी, पहले मैं पैसे के लिए जा रहा था, अभी ज्ञान के लिए जा रहा हूँ — क्या वो भी एक कामना नहीं है? (P24-0197)

ये कामना नहीं है। ये तो कामनाओं से मुक्त होने के लिए, अपने मूल पे आना चाहते हो — यह कामना नहीं। कपड़ा हमारा गंदा हो गया, लेकिन धोना कामना नहीं है, क्योंकि मूल में लौट रहा हूँ। इसको कामना नहीं कहते, क्योंकि अब तो खाली हो रहा हूँ, छोड़ना चाहता हूँ। पकड़ना कामना था, छोड़ना कामना नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, आपने कई प्रवचनों में कहा है कि 'कुछ नहीं' की स्थिति में आ जाओ। तो क्या सांसारिक जीवन में यह संभव है? जैसे मैं सोच लूँ कि अपने लिए कहीं नहीं जाना, कुछ नहीं करना? (P24-0198)

पहले अपने लिए जा रहे थे, अब लोगों के लिए जाओ। लेकिन क्या सच में जिससे बात कर रहे हो, उसी के लिए बात कर रहे हो — देख लेना। और फिर लोगों के लिए जाना भी छूट जाए — कुछ नहीं। लोग भी गए, कामनाएं भी गईं, सब कुछ गया, औरों के लिए जाना भी गया। फिर क्या स्थिति होती है? आ जाओ इसमें, एक बार इसको करके देखो। आप सोचते हो जीवन है तो कुछ ना कुछ तो होगा आपसे — कुछ नहीं में आ जाओ, एक बार करके देखो।

प्रश्न: गुरु जी, अगर समझ है, तो फिर मोह तो नुकसानदेह ही हुआ ना? वो ठीक कहां रहा? (P24-0199)

मोह के पीछे कुछ चाहिए ना। चाहिए का त्याग करो, मोह नहीं रहेगा — प्रेम हो जाएगा। प्रेम घटित हो जाएगा। पर बात तब होगी जब आप अपने तरीके से चाहिए का त्याग करोगे, तब होगा। प्रेम को घटने कहां दे रहे हो? आपने मोह में रोक के रखा है ना। बेमतलब से तो आओ — बेमतलब से आना ही आनंद है।

प्रश्न: गुरु जी, साधारण व्यक्ति के लिए कोई ऐसा ज्ञान बताइए जिससे जिंदगी में धीरे-धीरे गति करके आगे निकले। (P24-0200)

ईमानदारी अपना लो और सत्कर्म करो। जिस लायक हो, चिड़ियों को भोजन करा दो — एक-दो मुट्ठी। अगर आपके पास उतना ही है जितना आप खाते हो, तो एक रोटी कम खाओगे तो पाचन क्रिया अच्छी रहेगी; उसमें से खिला दो, और ईमानदारी से जीवन जियो। ये सबसे आसान रास्ता है, अब इससे आसान रास्ता क्या चाहिए? हर व्यक्ति आसानी से अपने घर पर कर सकता है। ईमानदारी अपना लो तो कोई बंधन नहीं बंधेगा; सत्कर्म के द्वारा पिछला नाश होगा; एक दिन आप अपने आप को पाओगे — बात खत्म। जैसे ही आपने पूरी तरह आंतरिक ईमानदारी को स्वीकार किया, उसी वक्त आप अपने आप को महसूस कर पाओगे। कोई भी करके देख सकता है।